A Daily News Magazine
इंदौर
मंगलवार, 23 अप्रैल, 2024

सुबह सवेरे

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 188 , नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्या: MP/IDC/1529/2016-2018)

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

पचास की उम्र की कुछ स्त्रियों में
एक अलग प्रकार का सम्मोहन होता है
थोड़ा प्रेम, थोड़ा बैराग
और बहुत सारा ठहराव
जैसे पचास बसंत जी चुकी
शीशम की छाल
जिसकी देह की गहरी रेखाओं में
बसी होती हैं सुनहरी, भूरी छल्लेदार
कविताएँ
जो उकेरी होती हैं उसके जीवन से
गुज़रे
हर उस शख्स ने
जिसने साहस जुटा कर
उसके मन को पढ़ा हो और पढ़ते-पढ़ते
कुरेदा हो
उसके अंतः की परत को
ऐसी स्त्रियाँ कविताओं के एक
विशालकाय जंगल
को अपनी नाभि में पाल रही हैं
कस्तूरी की तरह
और यही रिसती हुई सुगंध उनके होने
का प्रमाण है।

- तेजी

प्रसंगवश

क्या चंद्रशेखर आजाद दलित राजनीति में मायावती की जगह ले पाएंगे?

कृष्ण मुरारी

भीम आर्मी समूह' के लिए प्रसिद्ध दलित राजनीति के नए युवा चुनौतीकर्ता चंद्र शेखर आज़ाद, उत्तर प्रदेश में अनुसूचित जाति के चेहरे के रूप में मायावती के नेतृत्व वाली बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की जगह लेने की कोशिश कर रहे हैं। वे अपनी राजनीतिक पार्टी, आज़ाद समाज पार्टी (एएसपी) के बैनर तले नगीना से लोकसभा चुनाव लड़ रहे हैं, जिसका चुनाव चिन्ह केतली है। दिलचस्प बात यह है कि वे इस चुनाव में अपनी पार्टी के एकमात्र उम्मीदवार हैं।

2022 के यूपी विधानसभा चुनाव में आज़ाद ने गोरखपुर में योगी आदित्यनाथ के खिलाफ चुनाव लड़ा था। उन्हें केवल 4,501 वोट मिले और उनकी ज़मानत भी जब्त हो गई। 37 वर्षीय आज़ाद जहां युवाओं के बीच लोकप्रिय हैं, वहीं पुरानी पीढ़ी आज भी मायावती को दलितों का प्रमुख चेहरा मानती है। हालांकि, नगीना की जनता का मायावती से मोहभंग होता नज़र आ रहा है।

युवाओं में आज़ाद को लेकर दीवानगी इस कदर है कि उनके साथ खींची गई फोटो को वे अपने फोन का वॉलपेपर लगाते हैं। उनके समर्थक रोज़ाना जाना उनके दर्जनों भाषणों को अपने व्हाट्सएप स्टेटस पर पोस्ट करते हैं। नगीना के निवासियों के मुताबिक, अगर आज़ाद ये चुनाव जीतते हैं तो समुदाय को नया नेता मिल जाएगा। शेरकोट चौक पर चाय की दुकान पर बैठे भीम सिंह ने कहा, एक समय था जब मायावती साइकिल से इन सड़कों पर घूमती थीं और वोट मांगती थीं, लेकिन अब चीज़ें बदल गई हैं।

हालांकि, राजनीतिक विशेषज्ञों का मानना है कि आज़ाद अकेले दलितों के सहारे नहीं जीत सकते। डॉ. भीमराव आंबेडकर यूनिवर्सिटी में राजनीति विज्ञान विभाग के प्रमुख प्रोफेसर शशिकांत पाण्डेय ने कहा, 'आज़ाद अलग तरह की राजनीति करते हैं। वे जनता के बीच अपनी बात मजबूती से रखते हैं। उनके लहज़े और भाव के कारण दलित समुदाय के बड़ी संख्या में युवा उन्हें पसंद करते हैं। लेकिन सालों के बाद भी वे पूरे यूपी में अपनी उपस्थिति दर्ज नहीं करवा पाए हैं। उन्हें केवल पश्चिमी यूपी के कुछ हिस्सों में सफलता मिली है।

पिछले एक दशक में मायावती की बसपा के कमज़ोर होने से उत्तर प्रदेश में दलित राजनीति में एक खालीपन पैदा हो गया है, जिसे आज़ाद भरने की कोशिश में लगे हुए हैं। वे अपनी रैलियों के दौरान दलित पहचान के बारे में बात करते हैं और अक्सर आंबेडकर और कांशी राम का जिक्र करते हैं, जिनकी तस्वीर उनकी पार्टी के झंडे पर भी है।

नगीना में 'बाहरी' उम्मीदवार होने के आरोप पर उन्होंने कहा, 'अगर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी गुजरात से होने के बावजूद वाराणसी से चुनाव लड़ सकते हैं, तो नगीना तो मेरे जिले के बहुत करीब है।' प्रोफेसर पाण्डेय ने कहा, आज़ाद में एक चिंगारी है और वे शायद भविष्य में दलित राजनीति के एक बड़े नेता बनेंगे। हालांकि आज़ाद जिस तरह से उभरे, उनका विस्तार नहीं हुआ। सिर्फ दलित वोटों के आधार पर वे चुनाव नहीं जीत सकते. उन्हें इसमें कुछ जोड़ना होगा।'

इस बार नगीना में बीजेपी ने ओम कुमार, सपा ने मनोज कुमार और बसपा ने सुरेंद्र पाल सिंह को मैदान में उतारा है। यहां की 46 फीसदी आबादी वाले मुस्लिम इस सीट से विजेता का फैसला करने में अहम भूमिका निभाते हैं। हालांकि, इस बार नगीना में मुसलमान समाजवादी पार्टी से नाराज़ नज़र आ रहे हैं।

शनिवार को नगीना में एक रैली को संबोधित करते हुए सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने आज़ाद का नाम लिए बिना कहा कि केंद्र की भाजपा सरकार जहां अन्य नेताओं की सुरक्षा छीन रही है, वहीं कुछ लोगों को सुरक्षा दे रही है और यह केवल उन लोगों को दी जा रही है जो (बीजेपी) उनके लिए पीछे से काम करते हैं। 29 मार्च को केंद्र ने आज़ाद को 'वाई प्लस' श्रेणी की सुरक्षा प्रदान की थी।

हालांकि, आज़ाद ने कहा, 'मैं बीजेपी सरकार के साथ-साथ विपक्ष के भी सपनों में आता हूं। यह हमारे आंदोलन का बढ़ता कद है। मैं विपक्ष को मजबूत करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उन्होंने मुझे स्वीकार नहीं किया। उन्होंने कहा सरकार ने सोच-समझकर ही सुरक्षा देने का फैसला किया होगा।' आज़ाद पर पिछले साल जून में यूपी के देवबंद में गोली से हमला किया गया था।

हालांकि, नगीना सीट पर ठाकुर, जाट, ब्राह्मण, कश्यप, बनिया और त्यागी के अलावा सैनी जैसी ओबीसी जातियों की भी अच्छी खासी संख्या है, जिन्हें बीजेपी का वोटर माना जाता है। 6 लाख से अधिक मुस्लिम आबादी वाले निर्वाचन क्षेत्र में आज़ाद लगातार नगीना की मुस्लिम बस्तियों में रोड शो और डोर-टू-डोर अभियान चला रहे हैं। लेकिन स्थानीय बसपा नेताओं का कहना है कि भले ही पार्टी पिछले कुछ साल में कमज़ोर हुई है, लेकिन उसने अभी भी अपना समर्थन आधार नहीं खोया है। 'मायावती आज भी हमारी पार्टी का बड़ा चेहरा हैं।आज़ाद के साथ पूरा दलित समुदाय नहीं जाने वाला है।'

आज़ाद 2017 में तब सुर्खियों में आए जब उस साल सहारनपुर में जाति आधारित हिंसा के सिलसिले में उन पर राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया। करीब एक साल तक जेल में रहने के बाद वे रिहा हुए और फिर दलित उत्पीड़न के मुद्दे पर विरोध प्रदर्शनों के जरिए सक्रिय रहे। एसोसिएशन ऑफ डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) के आंकड़ों के मुताबिक, आज़ाद के खिलाफ 36 मामले हैं, जिनमें से तीन मामलों में आरोप तय हो चुके हैं। अपनी रैलियों के दौरान, आज़ाद ने 'अभी तो ली अंगड़ाई है, आगे और लड़ाई है' और 'जो सरकार निकम्मी है वो सरकार बदलनी है' जैसे नारे लगाते हैं।

अपने शनिवार के रोड शो के दौरान उन्होंने शेरकोट कस्बे के रहने वाले 57 वर्षीय वाजिद खान ने कहा, 'वे एक दबंग नेता हैं। वे हिंदू और मुसलमानों के बीच भेदभाव नहीं करते। वे सभी के मुद्दे उठाते हैं। वे किसी से नहीं डरते। उन्हें संसद में होना चाहिए। कब तक हम सपा या बसपा की जागीर बने रहेंगे। मुस्लिम नेतृत्व ने हमारा कुछ भला नहीं किया, इसलिए अब हम दलित हिंदुओं के साथ खड़े होकर खुद को बचा सकते हैं।'

हालांकि, आज़ाद की पार्टी के साथ गठबंधन की बात चल रही थी, लेकिन आखिरकार अखिलेश ने नगीना से सपा उम्मीदवार खड़ा कर दिया। आज़ाद ने कहा, 'हम बीजेपी को रोकना चाहते थे लेकिन अखिलेश सिर्फ अपनी पार्टी के बारे में सोचते रहे। हमें उन विपक्षी पार्टियों से भी लड़ना है जो बीजेपी से लड़ने की बात करते हैं।'

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

अलीगढ़ में पीएम मोदी बोले-

इंडी गठबंधन की नजर आपकी प्रॉपर्टी पर

- **ये सत्ता में आए तो लोगों के घर, गाड़ियां, सोना कब्जे में लेकर बांट देंगे**
- **अब इनकी नजर हमारी माताओं-बहनों के मंगलसूत्र पर है...**

अलीगढ़ (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि पिछली बार जब मैं अलीगढ़ आया था, तब मैंने आप सबसे अनुरोध किया था कि सपा और कांग्रेस के परिवारवाद, भ्रष्टाचार और तुष्टिकरण की फैक्टरी में ताला लगा दीजिए। आपने ऐसा मजबूत ताला लगाया कि दोनों शहजादों (राहुल गांधी और अखिलेश यादव) को आज तक इसकी चाबी नहीं मिली है। सोमवार को यहां आयोजित जनसभा में मोदी ने कहा कि कांग्रेस और इंडी गठबंधन की नजर अब आपकी कमाई पर है, आपकी संपत्ति पर है। कांग्रेस के शहजादे का कहना है कि उनकी सरकार आई, तो कौन कितना कमाता है, किसके पास कितनी प्रॉपर्टी है, उसकी जांच कराएंगे। इतना ही नहीं, वो आगे कहते हैं कि ये जो संपत्ति है, उसको कब्जे में लेकर सरकार सबको बांट देगी। ये उनका मेनिफेस्टो कह रहा है। अब इनकी नजर कानून बदलकर, हमारी माताओं-बहनों की संपत्ति छीनने पर भी है। इनकी नजर अब उनके मंगलसूत्र पर है। पीएम मोदी ने कहा- ये इंडिया गठबंधन वाले इतनी निराशा में डूबे हुए हैं कि भविष्य की ओर देखने के लिए इनमें हौसला ही नहीं रहा।

इंडिया गठबंधन वाले निराशा में डूबे हुए हैं

- **पसमांदा मुसलमानों की मुसीबत की चर्चा करता हूं, तो इनके बाल खड़े हो जाते हैं-** तीन तलाक से पीड़ित कितनी ही बेटियों का जीवन तबाह हो गया था। अब मोदी ने तीन तलाक के खिलाफ कानून बनाकर उनका जीवन सुरक्षित किया है। जब मैं पसमांदा मुसलमानों की मुसीबत की चर्चा करता हूं, तो इनके बाल खड़े हो जाते हैं

योगी जी जैसा साथी मेरे लिए गर्व की बात, अलीगढ़ में नरेन्द्र मोदी ने की यूपी सीएम की तारीफ- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि योगी जी जैसा साथी होना उन्हें गर्व की अनुभूति कराता है। पीएम मोदी ने अलीगढ़ लोकसभा सीट पर आयोजित विशाल रैली को संबोधित किया। इस दौरान कहा कि एक समय था, जब हमारी बहन-बेटियां घर से बाहर नहीं निकल पाती थीं।

30 हफ्ते की प्रेग्नेंसी में अबॉर्शन की इजाजत

नाबालिग रेप विक्टिम की अर्जी पर सुप्रीम कोर्ट का आदेश, सीजेआई बोले- यह असाधारण मामला है

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने 14 साल की रेप पीड़ित लड़की की 30 हफ्ते की प्रेगनेंसी को टर्मिनेट करने की इजाजत दे दी है। सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की अगुवाई वाली बेंच ने इस मामले में पूर्ण न्याय के लिए संविधान के अनुच्छेद-142 का इस्तेमाल किया। इस अनुच्छेद के तहत अपनी शक्ति का इस्तेमाल करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने मुंबई के सायन स्थित लोकमान्य तिलक महानगर पालिका सर्वसाधारण रुग्णालय व वैद्यकीय महाविद्यालय (एलटीएमजीएच) के डीन को निर्देश दिया है कि वह नाबालिग के गर्भपात कराने के लिए मेडिकल बोर्ड का गठन करें।

सुप्रीम कोर्ट ने बॉम्बे हाई कोर्ट के उस फैसले को भी रद्द कर दिया जिसमें हाई कोर्ट ने नाबालिग लड़की की अर्जी खारिज कर दी थी।

एमडीएच-एवरेस्ट समेत अन्य मसालों के सैंपल जांचे जाएंगे

- हॉन्गकॉन्ग और सिंगापुर में बैन के बाद भारत सरकार का एक्शन, इन प्रोडक्ट्स से कैंसर का खतरा

नई दिल्ली (एजेंसी)। हॉन्गकॉन्ग और सिंगापुर में एमडीएच और एवरेस्ट के चार मसालों की सेल पर बैन के बाद अब भारत सरकार ने फूड कमिश्नर्स से इनके सैंपल कलेक्ट करने को कहा है।

मीडियो रिपोर्ट्स में इस बात की जानकारी दी गई है। दोनों कंपनियों के इन प्रोडक्ट्स में कार्सिनोजेनिक पेस्टिसाइड एथिलीन ऑक्साइड की ज्यादा मात्रा होने के कारण इन्हें बैन किया गया था।

इन प्रोडक्ट्स में इस पेस्टिसाइड की ज्यादा मात्रा से कैंसर होने का खतरा है। हॉन्गकॉन्ग के फूड सेफ्टी डिपार्टमेंट ने कहा था कि एमडीएच ग्रुप के तीन मसाला मिक्स- मद्रास करी पाउडर, सांभर मसाला पाउडर और करी पाउडर में एथिलीन ऑक्साइड की मात्रा ज्यादा पाई गई है। एवरेस्ट के फिश करी मसाला में भी यह कार्सिनोजेनिक पेस्टिसाइड पाया गया है।

तीन-चार दिनों में सैंपल कलेक्ट हो जाएंगे, 20 दिनों में लैब रिपोर्ट- सरकारी सूत्रों ने कहा, देश के सभी फूड कमिश्नर्स को इस मामले को लेकर अलर्ट कर दिया गया है। मसालों के सैंपल कलेक्शन की प्रोसेस शुरू कर दी गई है। तीन से चार दिनों में एमडीएच और ऐवरेस्ट समेत देश की सभी कंपनियों की मसाला मैन्युफैक्चरिंग यूनिट्स से सैंपल्स कलेक्ट कर लिए जाएंगे।

लोकसभा चुनाव में भाजपा का खाता खुला

- सूरत के कैंडिडेट मुकेश दलाल निर्विरोध जीते
- कांग्रेस कैंडिडेट का पर्चा रद्द हुआ, 8 ने नाम वापस लिया

अहमदाबाद (एजेंसी)। गुजरात की सूरत लोकसभा सीट पर निर्विरोध जीत हासिल करके बीजेपी ने इतिहास रच दिया है। पार्टी के कैंडिडेट मुकेश दलाल निर्विरोध निर्वाचित होने वाले बीजेपी के पहले सांसद बने हैं। सूरत के दंगल में अंतिम मौके पर बहुजन समाज पार्टी के प्रत्याशी प्यारे लाल भारती मैदान में बचे थे। नाम वापसी की समय-सीमा खत्म होने से ठीक एक घंटा पहले उन्होंने जैसे ही नाम वापस लिया। वैसे ही मुकेश दलाल बीजेपी के लोकसभा चुनावों में निर्विरोध जीतने वाले पहले सांसद बन गए।

शाजापुर में बोले मुख्यमंत्री मोहन यादव-

कांग्रेस ने राम मंदिर में अड़ंगा क्यों डाला, माफी मांगे

शाजापुर (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सोमवार को शाजापुर में जनसभा को संबोधित किया। इसके पहले उन्होंने कलेक्टर कार्यालय पहुंचकर भाजपा प्रत्याशी महेंद्रसिंह सोलंकी का नामांकन जमा करवाया। शाजापुर के बस स्टैंड पर आयोजित जनसभा में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कांग्रेस नेताओं पर जमकर निशाना साधा। बोले कि कांग्रेसियों ने राम मंदिर में अड़ंगा लगाया, वह माफी मांगे। अब तक राहुल, सोनिया और प्रियंका दर्शन करने राम मंदिर क्यों नहीं गए।

सीएम ने पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह पर निशाना साधते हुए कहा कि वे आतंकवादियों को जी कहते हैं। इसके साथ ही राहुल गांधी पर बड़ा हमला बोलते हुए उन्होंने कहा कि पप्पू की तरह ही उनकी बुद्धि है। बोलते हैं एक दिन में गरीबी दूर करेंगे। उनकी मम्मी, दादी, परदादा ने इतने सालों तक सरकार चलाई पर गरीबी दूर नहीं हुई। पिछले चुनाव में कांग्रेस की बस में बैठने लायक सीट आई थी, इस बार टेंपो में बैठने लायक रह जाएंगे।

रामजी आ गए, अब कृष्ण आने वाले हैं

राम मंदिर का फैसला सुप्रीम कोर्ट ने दिया, उसके बावजूद उनको तकलीफ है। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि रामजी आ गए हैं और अब कृष्ण आने वाले हैं। राम मंदिर के नाम पर कांग्रेसियों के सीने पर सांप लौट गए। हम तो कानून का सम्मान करते हैं। इनका परिवार शहजादा है और इंदिरा गांधी का चुनाव निरस्त करने पर देश में आपातकाल लगा दिया था।

शाजापुर में नए औद्योगिक क्षेत्र बनाएंगे

राहुल की ओर इशारा करते हुए सीएम ने कहा कि एमपी में आने से पहले ही उनकी तबीयत खराब हो गई। मैं तो कहता हूं कि उनकी तबीयत ही खराब रहे। मुख्यमंत्री ने सभा में कहा कि प्रदेश में अब अलग से एग्रीकल्चर कॉलेज नहीं खुलेंगे, मौजूदा कॉलेज में ही एग्रीकल्चर विभाग भी संचालित किया जाएगा। साथ ही शाजापुर में नए औद्योगिक क्षेत्र बनाएंगे।

विदेश जाओ तो कहना हम राम-कृष्ण की धरती से आए हैं

छिंदवाड़ा में भाजपा के वरिष्ठ नेताओं के जमावड़े को लेकर उन्होंने कहा कि हमारा आदमी चुनाव लड़ रहा है तो सब जा रहे हैं। इसमें क्या बुराई है। उनके पास कोई है नहीं इसलिए नहीं जाते। अयोध्या में बने राम मंदिर को लेकर मुख्यमंत्री ने कहा कि देश-विदेश में जाओ और सिर्फ इतना बताओ कि हम राम-कृष्ण की धरती से आए हैं। वे समझ जाएंगे आप भारत से आए हैं।

म.प्र.में पीएम मोदी के 24 अप्रैल को तीन कार्यक्रम

सागर से दलित वर्ग को साधेंगे, कांग्रेस के कब्जे वाले हरदा में सभा को संबोधित करेंगे, भोपाल में होगा रोड शो

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बुधवार 24 अप्रैल को एमपी के दौरे पर आएंगे। लोकसभा चुनाव के दूसरे चरण में पीएम एक ही दिन में तीन लोकसभाओं में पहुंचेंगे। अब तक मिली जानकारी के अनुसार पीएम मोदी 24 अप्रैल को दोपहर करीब 12 बजे सागर पहुंचकर जनसभा को संबोधित करेंगे। सागर बाद पीएम मोदी बैतूल पहुंचेंगे। यहां बीजेपी प्रत्याशी दुर्गादास उईके के समर्थन में जनसभा को संबोधित करेंगे। इसके बाद शाम 7:30 बजे भोपाल में रोड शो करेंगे।

बुंदेलखंड के दलित वर्ग को देंगे संदेश- 24 मार्च को सबसे पहले पीएम मोदी का सागर के बड़तूमा में कार्यक्रम होगा। बड़तूमा में ही सौ करोड़ रुपए की लागत से संत रविदास मंदिर का निर्माण किया जा रहा है। करीब आठ महीने पहले ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संत रविदास मंदिर का भूमिपूजन किया था। पीएम मोदी बड़तूमा से ही बुंदेलखंड के दलित वर्ग को साधने की कोशिश करेंगे। मालूम हो कि एमपी के बुंदेलखंड में दलित वर्ग निर्णायक है। इस इलाके में बसपा की दलित वर्ग में अच्छी पैठ है। बीजेपी इस वोट बैंक को अपने पाले में लाने की कोशिशें कर रही है। एमपी के बुंदेलखंड में सागर, टीकमगढ़, दमोह और खजुराहो लोकसभाएं आती हैं।

जिस जिले में सभी सीटों पर कांग्रेस का कब्जा वहां मोदी करेंगे सभा- पीएम मोदी सागर के बाद बैतूल लोकसभा क्षेत्र में आने वाले हरदा जिले में जनसभा को संबोधित करेंगे। पीएम मोदी हरदा के अबगांव में जनसभा को संबोधित करेंगे। हरदा जिले की दो विधानसभाओं में कांग्रेस का कब्जा है। बीते 2023 के विधानसभा चुनाव में हरदा से कांग्रेस के रामकिशोर दोगने और टिमरनी से अभिजीत शाह चुनाव जीते थे। इस जिले में पीएम मोदी जनसभा को संबोधित करेंगे।

भोपाल में होगा रोड शो- राजधानी भोपाल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का करीब डेढ़ किलोमीटर लंबा रोड शो होगा। एमपी बीजेपी की ओर से केंद्रीय कार्यालय को रोड शो के लिए दो-तीन प्रस्ताव भेजे हैं। एसपीजी की परमिशन मिलने के बाद इसे फाइनल किया जाएगा। 24 अप्रैल को पीएम मोदी के रोड शो के रुट पर करीब 2 हजार से ज्यादा पुलिसकर्मी तैनात रहेंगे।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 40 °c
न्यूनतम 29°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ मंगलवार, 23 अप्रैल 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

आज हनुमान जयंती है

राम के गढ़ में हनुमान, अयोध्या के राजा हैं बजरंग बली..

नवाबों से जुड़ा किस्सा दिलचस्प है

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या नगरी में रामलला विराज चुके हैं। ऐतिहासिक राजनीतिक और कानूनी संघर्ष के बाद प्रभु के आने से श्रद्धालुओं में उत्साह भावना है। लेकिन राम के भव्य मंदिर से महज चंद कदम दूर उनके सबसे बड़े भक्त विराजमान हैं।

ऐसी मान्यता है कि भगवान राम के आदेश पर आज भी वीर हनुमान समस्त अयोध्या का कार्यभार संभालते हैं। राजद्वार के सामने ऊंचे टीले पर बने हनुमानगढ़ी मंदिर को हनुमान भगवान का घर माना जाता है। 76 सीढ़ियां चढ़कर आज भी लोग हनुमान के बाल रूप के दर्शन को जाते हैं।

कहा जाता है कि अयोध्या में राम मंदिर दर्शन यात्रा बिना हनुमानगढ़ी गए हुए पूर्ण नहीं होती है। इस नवीन रूप के मंदिर का निर्माण अवध के नवाब ने कराया था। आइए समझते हैं इसका दिलचस्प इतिहास।

- **राजा विक्रमादित्य ने कराया था जीर्णोद्धार-** अयोध्या का जीर्णोद्धार उज्जैन के सम्राट विक्रमादित्य ने कराया था। उन्होंने राम की नगरी का वैभव वापस लौटाया था। अवंतिका नरेश विक्रमादित्य जब आखेट करते हुए अयोध्या आए तो उन्हें रामजन्म भूमि जीर्ण-शीर्ण हालत में मिली थी। इसके बाद रामजन्म भूमि पर भव्य मंदिर बनवाया गया। 84 स्तंभों का मंदिर भी बनाया। उन्होंने हनुमानगढ़ी पर मंदिर भी बनवाया। हालांकि बाद में मुगल काल में औरंगजेब के शासन के समय यहां काफी नुकसान पहुंचा था।
- **अवध के नवाब ने बनावाया भव्य मंदिर-** 17वीं सदी में हनुमानगढ़ी मंदिर टीले पर एक पेड़ के नीचे विराजमान था। कहा जाता है कि उस समय यह क्षेत्र अवध के नवाबों के क्षेत्र में आता था। वर्तमान में जो मंदिर नजर आता है, उसका इतिहास आज से 300 साल पुराना है। नवाब सिराजुद्दौला ने इस मंदिर को भव्य रुप में स्थापित कराया था। उस समय नवाब सिराजुद्दौला के बेटे को कोई बीमारी हो गई थी। नवाब यहां पूजा अर्चना करने वाले बाबा अभयरामदासजी जी के पास आए और शहजादे को स्वास्थ्य लाभ हो गया।

संक्षिप्त समाचार

केजरीवाल को अपने डॉक्टर से परामर्श की इजाजत नहीं मिली

- कोर्ट का निर्देश-एम्स मेडिकल बोर्ड बनाए

नई दिल्ली (एजेंसी)। शराब नीति केस में 1 अप्रैल से तिहाड़ जेल में बंद दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए अपने डॉक्टर से कंसल्ट नहीं कर पाएंगे। दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट ने सोमवार को उनकी याचिका खारिज कर दी। स्पेशल जज कावेरी बावेजा ने केजरीवाल की

मांग खारिज कर दी। कोर्ट ने एम्स को निर्देश दिया कि वह केजरीवाल की जांच के लिए एक मेडिकल बोर्ड बनाएं ताकि यह पता चल सके कि उन्हें शुगर लेवल कंट्रोल करने के लिए इंसुलिन की जरूरत है। इसके अलावा उनके अन्य मेडिकल जरूरतों का भी पता लगाएं।

केजरीवाल ने तिहाड़ जेल सुपरिंटेंडेंट को चिट्ठी लिखी, कहा- आपके दोनों बयान झूठे- अरविंद केजरीवाल ने सोमवार को तिहाड़ जेल सुपरिंटेंडेंट के नाम एक चिट्ठी लिखी है। सूत्रों के मुताबिक इस चिटठी में केजरीवाल ने लिखा है- मैंने अखबार में तिहाड़ जेल प्रशासन का बयान पढ़ा, जिसे पढ़कर बहुत दुख हुआ।

हाईकोर्ट का आदेश

बंगाल में 24 हजार शिक्षकों की नियुक्ति रद्द

- 8 साल की सैलरी लौटाएं
- ममता बोलीं- फैसला गैरकानूनी, सुप्रीम कोर्ट जाएंगे

कोलकाता (एजेंसी)। कलकत्ता हाईकोर्ट ने सोमवार को 2016 में हुई शिक्षक भर्ती रद्द कर दी। इसके अलावा अवैध नियुक्ति पर काम कर रहे शिक्षकों से 7-8 साल के दौरान मिली सैलरी भी वापस लेने के निर्देश दिए। सीएम ममता बनर्जी ने कहा हम सुप्रीम कोर्ट जाएंगे। जस्टिस

देवांशु बसाक और जस्टिस शब्बर रसीदी की बेंच ने कहा- कैंसर पीड़ित सोमा दास की नौकरी सुरक्षित रहेगी। पश्चिम बंगाल स्कूल सेवा आयोग नई नियुक्ति प्रक्रिया शुरू करे।

हाईकोर्ट के आदेश को मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने गैरकानूनी बताया है। उन्होंने कहा- हम उन लोगों के साथ खड़े रहेंगे जिनकी नौकरियां चली गई। भाजपा नेता न्यायपालिका के फैसलों को प्रभावित कर रहे हैं। इस फैसले के खिलाफ हम सुप्रीम कोर्ट जाएंगे।

मंदसौर में बालाजी के दरबार में चोला चढ़ाने के लिए करना पड़ता है 22 साल का इंतजार

मंदसौर (नप्र)। मंदसौर के श्री तलाई वाले बालाजी मंदिर पर शनिवार और मंगलवार के चोले के लिए आज बुकिंग कराने पर 2045 में नंबर आएगा। इतनी आगे तक की तारीखें बुक होने के बाद अब मंदिर समिति ने मंगलवार के चोले की बुकिंग बंद ही कर दी है।

शहर के गांधी चौराहा क्षेत्र स्थित 700 साल प्राचीन श्री तलाई वाले बालाजी की ख्याति विदेश तक है। यहां चोला चढ़ाने से लेकर श्री रामरक्षा स्त्रोत का हवन व भोग लगाने के लिए भक्तों को अच्छा-खासा इंतजार करना पड़ रहा है।

पुजारी पं. रामेश्वर शर्मा और पं. भूपेंद्र शर्मा के मुताबिक मंगलवार के चोले के लिए 2045 तक की रसीदें 2019 में ही बन चुकी थीं। इसके बाद से ही बुकिंग बंद कर दी हैं। शनिवार के लिए भी आज रसीद बनवाते हैं तो दिसंबर 2044 तक इंतजार करना पड़ेगा। इसके अलावा सप्ताह के अन्य दिनों के लिए भी जुलाई 2032 में ही नंबर आएगा। इसी प्रकार मंगलवार और शनिवार के राम रक्षा स्त्रोत के हवन के लिए फरवरी 2024 व अन्य दिनों के लिए अक्टूबर 2023 तक की प्रतीक्षा सूची है। भोग के लिए भी अक्टूबर-2024 तक की बुकिंग हो चुकी है।

ओबामा के लिए दो बार हो चुका है हवन- अमेरिका में बराक ओबामा जब राष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवार बने थे, तब भी भारतीय मूल के एक बालाजी भक्त ने अपने मंदसौर निवासी रिश्तेदार की मदद से श्री तलाई वाले बालाजी में हवन कराया था। चुनाव में उन्हें विजयश्री मिली थी।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा-

मप्र में सभी 29 सीटें जीतेंगे, उज्जैन-शाजापुर में जमा करवाए भाजपा के नामांकन

भोपाल, उज्जैन (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने दोहराया है कि भाजपा लोकसभा चुनाव में मप्र में सभी 29 सीटों पर जीत दर्ज करेगी।

मीडिया से बातचीत में मुख्यमंत्री ने कहा कि लोकसभा चुनाव धीरे-धीरे चरम पर पहुंच रहा है। मुझे इस बात की खुशी है कि भाजपा कार्यकर्ता पूरे उत्साह से जुटे हैं। हम अब दूसरे चरण के मतदान के नजदीक पहुंच रहे हैं। जनता का प्रतिसाद मिल रहा है। जब तक आखरी वोट नहीं डल जाता, तब तक हमारे कार्यकर्ता शांति से नहीं बैठेंगे। उन्होंने कहा कि हमने संकल्प लिया है कि सभी 29 सीटें जीतेंगे। उन्होंने पार्टी की छिंदवाड़ा में भी जीत होने की आशा जताई। हमारा मप्र में क्लीन स्वीप होगा।

उल्लेखनीय है कि भाजपा प्रत्याशी अनिल फिरोजिया ने सीएम की मौजूदगी में सोमवार को उज्जैन लोकसभा सीट के लिए अपना नामांकन दाखिल किया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव भाजपा प्रत्याशी के समर्थन में नामांकन

रैली में शामिल होंगे। साथ ही आमसभा को भी संबोधित करेंगे।

नामांकन रैली दोपहर 2.30 बजे सिंधी कालोनी हेमू कालाणी उद्यान से प्रारंभ होकर तीन बत्ती चौराहा, टावर होते हुए शहीद पार्क पर आमसभा के रूप में परिवर्तित होगी। आमसभा को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव संबोधित करेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव इससे पहले आज शाजापुर में भाजपा के लोकसभा प्रत्याशी महेंद्र सिंह सोलंकी का नामांकन जमा करने कलेक्ट्रेट कार्यालय पहुंचे। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव की उपस्थिति में शाजापुर में देवास- शाजापुर संसदीय क्षेत्र के पार्टी प्रत्याशी महेंद्र सोलंकी ने अपना नामांकन दाखिल किया। प्रदेश सरकार के मंत्री इंदर सिंह परमार, विधायक अरुण भीमावत भी उपस्थित थे।

उप्र, बिहार में हीटवेव चलेगी, राजस्थान के 6 जिलों में यलो अलर्ट

म.प्र.- छत्तीसगढ़ में तापमान 42 डिग्री के पार

नई दिल्ली (एजेंसी)। मौसम विभाग ने देश के 4 राज्यों के लिए आज हीटवेव का अलर्ट जारी किया है। इनमें बिहार, उत्तर प्रदेश, ओडिशा और पश्चिम बंगाल शामिल हैं। इन राज्यों के साथ छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, झारखंड, तेलंगाना, राजस्थान,आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु के कई जिलों में रविवार को तापमान 42 डिग्री के पार पहुंचा।

झारखंड के पूर्वी सिंहभूम स्थित बहरागोड़ा में सबसे ज्यादा 46.0 डिग्री सेल्सियस टेम्प्रेचर रिकॉर्ड किया गया। उधर, ओडिशा के कुछ जिलों में तापमान 43 डिग्री के करीब बना हुआ है। यहां हीटवेव चलने के कारण स्कूलों का समय बदला गया है। वहीं राजस्थान के 6 जिलों में यलो अलर्ट जारी किया है। आज से 24 अप्रैल तक ओडिशा के सभी स्कूल सुबह 6.30 से 10.30 तक ही लग रहे हैं। वहीं, 25 अप्रैल से गर्मियों की छुट्टियां घोषित कर दी गई हैं। इसके अलावा छत्तीसगढ़ के भी सभी स्कूलों में आज से 15 जून तक छुट्टियों का ऐलान किया गया है। मौसम विभाग ने दिल्ली में आज बूंदाबांदी की संभावना भी जताई है। वहीं, कुछ जगह धूल भरी आंधी चलने के आसार हैं। ऐसे में तापमान में गिरावट दर्ज की जाएगी और लोगों को गर्मी से राहत मिलेगी। रविवार को दिल्ली का अधिकतम तापमान 36.8 डिग्री सेल्सियस रहा। देश में गर्मी के दौर के साथ-साथ 23 राज्यों में बारिश का अनुमान जताया गया है।

राजस्थान के जयपुर-बीकानेर में आज बारिश-ओलावृष्टि का अलर्ट

राजस्थान में मौसम सामान्य रहा। अधिकतम तापमान में गिरावट दर्ज की गई। प्रदेश के सभी शहरों का तापमान 40 डिग्री से नीचे दर्ज किया गया।

हिमाचल में बर्फबारी के कारण 98 सड़कें बंद

हिमाचल में आज-कल बर्फबारी का दौर जारी रहेगा। खराब मौसम का यह सिलसिला 27 अप्रैल तक बना हुआ है। इस दौरान प्रदेश के उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में जहां पहाड़ों पर बर्फ की सफेद चादर बिछेगी, वही माध्यम से कम ऊंचाई वाले क्षेत्रों में बारिश और ओलावृष्टि फसलों को नुकसान पहुंचा सकती है।

वो घुसपैठियों में आपकी संपत्ति बांटना चाहते हैं...

पीएम मोदी के बयान पर बौखलाई कांग्रेस, कहा- ये तो हेट स्पीच है

नई दिल्ली/जयपुर (एजेंसी)। प्रधानमंत्री ने रविवार को राजस्थान के बांसवाड़ा से कांग्रेस पर बड़ा आरोप लगाया। मोदी ने कहा कि अगर कांग्रेस केंद्र में सत्ता में आती है तो वह लोगों की संपत्ति लेकर मुसलमानों को बांट देगी। इसके लिए मोदी ने पूर्व मनमोहन सिंह के बयान का भी हवाला दिया। मोदी ने मनमोहन सिंह के बयान का जिक्र करते हुए कहा कि उन्होंने कथित तौर पर कहा था कि देश के संसाधनों पर 'पहला हक' अल्पसंख्यक समुदाय का है। पीएम ने कहा कि ये अर्बन नक्सल वाली सोच है, मेरी माताओं- बहनों ये आपका मंगलसूत्र भी बचने नहीं देंगे। इस हद तक चले जाएंगे। मोदी के इस बयान के बाद एक बार फिर देश की राजनीति गरमा गई है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने इसे हेट स्पीच की संज्ञा दी।

चुनाव आयोग की शरण में कांग्रेस- कांग्रेस ने चुनाव आयोग से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संपत्ति बांटने वाले भाषण के खिलाफ चुनाव आयोग से शिकायत की है। पार्टी ने आयोग से कार्रवाई करने का आग्रह किया है।

अखिलेश नहीं लड़ेंगे चुनाव, तेज प्रताप यादव को बनाया प्रत्याशी

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश की हाई प्रोफाइल सीटों में शुमार कन्नौज लोकसभा सीट पर सपा उम्मीदवार को लेकर चल रहा सस्पेंस सोमवार को समाप्त हो गया। पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव इस सीट से चुनाव नहीं लड़ेंगे। यहां से उन्होंने तेज प्रताप यादव को मौका दिया है।

तेजस्वी ने परिवारवाद पर यूं दिया नीतीश को जवाब, सुभाष चंद्र बोस 14 भाई-बहन थे

पटना (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव की रैलियों में बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार परिवारवाद को लेकर आरजेडी सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव और उनके परिवार लगातार अटैक कर रहे हैं। परिवार पर हो रहे हमलों का जवाब तेजस्वी यादव ने दिया है। तेजस्वी यादव ने सोमवार को देश के उन बड़े नेताओं के परिवार का जिक्र किया है, जिनके ज्यादा बच्चे हैं या वे खुद कई भाई बहन रहे। तेजस्वी ने इस लिस्ट में स्वतंत्रता सेनानी सुभाष चंद्र बोस से लेकर पूर्व प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव से लेकर नीतीश कुमार के परिवार का जिक्र किया है।

भाजपा अध्यक्ष नड्डा बोले-

कांग्रेस सदा राम-सनातन विरोधी रही

- इंडी अलायंस बेल पर या जेल में; मोदी राजनीति को विकासवाद पर ले गए

रायपुर/लोरमी (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ पहुंचे भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कांग्रेस और इंडी अलायंस पर जमकर निशाना साधा। मुंगेली के लोरमी में सोमवार को जनसभा को संबोधित करते हुए नड्डा ने कहा कि, ये अलायंस या तो जेल में हैं या फिर बेल पर है। उन्होंने कहा कि, कांग्रेस सदा-सदा राम और सनातन विरोधी रही है। क्या इसी कांग्रेस की सरकार नहीं थी, जब आप ने कोर्ट में एफिडेविट दिया था कि राम काल्पनिक है। राम का कोई ऐतिहासिक वजूद नहीं है।

बाप रे! रिफाइन और पाउडर से बन रहा मावा

- म.प्र.के भिंड में फूड विभाग की छापेमारी में बड़ा खुलासा

भोपाल/भिंड (एजेंसी)। मध्य प्रदेश के भिंड में फूड विभाग की छापेमारी में बड़ा खुलासा हुआ है। एक डेयरी में रिफाइन और पाउडर से मावा तैयार किया जा रहा था। यह देखकर फूड विभाग के अधिकारी हैरान रह गए हैं। मौके से 240 किलो नकली मावा मिला है। साथ ही अन्य डेयरी प्रोडक्ट में भी मिलावट की जा रही थी। मध्य प्रदेश के चंबल इलाके में मिलावट का धंधा जोरों पर है। डेयरी प्रोडक्ट में भी जमकर मिलावट हो रहा है। भिंड जिले में नकली मावा बनाने वाली एक फैक्ट्री का खुलासा हुआ है, जहां रिफाइन और पाउडर से मावा तैयार किया जा रहा है। इस मावे की सप्लाई बाजारों में होती थी। इसी से मिठाई बनते थे। शादी-विवाह की सीजन में इसकी खपत ज्यादा होती थी। मिलावटी मावे से बनी मिठाइयां लोग चाव से खाते थे। ऐसे में अगर आप भी बाजार से मावा खरीदने जा रहे हैं तो इस वीडियो को देख लें।

मिलावटी मावा जब्त

दरअसल, भिंड के देहात थाना क्षेत्र के ग्राम बक्शीपुर में फूड विभाग ने दो डेयरी पर कार्रवाई की है। कार्रवाई के दौरान 2 लाख से भी अधिक कीमत का मिलावटी मावा जब्त किया है। बताया जा रहा है कि शादी सीजन में मावा की जबरदस्त डिमांड मार्केट में आ रही है। बताया जा रहा है कि डिमांड के बराबर जब मार्केट में मावा उपलब्ध नहीं हो रहा है तो लोग अब इसमें हानिकारक तत्वों को मिलाकर नकली मावा और घी तैयार कर रहे हैं।

ग्रामीण इलाकों में सबसे ज्यादा बन रहा- ग्रामीण अंचल में यह काम बड़े पैमाने पर किया जा रहा है। इसे शहरों में लाकर ऊंचे दामों पर बेचा जा रहा है। लोग भी बड़े चाव के साथ इसे खा रहे हैं। साथ ही इसका आनंद ले रहे हैं।

छत्तीसगढ़-कांकेर में अमित शाह बोले-

मठ-मंदिरों और संपत्ति पर कांग्रेस की नजर

- मनमोहन सिंह ने कहा था संसाधन पर पहला हक माइनॉरिटी का

रायपुर (एजेंसी)। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि देश के मठ मंदिरों पर कांग्रेस की नजर है। यहां का पैसा कहां जाने वाला है? मनमोहन सिंह की बात याद करो, उन्होंने कहा था कि संसाधन, रेवेन्यू पर पहला अधिकार माइनोरिटी का है। हम कहते हैं कि पहला हक गरीबों, दलितों और आदिवासियों का है।

शाह ने आगे कहा कि कांग्रेस को मिर्ची लगी है। मोदी जी ने उनके घोषणा पत्र में से सबकी संपत्ति का सर्वे कराने का निर्देश दिया तो प्रधानमंत्री पर सवाल उठा रही है। राहुल गांधी इसे स्पष्ट करें। क्यों करना है इस सर्वे को? अमित शाह ने ये बातें कांकेर लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी भोजराज नाग के प्रचार के दौरान कही।

कलेक्टर कार्यालय में आग लगने पर हाइड्रेट से तुरंत पहुंचेगा पानी

छत पर लगा सायरन भी बजेगा, दो किमी तक सुनाई देगी आवाज, हाईड्रेट में भी सुधार कर पाइप से पानी का प्रवाह जोड़ा

इंदौर। गर्मी के मौसम के दौरान होने वाली आग की घटना से बचाव के लिए कलेक्टर कार्यालय में सुरक्षा उपाय किए गए हैं। आग की घटना होने पर कलेक्टर कार्यालय तक पास में बने हाइड्रेट से पाइप द्वारा तुरन्त पानी पहुंचेगा। सालों से बंद पड़े पाइपो को गया है। इसके अलावा कलेक्टर कार्यालय की छत पर सायरन भी लगाया गया है, जो आग लगने पर बज उठेगा। इसकी आवाज दो किमी दूर तक सुनाई देगी। शहर में होने वाली आगजनी की घटना के बाद कलेक्टर आशीष सिंह ने बहुमंजिला इमारतों में अग्नि सुरक्षा प्रबंध की जांच शुरू कराई है। जांच शुरू हुई तो कई जगह लापरवाही सामने आई, जिसमें नोटिस दिए गए और बाद में कुछ स्थानों को सील भी किया गया। कलेक्टर कार्यालय में भी अग्नि सुरक्षा प्रबंध की जांच की गई। कलेक्टर के निर्देश पर अपर कलेक्टर रोशन राय ने यहां की व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया। अपर कलेक्टर रोशन राय ने बताया कि कार्यालय में सुरक्षा के इंतजाम पूरे हैं, यहां लगे अग्निसुरक्षा उपकरणों की वैधता 2025 तक है। कुछ पाइप जो खराब हो गए थे, उनमें बदलाव किया गया है। कलेक्टर कार्यालय के पास स्थापित हाइड्रेट में भरे गए पानी को अब पूरे कार्यालय में लगाए गए पाइप तक पहुंचाने की व्यवस्था भी कर ली गई है। यदि आग की घटना होती है, तो तुरंत पानी का प्रवाह कार्यालय तक पहुंचेगा। इससे आग बुझाई जा सकेगी।

प्रेमिका से करना चाहता था शादी, किया इंकार

मुस्तफा ने होटल में लगा ली फांसी

इंदौर। खबरों के अनुसार, मोहम्मद मुस्तफा विजय नगर क्षेत्र के होटल गैलेक्सी में आकांक्षा नामक युवती के साथ रुका था। दोनों आरके क्लब से पार्टी कर होटल में रुके थे। जब उसने फांसी लगाई उस समय प्रेमिका आकांक्षा भी कमरे में मौजूद थी। दोनों के बीच शादी की बात को लेकर विवाद हुआ था, जिसके बाद प्रेमिका ने खुद को बाथरूम में बंद कर लिया था। मुस्तफा आकांक्षा के साथ शादी करना चाहता था, लेकिन उसका कहना था कि धर्म अलग होने से शादी में मुश्किलें होंगी। जब वह बाथरूम से बाहर निकलीं तो मुस्तफा फांसी पर टंगा मिला था।

इसके बाद प्रेमिका ने होटल स्टाफ को फांसी की सूचना दी। विजय नगर पुलिस ने शव बरामद कर जांच शुरू कर दी। प्रेमिका ने बताया कि दोनों की मुलाकात पबजी खेलने के दौरान हुई थी।

इंदौर के करीब यह स्थान, यहां समय कहता है त्रेतायुग की गाथा

यहां उल्टी है हनुमान की मूर्ति

पर्यटकों को मिलता है आस्था का आनंद, इंदौर शहर से महज 30 किमी दूर सांवेर में स्थित है श्रीराम पाताल विजय उल्टे हनुमान मंदिर

इंदौर। एक तरफ मौसम में दिनोंदिन तीखी होती गर्मी और दूसरी तरफ छुट्टियों वाला माहौल तथा सैर-सपाटे की ख्वाहिश। इससे उलझन बढ़ जाती है कि छुट्टी में जाएं तो कहां जाएं। मालवा का मौसम तो फिर भी ठीक है, लेकिन मालवा से बाहर कदम रखते ही क्या दिन और क्या रात... एक समान तपन। आइए आपकी इस मुश्किल को थोड़ा आसान करते हैं और आपको ले चलते हैं एक ऐसी यात्रा पर, जिसमें सुकून, निर्मल आनंद और सैर-सपाटे का मजा तो है ही, साथ ही अध्यात्म की अनुभूति और अपने धर्म की कथा को जानने का अवसर भी है।

हम बात कर रहे हैं इंदौर शहर से महज 30 किमी दूर सांवेर में स्थित श्रीराम पाताल विजय उल्टे हनुमान मंदिर की। यहां स्थापित प्रतिमा सीधी नहीं बल्कि उल्टी है, अर्थात सिर पाताल की ओर तथा पांव आकाश की ओर। राइडिंग के शौकीन लोग अपनी बाइक से और परिवार के साथ ड्राइव की इच्छा रखने वाले चार पहिया वाहन से यहां जा सकते हैं।

यह एक ऐसा मंदिर है, जिसका संबंध रामायण काल से है। यह स्थान दिव्य और चैतन्य तो है ही, यहां मन को शांति का अनुभव भी होता है। कहा जाता है कि पूरी दुनिया में केवल यही एक ऐसा मंदिर है, जहां हनुमानजी की सीधी नहीं बल्क उल्टी प्रतिमा है। इसी उल्टी प्रतिमा की आराधना करने पर सारे उल्टे और बिगड़े काम भी संवर जाते हैं। राम नवमी और हनुमान जन्मोत्सव पर यहां भक्तों की बहुत भीड़ रहती है। वैसे ही साल भर भी यहां दर्शन करने वालों का तांता लगा रहता है।

प्रतिमा उल्टी इसलिए क्योंकि यहां से हनुमानजी ने किया था पाताल में प्रवेश- मान्यता है कि यही वह स्थान है जहां से हनुमानजी ने पाताल में प्रवेश किया था। रामायण में वर्णन आता है कि श्रीराम-रावण युद्ध के दौरान जब अहिरावण छल से श्रीराम-लक्ष्मण को बंदी बनाकर बलि देने के लिए पाताल लोक में ले गया था, तब हनुमानजी ने उन्हें बचाने के लिए इसी स्थान से पाताल में प्रवेश किया था। मंदिर के सेवादार पंडित अमित व्यास बताते हैं कि पुराण के अनुसार पृथ्वी लोक से पाताल लोक में प्रवेश करने के केवल दो ही मार्ग का वर्णन है। इनमें से एक अवंतिका के समीप और दूसरा मार्ग काशी में है।

सांवेर वही क्षेत्र है, जो अवंतिका नगरी के समीप है, इसलिए हनुमानजी ने यहीं से पाताल लोक में प्रवेश किया था। जिस तरह गोताखोर नदी में छलांग लगाता है, तो सिर नीचे की ओर तथा पांव ऊपर की होते हैं, उसी तरह हनुमानजी ने भी पाताल में प्रवेश किया था इसलिए यहां उनकी प्रतिमा का सिर नीचे और पांव ऊपर हैं। इसीलिए इनका नाम उल्टे हनुमान है। जिस समय हनुमानजी ने पाताल में प्रवेश किया था तब उनकी परछाई एक शिला पर अंकित हो गई। उसी शिला की पूजा यहां आज भी की जाती है।

इंदौर से हैं दो रास्ते

यदि आप इंदौर से इस मंदिर के दर्शन के लिए जा रहे हैं, तो इसके दो रास्ते हैं। पहला रास्ता सांवेर में मुख्य मार्ग से प्रवेश कर बाजार चौक होते हुए कान्ह नदी का पुल पार करते हुए मंदिर तक ले जाता है। दूसरा रास्ता सांवेर के मुख्य मार्ग से करीब 500 मीटर आगे का है, जो एक ढाबे के पास से सांवेर में जाता है। दोनों ही रास्ते बेहतर हैं, लेकिन यदि आप भीड़ से बचना चाहते हैं, तो दूसरा रास्ता चुनना ज्यादा ठीक होगा। यह मंदिर सुबह 7 बजे से रात 9 बजे तक खुला रहता है इसलिए आप इस बीच किसी भी वक्त यहां जा सकते हैं।

इसलिए भी है खास है यह स्थान

विशाल क्षेत्र में बने इस मंदिर में हनुमानजी के विग्रह के साथ-साथ श्रीराम, सीतामाता और लक्ष्मणजी की मनोहारी मूर्तियां हैं। इसके अलावा यहां एक समाधि भी बनी हुई है। यह यहां रहने वाले संत खाकी बुआ की है। कहा जाता है कि उन्होंने जीवित अवस्था में ही समाधि ले ली थी। मंदिर के समीप ही ख्याता नदी (वर्तमान नाम कान्ह नदी) भी है।

मंदिर परिसर में विशाल वृक्ष और पक्षियों का कलरव सुकून देता है, तो मंदिर के भीतर गूंजने वाली राम नाम धुन मन को भक्ति से भर देती है। बात अगर परिवार के साथ सैर सपाटे की करें, तो उसके लिए भी यह स्थान बेहतर है। यहां आप अपने साथ तो भोजन ला ही सकते हैं या फिर यहां भी भोजन बनवाकर पार्टी का आनंद ले सकते हैं। मूलभूत सुविधाएं तो मंदिर की तरफ से ही मुहैया हो जाती हैं। यहां हनुमान अष्टमी, हनुमान जयंती और श्रीराम नवमी पर विशेष उत्सव भी होते हैं। यह एक ऐसा स्थान है, जहां प्रचुर हरियाली है। इस कारण यह दोपहर में भी ठंडक प्रदान करता है। शीतल पेयजल की भी यहां व्यवस्था है और सुविधागृह भी बने हुए हैं।

वीर बगीची में भगवान का अभिषेक

- **हाटकेश्वर महादेव की निकलेगी शोभायात्रा**

इंदौर। शहर में विभिन्न धार्मिक-सामाजिक और सांस्कृतिक संगठनों के कार्यक्रम 22 अप्रैल को होंगे। इसमें हनुमान जयंती के उपलक्ष्य में वीर बगीची में भगवान का अभिषेक होगा। हाटकेश्वर महादेव की शोभायात्रा और शिव-साई मंदिर का स्थापना दिवस समारोह भी मनाया जाएगा। इसके साथ ही हरिधाम पर हनुमंत कथा और हनुमान मंदिर स्कीम नंबर 134 में रामकथा होगी।

- हनुमान जन्मोत्सव में पंचकुइया स्थित वीर बगीची में सुबह 9 बजे राजाधिराज वीर अलीजा सरकार का केसर, औषधियों का जल, चंदन, इत्र, दुध, 7 पवित्र नदियों का जल, पंचामृत और भस्म से महाअभिषेक किया जाएगा। अभिषेक

11 विद्वान पंडितों एवं आश्रम के वेदपाठी बटुकों द्वारा वैदिक मंत्रोउच्चार के साथ किया जाएगा। दोपहर 12 बजे महाआरती एवं इसी दिन अखंड रामायण पाठ की शुरुआत भी होगी, जो सुबह 9 बजे से प्रारंभ होकर अगले दिन सुबह 9 बजे तक जारी रहेगी। हनुमान जयंती पर स्वर्ण श्रृंगार किया जाएगा।

- सांवेर रोड औद्योगिक क्षेत्र स्थित शिव साईं मंदिर का रजत जयंती स्थापना दिवस समारोह में शाम 7 बजे फूल बंगला सजाकर 56 भोग लगेगा। इसके बाद संतों का सम्मान होगा और भोजन प्रसादी का आयोजन किया जाएगा।। मूर्ति की स्थापना के 25 वर्ष पूरे होने पर स्थापना दिवस मनाया जा रहा है। इस दौरान भजन संध्या सहित विभिन्न आयोजन होंगे।
- नागर वणिक समाज के कुलदेवता हाटकेश्वर महादेव भगवान का प्रकटोत्सव मनाया जाएगा। इसमें सुबह 7 बजे 'भगवान हाटकेश्वर महादेव' का दुग्ध अभिषेक किया जाएगा।

इंटेलिजेंस तक पहुंची पिटाई कांड की गोपनीय रिपोर्ट

इंटेलिजेंस लगातार हो रही इन घटनाओं को लेकर अफसरों से चर्चा न करते हुए खुद ही जानकारी जुटा रहा है

इंदौर। जोन-2 में होटल संचालक पिटाई कांड तो जैसे-तैसे सुलझाया कि जोन-4 में रायता फैल गया। इस बार मामला राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से जुड़ा होने से इंटेलिजेंस तक सकते में है। पिटाई के बहाने अफसरों का लेखाजोखा तैयार हो रहा है। पिटाई करने वाले टीआई (द्वारकापुरी) अनिल गुप्ता इसके पहले विधायक की शिकायत पर हटाए गए थे। इस बार डिप्टी कलेक्टर के भाई पर हाथ छोड़ दिए जो संघ कार्यकर्ता है और बड़े पदाधिकारियों का करीबी भी है। टीआइ ने डायल-100 पर काल कर विवाद की सूचना देने पर उसकी पिटाई कर डाली। गलती का एहसास होते ही टीआइ प्रतिदिन हाजिरी लगा रहे हैं। डीसीपी ऋषिकेश मीना जांच करवा रहे हैं। मामला भले ही उजागर नहीं हुआ लेकिन अंदर ही अंदर सुलगता जा रहा है। इंटेलिजेंस लगातार हो रही इन घटनाओं को लेकर अफसरों से चर्चा न करते हुए खुद ही जानकारी जुटा रहा है।

क्राइम ब्रांच और थानों में रार, सबसे ज्यादा बड़े साहब की चर्चा- छोटा-मोटा जुआं-सट्टा और शराब पकड़ कर खानापूर्ति में लगी क्राइम ब्रांच इन दिनों थाना और जोन अफसरों के निशाने पर है। अफसरों ने स्टाफ को निर्देश दिए हैं कि क्राइम ब्रांच वालों के उठने-बैठने के ठीए और शुभ-लाभ के रिकार्ड बनाए जाएं। निशाने पर बड़े साहब भी हैं। तत्कालीन डीसीपी निमिष अग्रवाल के कार्यकाल में अपराध शाखा कायदे में थी। उनके तबादले के बाद डीसीपी हंसराजसिंह ने पद संभाला लेकिन कामकाज एडीसीपी राजेश दंडोतिया की देखरेख में ही होता है। अपराध शाखा में वर्षों पुराने एसआई-एएसआई और जवान जमे हैं। लेकिन अग्रवाल के जाते ही टीमों ने क्षेत्र बांट लिए। जुआं-सट्टा, शराब, धोखाधड़ी, एडवाइजरी और मिलावटखोरी के मामलों का बंटवारा हो गया। जोन के अफसरों को खबर मिली शहर में बड़े माफिया पर तो कार्रवाई नहीं होती। बल्कि साहब से शुभ-लाभ न करने वालों के अड्डों पर छापा मारा जाता है।

डीसीपी की सख्ती और सांसत में टीआइ- नवागत डीसीपी अभिनय विश्वकर्मा जिस अंदाज में कसावट ला रहे हैं उससे टीआई हैरान हैं। खजराना थाना क्षेत्र में हुए घटनाक्रम से तो थाना प्रभारी को सफाई देनी पड़ गई। शहर के ज्यादातर निरीक्षक नेताओं की मेहरबानी से कुर्सी पर बैठे हैं। मजबूरन छुटभैये नेताओं की सुननी पड़ती है। दिनभर थाने में तांता लगा रहता है। हाई प्रोफाइल विवाद जोन-2 में ही आते हैं। मंत्री तुलसीराम सिलावट के समर्थक सोंटा के बेटे करण का भी जोन-2 में विवाद हुआ। मामला खजराना थाने पहुंचा तो टीआई सुजीत श्रीवास्तव मंत्री का नाम सुनते ही पीछे हट गए। करण को पकड़ने की हिम्मत नहीं कर सके। डीसीपी ने वीडियो देखकर टीआइ की जमकर खिंचाई की। एफआइआर के साथ यह भी कहा कि करण गिरफ्तार होना चाहिए। परेशान टीआई ने समर्थकों से गुहार लगाई और कहा अब तो कुर्सी जाने की नौबत आ गई है। मारपीट न करने का वादा कर करण को थाना हाजिर करवाया गया।

हाईप्रोफाइल केस में खुद पहुंचे डीजीपी- जमीन घोटाले के हाईप्रोफाइल केस में डीजीपी खुद इंदौर आ गए। डीजीपी दो साल से लंबित इस केस को जल्द सुलझाना चाहते हैं। यह मामला जोन-2 के अंतर्गत दर्ज हुआ है। यह पहला अवसर नहीं है जब डीजीपी ने जमीन मामलों की फाइलें तलब की हो।

इंदौर नगर निगम में फर्जी बिल कांड, प्रदेश के अन्य नगरीय निकाय भी जांच के दायरे में

कैबिनेट मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने प्रमुख सचिव को दिए जांच के आदेश, पांच वर्षों में किए गए भुगतान की जांच होगी

इंदौर। इंदौर नगर निगम में 28 करोड़ 76 लाख रुपये के फर्जी बिल कांड के सामने आने के बाद प्रदेश के अन्य नगरीय निकायों में हुए कार्य भी जांच के दायरे में आ गए हैं। नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने प्रमुख सचिव को जांच के लिए कहा है। इन निकायों में पिछले पांच वर्षों में विभिन्न प्रोजेक्ट के तहत हुए विकास कार्यों और उनके एवज में किए गए भुगतान की जांच की जाएगी। आशंका है कि इंदौर में फर्जीवाड़े को अंजाम देने वाली फर्मों और उनके संचालकों के अलावा अन्य कंपनियों द्वारा प्रदेश के अन्य नगरीय निकायों में भी ऐसा ही फर्जीवाड़ा कर बगैर काम के करोड़ों का भुगतान प्राप्त किया गया है। इंदौर नगर निगम में हाल ही में 28 करोड़ 76 लाख रुपये का फर्जी बिल कांड सामने आया है। इंदौर की पांच फर्मों ने ड्रेनेज विभाग में बगैर काम किए 28 करोड़ 76 लाख रुपये के फर्जी बिल प्रस्तुत किए थे।

फर्जी बिलों का आडिट भी हो गया- चौंकाने वाली बात यह है कि इन बिलों का आडिट भी हो गया। आडिट शाखा ने आंख मूंदकर इन बिलों को लेखा शाखा को भेजा, ताकि भुगतान हो सके। लेखा शाखा में शक होने पर जब ये बिल वापस ड्रेनेज शाखा को भेजे गए तो पता चला कि जिस काम के बिल प्रस्तुत किए गए हैं, वह तो उक्त फर्मों ने कभी किया ही नहीं था।

पांच फर्म और उनके संचालकों पर प्रकरण- फर्जीवाड़ा सामने आने के बाद नगर निगम ने पांच फर्मे नींव कंस्ट्रक्शन, ग्रीन कंस्ट्रक्शन, किंग कंस्ट्रक्शन, क्षितिज इंटरप्राइजेस व जाह्नवी इंटरप्राइजेस और इन फर्मों के संचालक मो. साजिद, मो. सिद्दिकी, मो. जाकिर, रेणु वडेरा और राहुल वडेरा के खिलाफ आपराधिक प्रकरण दर्ज कराया है। इधर निगमायुक्त शिवम वर्मा ने भी जांच समिति गठित की है। अब प्रदेश सरकार ने अन्य नगरीय निकायों में भी जांच का आदेश दिया है। आशंका है कि पूरे प्रदेश में इस तरह का फर्जीवाड़ा हुआ है।

तीन करोड़ 20 लाख रुपये का भुगतान- पुलिस जांच में यह बात भी सामने आई कि आरोपित फर्मों को इंदौर नगर निगम से उक्त फर्जी बिल के पेटे तीन करोड़ 20 लाख रुपये का भुगतान भी हो गया। फर्जी बिलों पर जिन अधिकारियों के हस्ताक्षर बताए जा रहे हैं, उनका कहना है कि उन्होंने बिल पर कभी हस्ताक्षर किए ही नहीं। ये फर्जी हस्ताक्षर हैं। पुलिस हस्ताक्षर विशेषज्ञ से अधिकारियों के हस्ताक्षर की जांच भी करवा रही है।

पते पर नहीं मिली फर्में- आरोपित पांच फर्मों में से नींव कंस्ट्रक्शन, ग्रीन कंस्ट्रक्शन और किंग कंस्ट्रक्शन का पता मदीना नगर है, लेकिन मौके पर कोई फर्म नहीं है। इसी तरह क्षितिज इंटरप्राइजेस और जाह्नवी इंटरप्राइजेस के आशीष नगर के पते पर एक रहवासी मकान है, जिस पर ताला लगा है।

दोषियों पर होगी कार्रवाई- इंदौर में फर्जीवाड़ा सामने आने के बाद इस बात की आशंका है कि ऐसा ही फर्जीवाड़ा अन्य जगह भी हुआ हो। हमने प्रमुख सचिव को अन्य नगरीय निकायों में हुए कार्यों की बारीकी से जांच करने का आदेश दिया है। जांच में जो भी दोषी पाया जाएगा, उस पर कार्रवाई की जाएगी। - कैलाश विजयवर्गीय, नगरीय निकाय एवं आवास मंत्री

सीबीआई से जांच की मांग- इधर कांग्रेस ने नगर निगम फर्जी बिल कांड की सीबीआइ से जांच कराने की मांग की है। पार्टी ने इस संबंध में डीजीपी को पत्र लिखकर कहा है कि मामले में शामिल अधिकारियों, कर्मचारियों की जान को भी खतरा है।

एमपीपीएससी ने जारी किया कार्यक्रम, जून-जुलाई में रखी प्रमुख परीक्षाएं

इंदौर। लोकसभा चुनाव घोषित होते ही मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (एमपी पीएससी) ने भर्ती प्रक्रिया कार्यक्रम में बदलाव काफी पहले कर दिया था। निर्वाचन कार्यों में अधिकारी और कर्मचारियों की ड्यूटी आने से आयोग को परीक्षा आगे बढ़ाना पड़ी है। मार्च से लेकर जून तक किसी भी विभाग के रिक्त पदों के लिए लिखित परीक्षा नहीं रखी है। अधिकांश परीक्षाएं मतगणना बाद करवाने का फैसला लिया है। वैसे आयोग ने साक्षात्कार कार्यक्रमों में कोई संशोधन नहीं किया है। अधिकारियों के मुताबिक, साक्षात्कार लेने वाली पैनल में ज्यादातर सदस्य बाहर से रहते हैं। इसमें विशेष कोई व्यवस्था नहीं करना पड़ती है और न ही अधिक संसाधनों की जरूरत रहती है। इसके चलते साक्षात्कार की प्रक्रिया आसानी से हो जाती है। आयोग ने 15 अप्रैल के बाद साक्षात्कार और लिखित परीक्षा के संबंध में कार्यक्रम जारी किया है, जिसमें मतदान-मतगणना यानी 5 जून तक सिर्फ साक्षात्कार होंगे। चयनित उम्मीदवारों को पैनल सदस्य अपने मापदंडों पर परखेंगे। वैसे इन दिनों राज्य सेवा परीक्षा 2021 के इंटरव्यू चल रहे है। 290 पदों के लिए 1046 उम्मीदवारों को बुलाया है। 18 अप्रैल से 24 मई तक प्रक्रिया चलेगी।

अब कांग्रेस नहीं बदलेगी धार प्रत्याशी

24 अप्रैल को मुवेल भरेंगे नामांकन

इंदौर। धार लोकसभा सीट से कांग्रेस को उम्मीद है,क्योकि विधानसभा चुनाव में जिले की आठ सीटों में से छह सीट कांग्रेस ने जीती है। इस बार कांग्रेस ने इस सीट से नए चेहरे राधेश्याम मुवेल को टिकट दिया था, लेकिन उन पर निष्क्रियता के आरोप लगे थे,क्योकि टिकट तय होने के बाद उन्होंने चुनाव कार्यालय नहीं खोला था। इसके बाद उनका टिकट काट कर जयस नेता महेंद्र कनौज को टिकट दिए जाने की चर्चा थी। बाद में उंमग सिंगार ने मुवेल पर भरोसा जताया और अब वरिष्ठ पदाधिकारियों ने मुवेल को पुरी तैयारी के साथ चुनाव लड़ने को कहा है। इस मामले में राधेश्याम मुवेल का कहना है कि टिकट मिलने के बाद वे ग्रामीण क्षेत्रों में चुनाव प्रचार करने चले गए थे। इस कारण चुनाव कार्यालय खोले जाने में देरी हुई। इसका मतलब यह नहीं था कि वे चुनाव कमजोर तरीके से लड़ रहे है। मुवेल ने कहा कि उनकी पार्टी के वरिष्ठ नेतागणों से चर्चा हो चुकी है। अब धार में टिकट नहीं बदलेगा। मैं 24 अप्रैल को नामांकन भी जमा कर रह हुं।

दो बार से लगातार भाजपा का कब्जा- धार लोकसभा सीट पर वर्ष 2009 में कांग्रेस के गजेंद्र राजूखेड़ी चुनाव जीते थे। इसके बाद धार लोकसभा सीट का परिसीमन हो गया। वर्ष 2014 में भाजपा उम्मीदवार सावित्री ठाकुर सांसद बनी थी और वर्ष 2019 में छतर सिंह दरबार चुनाव जीते। भाजपा ने इस बार फिर सावित्री को उम्मीदवार बनाया है।

संपादकीय

घटे मतदान से सस्पेंस बढ़ा

मध्यप्रदेश में लोकसभा चुनाव के पहले चरण में 6 सीटों पर हुए कम मतदान ने राजनीतिक दलों और खासकर भाजपा को चिंता में डाल दिया है। मतदान कम क्यों रहा, इसको लेकर सस्पेंस बरकरार है। मोटे तौर पर कम वोटिंग के पीछे भारी गर्मी को कारण बताया जा रहा है, लेकिन यह बहुत गले उतरने वाला नहीं है, क्योंकि मप्र सहित देश के सभी राज्यों में 2004 से लेकर अब तक सभी लोकसभा चुनाव इसी मौसम में होते रहे हैं और इनमें से भी पिछले तीन लोकसभा चुनाव में भाजपा का वोट प्रतिशत और जीती हुई सीटों की संख्या लगातार बढ़ रही है। इसी को ध्यान में रखते हुए भाजपा ने इस बार राज्य में मिशन 29 तय किया था, जो अब पूरा होता मुश्किल लग रहा है। आंकड़ों का विश्लेषण करें तो कम मतदान राज्य में कांग्रेस के पक्ष में और भाजपा के विरोध में जाता है। ताजा आंकड़े बताते हैं कि राज्य में लोकसभा चुनाव के पहले चरण में 6 सीटों पर 67 फीसदी वोटिंग हुई। पिछली बार इन सीटों पर औसत 75 फीसदी वोटिंग हुई थी। यानी करीब 8 फीसदी कम वोटिंग हुई है। इनमें से भी सबसे कम 55.19 फीसदी वोटिंग सीधी में हुई, जो 2019 से 14 फीसदी कम है। इसी तरह शहडोल में भी 11 फीसदी कम वोटिंग हुई है। सबसे ज्यादा 79.59 फीसदी वोटिंग छिंदवाड़ा में हुई फिर भी यह 2018 की तुलना में लगभग तीन फीसदी कम रही। इससे छिंदवाड़ा सीट पर सस्पेंस और बढ़ गया है कि क्या कम वोटिंग से कांग्रेस के नकुलनाथ की जीत पक्की हो गई है या फिर दलबदल के चक्रव्यूह में फंसी कांग्रेस के वोटर में उत्साह की कमी थी? इसका ठीक ठीक जवाब देना मुश्किल है। भाजपा ने इस बार उसके लिए लगभग अविजित रही छिंदवाड़ा सीट पर कमलनाथ के किले को ढहाने को पूरी ताकत झोंक दी थी। दो मंत्री कैलाश विजयवर्गीय और प्रह्लाद पटेल छिंदवाड़ा में ही जमे थे। कमलनाथ के कई समर्थक भाजपा ने तोड़ लिए थे, हालांकि इनमे से एक छिंदवाड़ा के मेयर विक्रम अहाके ने मतदान के दिन फिर पाला बदल कर घर वापसी की कोशिश की। इसके अलावा कमलनाथ ने बेटे को चुनाव जिताने के लिए इमोशनल कार्ड खेला था। उसका असर भी मतदाता पर हुआ लगता है। दूसरी तरफ भाजपा का मानना है कि मतदान के दिन भाजपा का वोटर ही बाहर निकला। कांग्रेस के वोटर में निराशा ज्यादा थी। इन दावों में कितनी सच्चाई है ये तो चुनावी नतीजे ही बताएंगे। छिंदवाड़ा को अगर अपवाद माने तो अन्य सीटों पर भाजपा को निश्चिंत रहने का कोई कारण नहीं है। सीधी में उसकी जीत का मार्जिन बहुत घट सकता है तो मंडला में भाजपा प्रत्याशी फग्गन सिंह कुलस्ते चुनाव हार भी सकते हैं। हालांकि बाकी चार सीटों पर भाजपा बेहतर स्थिति में है। लेकिन मप्र में कम होने वाली एक भी सीट पार्टी के 4 सौ पार के नारे में सेंध लगाएगी, यह तय है। इस बार चुनाव में मतदान कम रहने का बड़ा कारण तो चुनाव नतीजों का लगभग पहले से तय होना है। आम तौर पर मतदाता मान बैठे हैं कि जीतना भाजपा को ही है और अगले प्रधानमंत्री फिर मोदी ही बनेंगे। ऐसे में किसी का वोट देना न देना ज्यादा मायने नहीं रखता। दूसरे शब्दों में कहें तो इस बार चुनाव को लेकर वोटर ज्यादा उदासीन है। मतदाता की यह उदासीनता भाजपा के राजनीतिक अरमानों पर पानी फेर सकती है। 2009 में भी वोटिंग बहुत कम हुआ था और कांग्रेस 29 में से 12 सीटें जीतने में कामयाब रही थी। हालांकि तब और अब की राजनीतिक परिस्थितियों में जमीन आसमान का फर्क है।

हमको उनसे वफा की है उम्मीद

नजरिया

तनवीर जाफरी

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

वर्तमान दौर में हमारे देश में राजनीतिज्ञों की छवि ऐसी बन चुकी है कि यदि आप किसी भी अभिभावक से पूछें कि क्या वह अपनी संतान को नेता बनाना पसंद करेगा? तो शायद ही इसके जवाब में कोई 'हाँ' कहता दिखाई दे। दरअसल आम तौर से राजनीति में तीन श्रेणियों के लोग ही सक्रिय दिखाई देते हैं। पहली श्रेणी उन लोगों की जिन्हें राजनीति पारिवारिक विरासत में मिली है। सरल भाषा में जिन्हें परिवारवादी राजनीतिज्ञ कहा जाता है। दूसरी श्रेणी के वह लोग जो छात्र राजनीति या गांव पंचायत की सियासत से निकलकर आये हैं। और अफ़सोस के साथ कहना पड़ता है कि तीसरी श्रेणी में वह लोग आते हैं जो अपने जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल नहीं हो पाते और पूर्णतयः अयोग्य होते हैं। इसी श्रेणी प्रायः सम्प्रदायवादी, जातिवादी,क्षेत्रवादी राजनीति कर सफलता का शार्ट कट अपनाते हैं। बाहुबली व दबंग छवि के लोग भी प्रायः इसी श्रेणी में गिने जा। अपवाद स्वरूप कुछ ही लोग राजनीति में ऐसे होते हैं जो उच्च शिक्षा ग्रहण कर और अंतरात्मा से देश की सेवा करने की ग़रज़ से राजनीति में पदार्पण करते हैं। चूँकि ऐसे लोगों की संख्या कम होती है इसलिये कुल मिलकर नाकारे राजनीतिज्ञों का वर्ग इनपर भी हावी हो जाता है। और इसी दुर्भाग्यशाली परिस्थितियों का ही परिणाम है कि हमारा देश की राजनीति में इस समय चरित्रवान व विचारवान लोगों की कमी है जबकि अपराधी, स्वार्थी, चरित्रहीन, साम्प्रदायिकतावादी ,जातिवादी, मक्कार,झूठे, बेईमान, दलबदलू, अवसरवादी तथा पूर्वाग्रही लोगों की भरमार है। आपने देखा होगा कि कभी पत्रकार ने किसी एमएलए से ही MLA का फुल फ़ार्म पूछा और वह नहीं बता पाया। दूसरों को वन्देमातरम जबरन पढ़ाने के लिये मर मिटने के लिये तैयार कई लोगों से कैमरे के सामने लाईव डिबेट में जब वन्देमातरम सुनाने के लिये कहा गया तो वह स्वयं नहीं सुना पाया। अधिकांश नेताओं में जहालत के ऐसे अनेक प्रमाण सुनने को मिल जायेंगे।

जब ऐसे लोगों के राजनीति करने का मक़सद ही धनार्जन,स्वार्थ, और अपने राजनैतिक भविष्य को सुरक्षित रखना हो तो ज़ाहिर है वहां विचारधारा या वैचारिक प्रतिबद्धता नाम की चीज़ कोई महत्व रखती। ऐसे ज़मीर फ़रोशों और मौक़ा परस्तों को भले ही जनता पहचानने में चूक कर देती हो और उनके 'वैचारिक धर्म परिवर्तन' या दलबदल के बाद यहां तक कि कल के नंगे भूखे नेताओं के धनाढ्य बन जाने

के बाद भी बार बार जनता उन्हें निर्वाचित भी करती रहती हो। परन्तु उनके इस चरित्र से उस दल के नेता भी भली भाँती वाक़िफ़ होते हैं जहाँ वे अपने स्वार्थवश व अपना राजनैतिक भविष्य संवारने के नाम पर पनाह लेते हैं। ऐसे दलों के नेता चतुराई वश अपना कुंबा बढ़ाने की ग़रज़ से उन्हें पनाह देकर उनके जनाधार का लाभ तो उठा लेटे हैं परन्तु दल बदल या विचार परिवर्तन की इस स्वार्थपूर्ण प्रक्रिया में वह नेता यह भूल जाता है कि उसपर 'दलबदलू' होने का ठप्पा भी लग चुका है। राष्ट्रीय व क्षेत्रीय स्तर पर ऐसे तमाम स्वार्थी व मौक़ापरस्त नेता मिल जायेंगे जिन्हें आज वही पार्टियां दूध की मक्खी की तरह निकाल कर फेक चुकी हैं जिनका या तो मक़सद पूरा हो चुका है या अब उनकी वहाँ कोई ज़रुरत नहीं। वर्तमान चुनाव में भी ऐसे अनेक नेता दर दर भटकते दिखाई दे रहे हैं जिन्हें उनकी पार्टी ने इस बार प्रत्याशी नहीं बनाया। जबकि कल उन्होंने यही सोच कर दल बदल किया था कि नये दल में उनका राजनैतिक भविष्य सुरक्षित रहेगा। यहां मैं बिना नाम लिये एक उदाहरण देना चाहूंगा। एक व्यक्ति को कांग्रेस ने पहले जज फिर एक राज्य का मुख्यमंत्री बनाया। जबकि उसमें मुख्यमंत्री बनने का कोई गुण नहीं था सिवाए इसके कि उसके पिता बड़े राजनेता थे। बाद में वह सज्जन भाजपा में चले गये। आज चूँकि भाजपा वहां संघ पृष्ठभभूमि के नेताओं को पूरी तरह आगे ला चुकी है इसलिये उस राज्य में उसे आयातित नेताओं या दलबदलुओं अथवा विचार परिवर्तन करने वालों की फ़िलहाल कोई ख़ास ज़रुरत नहीं इसलिये भाजपा ने उन पूर्व मुख्यमंत्री महोदय को 'पन्ना प्रमुख' बना कर उनकी राजनैतिक हैसियत का अंदाज़ा करा दिया है।

दलबदलुओं ख़ासकर विपरीत विचारधाराओं में दलबदल करने वाले नेताओं के साथ एक और 'खेल' खेला जाता है। उन्हें सार्वजनिक रूप से उस विचारधारा के विरुद्ध मुखरित होकर बोलने को कहा जाता है जिसे वे छोड़ कर आये हैं। और मजबूरी वश चूँकि उसे अपने राजनैतिक भविष्य की चिंता होती है इसलिये वह पार्टी के मूल नेताओं से भी ज़्यादा मुखरित होकर बोलता है। यहाँ कुछ उदाहरण पेश हैं। जैसे हिमंत विस्वा सरमा। यह पहले कांग्रेस के विश्वस्त नेताओं में थे। परन्तु जब से भाजपा में गए हैं तब से इनकी कारगुज़ारियां,इनके वक्तव्य सब कुछ भाजपाई या संघ संस्कारित नेताओं से कहीं बढ़कर हैं। ऐसा इसलिये है कि इन्हें अपनी मुख्यमंत्री की कुर्सी बचाये रखने के लिये स्वयं को यह प्रमाणित करना है कि वे संघ व भाजपा की सभी उम्मीदों पर खरे उतरेंगे। इसी तरह शहज़ाद पूनेवाला जैसे दलबदलुओं को भाजपा, प्रवक्ता बनाकर कांग्रेस पर उसी के शस्त्र से प्रहार करवाती है। पिछले दिनों कांग्रेस के ही एकऔर प्रवक्ता गौरव बल्लभ भाजपा में शामिल हुये। कल तक उन्हें देश में कांग्रेस से बड़ी कोई भी धर्मनिरपेक्ष पार्टी नज़र नहीं आती थी। परन्तु पार्टी छोड़ते ही उन्होंने भाजपा की भाषा बोलते हुये कांग्रेस को सनातन विरोधी बताना शुरू कर दिया।

दरअसल इसमें ज़मीरफ़रोश नेताओं की ग़लती कम जबकि इन्हें समर्थन देने वाली आम जनता की ग़लती ज़्यादा है। विचार परिवर्तन यानी वैचारिक यू टर्न लेने के बावजूद तथा यह समझने के बावजूद कि अमुक नेता ने केवल पार्टी प्रत्याशी न बनाये जाने के लिये दलबदल किया है यानी वह नेता स्वार्थी है फिर भी जनता उसके पीछे लगी रहती है? लोगों को पता है कि अमुक नेता भ्रष्टाचारी है और केवल अपने आप को सुरक्षित रखने के लिये सत्ता की शरण में जा रहा है,फिर भी ऐसे नेता के समर्थक उसकी जयजयकार करते रहते हैं? जनता ने ख़ुद सोचना पड़ेगा कि जो नेता उस पार्टी के वफ़ादार न हुये जिसमें रहकर उन्हें मान, नाम, इज़्ज़त, शोहरत, पद रुतबा पहचान आदि वह सब कुछ मिला जिसकी वजह से ही कोई दूसरा दल आज उनकी 'क़ीमत' लगा रहा है, वह स्वार्थी नेता भला जनता, अपने मतदाताओं व अपने वादों के प्रति कैसे वफ़ादार हो सकता है ? बक़ौल मिर्ज़ा ग़ालिब - हमको उनसे वफ़ा की है उम्मीद जो नहीं जानते वफ़ा क्या है।

आर्थिकी

सतीश सिंह

लेखक आर्थिक मामलों के जानकार हैं।

निरंतर तेज गति से आगे बढ़ती भारतीय अर्थव्यवस्था

उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित महंगाई की दर मार्च महीने में घटकर 10 महीनों के निचले स्तर 4.85 प्रतिशत पर आ गई, जो फरवरी महीने में 5.09 प्रतिशत और जनवरी में 5.1 प्रतिशत रही थी। हालांकि, खाद्य पदार्थों की खुदरा महंगाई 0.39 प्रतिशत कम होकर 8.27 प्रतिशत के स्तर पर पहुँच गई। यह फरवरी महीने में 8.66 प्रतिशत रही थी। केंद्र सरकार ने आम चुनाव से पहले एलपीजी और पेट्रोल की कीमतों में कटौती की थी, जिसके कारण ईंधन एवं बिजली की कीमत में मार्च 2023 की तुलना में 3.24 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है।

खुदरा महंगाई बहुत ज्यादा चिंताजनक नहीं है, लेकिन यह अभी भी भारतीय रिजर्व बैंक के लक्ष्य 4 प्रतिशत से ऊपर है और इसी वजह से केंद्रीय बैंक ने विकास दर को स्थिर रखने के लिए ब्याज दरों में न तो बढ़ोतरी की है और न ही कटौती की है। साथ ही, द्विमासिक मौद्रिक नीति समीक्षाओं में लगातार 7वीं दफा रेपो दर को 6.5 प्रतिशत पर यथावत रखा है।

खाद्य महंगाई के ऊंचे स्तर पर रहने से आम लोगों को अभी भी राहत नहीं मिली है, क्योंकि खाद्य तेलों की कीमत में गिरावट का दौर मार्च में भी जारी है और मार्च 2023 के मुकाबले इसमें 11.72 प्रतिशत की नरमी आई है, लेकिन सब्जियों की कीमत में 28.34 प्रतिशत, दालों की कीमत में 17.71 प्रतिशत, मसालों की कीमत में 11.4 प्रतिशत, अनाजों की कीमत में 8.37 प्रतिशत, अंडों की कीमत में 10.33 प्रतिशत, मांस-मछलियों की कीमत में 6.36 प्रतिशत और दूध की कीमत में 3.38 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

कोरोना महामारी के शुरू होने के बाद से वैश्विक अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर धीमी पड़ गई है और कमोबेश सभी देश अभी भी महंगाई की समस्या से जूझ रहे हैं। हालांकि, मामले में भारत की स्थिति काफी बेहतर है। कुछ विकसित देशों में भी मंहगाई पहले से कम हुई है। अमेरिका में महंगाई के नरम रहने की संभावना की वजह से जून महीने में फेडरल रिजर्व बैंक नीतिगत ब्याज दरों में कटौती कर सकता है, जिससे निवेश के दूसरे विकल्पों में प्रतिफल कम हो जायेंगे। इसलिए, निवेश से अधिक प्रतिफल मिलने की आस में लोग सोने में निवेश कर रहे हैं, जिससे सोने की कीमत में तेजी बनी हुई है। भारत में 12 अप्रैल को सोने की 10 ग्राम की कीमत बढ़कर 75,100 रुपए और चांदी की कीमत बढ़कर 85,500 रुपए किलो के स्तर पर पहुँच गई।

फरवरी, 2024 में औद्योगिक उत्पादन वृद्धि दर सालाना आधार पर 5.7 प्रतिशत बढ़ा, जो 4 महीनों में सबसे अधिक है। हालांकि, औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) पर आधारित औद्योगिक उत्पादन फरवरी 2023 में 6 प्रतिशत बढ़ा था। आईआईपी का पिछला उच्चतम स्तर अक्टूबर, 2023 में 11.9 प्रतिशत दर्ज किया गया था, जो नवंबर में घटकर 2.5 प्रतिशत, दिसंबर में 4.2 प्रतिशत और जनवरी 2024 में 4.1 प्रतिशत के स्तर पर रहा था। वित्त वर्ष 2023-24 के अप्रैल से फरवरी महीने के दौरान, आईआईपी वृद्धि 5.9 प्रतिशत तक पहुंच गई, जो एक साल पहले 5.6 प्रतिशत रही थी। फरवरी महीने में खनन उत्पादन की वृद्धि दर बढ़कर 8 प्रतिशत हो गई, जो एक साल पहले की समान अवधि में 4.8 प्रतिशत रही थी। फरवरी 2024 के दौरान उपभोक्ता टिकाउ वस्तुओं के उत्पादन में 12.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जो फरवरी 2023 में 4.1 प्रतिशत रही थी। उल्लेखनीय है कि आईआईपी में वृद्धि आर्थिक गतिविधियों में तेजी आने का सूचक है।

निजी मौसम पूर्वानुमान एजेंसी स्काईमेट ने 9 अप्रैल को कहा कि भारत में इस साल मानसून के सामान्य रहने की संभावना है। भारत के मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के वैज्ञानिकों का भी मानना है कि इस वर्ष देश में उत्तर पश्चिम, पूर्व और पूर्वोत्तर के हिस्सों को छोड़कर अधिकांश हिस्सों में जून से सितंबर महीने के दौरान दक्षिण-पश्चिम मानसून अवधि में सामान्य से अधिक बारिश हो सकती है, क्योंकि अच्छे मानसून से संबंधित ला नीना अगस्त से सितंबर महीने तक सक्रिय रह सकता है। स्काईमेट के मुताबिक भी अल नीनो तेजी से ला नीना में बदल रहा है। गौरतलब है कि ला नीना से मानसून परिसंचरण मजबूत होता है।

स्काईमेट के अनुसार जून से सितंबर तक 4 महीनों के लिए 868.6 मिमी की लंबी अवधि के औसत (एलपीए) का 102 प्रतिशत रह सकता है। एलपीए के 96 प्रतिशत से 104 प्रतिशत के बीच रहने का अर्थ बारिश का सामान्य रहना है। स्काईमेट को दक्षिण, पश्चिम और उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में अच्छी बारिश की उम्मीद है। इसके अनुसार, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के मानसून वर्षा आधारित क्षेत्रों में पर्याप्त वर्षा होगी, जबकि बिहार, झारखंड, ओडिशा और पश्चिम बंगाल के पूर्वी राज्यों में जुलाई और अगस्त महीने के दौरान कम वर्षा होने का अनुमान है। पूर्वोत्तर भारत में भी मौसम के पूर्वार्ध के दौरान सामान्य से कम बारिश होने की संभावना है। साफ है अच्छे मानसून से विविध फसलों के उत्पादन में तेजी आयेगी और महंगाई में कमी। विश्व बैंक ने वित्त वर्ष 2023-24 में भारत के विकास दर के 7.5 प्रतिशत रहने का अनुमान जताया है, जबकि पहले विश्व बैंक ने इस अवधि में विकास दर के 6.3 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया था। वित्त वर्ष 2023-24 की दिसंबर तिमाही में जीडीपी दर के 8.4 प्रतिशत रहने के बाद विश्व बैंक ने भारत के विकास दर अनुमान में 1.2 प्रतिशत की बढ़ोतरी की है। विश्व बैंक के मुताबिक वित्त वर्ष 2024-25 में निवेश की धीमी गति रहने से विकास दर थोड़ी धीमी रहेगी। हालांकि, औद्योगिक उत्पादन व सेवा क्षेत्र मजबूत बने रहेंगे। रियल एस्टेट व निर्माण क्षेत्र में भी तेजी बनी रहेगी। मानसून के सामान्य से बेहतर रहने से महंगाई में भी गिरावट आने के आसार हैं। वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) में वृद्धि से राजकोषीय घाटे और सरकारी कर्ज में कमी आने की संभावना है। विश्व बैंक के मुताबिक भारत की मजबूत विकास दर की वजह से अगले 2 सालों तक दक्षिण एशिया में विकास की गति तेज बनी रहेगी।

वित्त वर्ष 2023-24 की अंतिम तिमाही का जीडीपी आंकड़ा जून महीने में जारी किया जायेगा, लेकिन फरवरी व मार्च महीने में सेवा व विनिर्माण क्षेत्र में तेजी को देखते हुए मार्च तिमाही में जीडीपी के 8 प्रतिशत से अधिक रहने का अनुमान जताया जा रहा है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने भी हाल ही में एक कार्यक्रम में अंतिम तिमाही में जीडीपी के 8 प्रतिशत से अधिक रहने अनुमान जताया था। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भी हाल ही में किये ट्वीट में कहा था कि वित्त वर्ष 2023-24 की तीसरी तिमाही में 8.4 प्रतिशत की मजबूत जीडीपी वृद्धि भारतीय अर्थव्यवस्था की शक्ति और क्षमता को प्रदर्शित करती है। इससे 140 करोड़ भारतीयों को बेहतर जीवन जीने और एक विकसित भारत बनाने में मदद मिलेगी।

पीएचडी चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (पीएचडीसीसीआई) ने 17 अप्रैल 2024 को कहा कि वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान भारत की जीडीपी वृद्धि दर 8.00 से 8.3 प्रतिशत के बीच रह सकती है। पीएचडीसीसीआई का यह भी कहना है कि अगले 23 सालों तक भारत का विकास दर औसतन 6.7 प्रतिशत रहेगा और 2047 तक भारतीय अर्थव्यवस्था 34.7 ट्रिलियन डॉलर की हो जायेगी। साथ ही, उस समय भारत में प्रति व्यक्ति आय 21,000 डॉलर की होगी।

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के मुताबिक विकास दर में तेजी लाने के लिए वैश्विक स्तर पर महंगाई और देशों द्वारा लिए जा ऋण को नियंत्रित करना होगा। आईएमएफ ने 2024 के दौरान वैश्विक अर्थव्यवस्था के 3.1 प्रतिशत की दर से आगे बढ़ने का अनुमान जताया है, जबकि 2025 में यह 3.2 प्रतिशत की दर से आगे बढ़ सकती है। आईएमएफ ने यह भी कहा है कि विकास दर को स्थिर रखने के लिए दुनिया के देशों के केंद्रीय बैंकों को सतर्कता बरतते हुए मौद्रिक नीति बनानी होगी, ताकि महंगाई और विकास के बीच संतुलन बना रहे।

भले ही वैश्विक स्तर पर विकास दर धीमी रहेगी, लेकिन भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर आगामी सालों में भी तेज बनी रहेगी। आईएमएफ ने 'विश्व आर्थिक आउटलुक रिपोर्ट' में कहा है कि वित्त वर्ष 2024 और वित्त वर्ष 2025 में भारत की विकास दर 6.5 प्रतिशत रह सकती है, जबकि मामले में चीन के विकास दर का वित्त वर्ष 2024 में 4.6 प्रतिशत और वित्त वर्ष 2025 में 4.1 प्रतिशत रहने का अनुमान जताया गया है। अमेरिका में वित्त वर्ष 2023 में विकास दर 2.5 प्रतिशत रहा था। आईएमएफ के अनुसार वित्त वर्ष 2024 में अमेरिका में वृद्धि दर 2.1 प्रतिशत और 2025 में 1.7 प्रतिशत रह सकती है। धीमी विकास दर रहने का मूल कारण अमेरिका की कड़ी आर्थिक नीति और चीन में कमजोर खपत व कमजोर निवेश है। इन दोनों देशों के अलावा कुछ अन्य विकसित देशों में भी विकास दर के आगामी सालों में धीमी रहने के आसार हैं। हालांकि, उभरती अर्थ व्यवस्थाओं में भारत सबसे तेज गति से आगे बढ़ने वाला देश बना रहेगा।

आंकड़ों से साफ है, सरकार की समीचीन नीतियों की वजह से भारत में विकास की गति काफी तेज है और मौजूदा स्थिति में आगामी सालों में भी भारत में विकास दर के तेज बने रहने की संभावना है।

संभावनाओं का जीवन चक्र

व्यंग्य

विजी श्रीवास्तव

लेखक व्यंग्यकार हैं।

चुनाव के इस प्यार भरे मौसम में जब बहुत सारे समाज कल्याण को आतुर सेवाराम, प्रायमरी और मिडिल तक स्कूली शिक्षा की डिग्री हासिल किये ज्ञानचंद, खजाने की चाभी खींसे बांधे गरीबदास, मुस्कुराहट भरी मजबूर विनम्रता का बोझ लादे सज्जन सिंह, सम्मानीय के 'स' का महात्याग कर माननीय बनने की संभावनाओं की तलाश कर रहे हैं तो मुझे लगा कि संभावनाओं के अस्तित्व से मैं भी दो चार कर लूं। वैसे तो संभावनाओं का जीवन चक्र निरन्तर गतिमान रहता है किन्तु बाजे-बाजे वखत संभावनाओं की सक्रियता पूरे जोर पर होती है। विशेषकर चुनावों के समय संभावनाओं का कोशिका विभाजन किसी के बस में नहीं रह पाता। संभावनाओं का जन्म होता है, मरण होता है और फिर से पुनर्जन्म होता है। पार्टी से जनम-जात रिश्ते, टिकट मिलने की संभावनाओं के मरते ही टूट जाते हैं। वहीं कोई लॉलीपाप ऑफर, मरे वृक्ष पर कोपलें फोड़ने सरीखा जनम ले लेता है। मल्टी विटामिन का डोज पाकर, नवजात संभावनाएं शीघ्र ही उठ खड़ी होती हैं। जो उठ नहीं पातीं उन्हें क्षीण संभावनाएं और सुदृढ़ता से खड़ी संभावनाओं को बलवति संभावनाएं कहते हैं।

आकार प्रकार में संभावनाएं नन्हीं, छोटी-मोटी, या विशाल हो सकती हैं। वजन में ये हल्की-फुल्की से भारी भरकम भी हो सकती हैं। संभावनाएं पहुँच से कितनी दूर हैं इसे नापने के लिए नजदीकी संभावना या दूरदराज संभावनाओं के पैमाने हैं। इन्हें देखने के लिए आई साइट का फर्क होता है। किसी को धुंधली संभावना नजर आती है तो किसी को साफ साफ दिखाई देती हैं। ऐसे में किसी को नई संभावनाएं हाथ लगती हैं तो किसी के हाथ लगी संभावना फिसल जाती हैं।

कई संभावनाओं का जवान होकर आपस में गुत्थम-गुत्था होना स्वाभाविक ही है। किन्तु कई लोग अच्छी भली संभावनाओं के साथ छेड़छाड़ करते हैं। कुछ की तो आदत ही अंधेरे में संभावनाएं टटोलने की होती है। संभावनाओं को जरूर उनकी यह हरकत नागवार गुजरती होगी। ऐसे में कई संभावनाएं रूठ कर दूर चली जाती हैं। आखिर संभावना में भी तो भावना निहित होती है।

कुछ महापुरूष सदैव संभावनाशील होते हैं। ऐसे लोगों की पूछ राजनीति में भी होती है और दफतरों में भी। ये उपस्थित संभावनाओं का लाभ उठाना जानते हैं। संभावनाएं न हों तो वे उसे खोज लाते हैं। लेकिन संभावनाओं के ऊंच-नीच से भरे संसार में कई बार युवा उत्साहियों द्वारा वरिष्ठों के समक्ष प्रस्तुत नई-नवेली संभावनाओं का दोहन भी किया जाता है। कई मनहूस वरिष्ठ अछूती संभावनाओं को नोंचकर कहीं का नहीं छोड़ते। मनहूसों की एक किस्म दूसरों की संभावनाओं को अपनी बताकर अपनी वरिष्ठ मनहूसियत का नाजायज फायदा लेती है।

यह देश अनगिनत संभावनाओं का देश है। ऐसा हम अक्सर सुनते रहे हैं। यहां जीने की भी तमाम संभवनाएं हैं और मरने के लिए भी कम नहीं। इसलिए जिसे जो संभावनाएं दिखाई देती हैं वो उन्हें अपना लेता है। संभावनाओं के इस जमघट का लाभ जो उठा लेता है, वो सच्चा नेता कहलाता है। किसानों के रोने की संभावना कब है, बेरोजगारों के उद्वेलित होने की, डॉक्टरों को पिटने की, मास्टर साहब को नंगा करने की, अपनी औलाद को नेता बनाने की, धन लक्ष्मी की पूजा करने की, दूसरे के वैभव को काला धन बतलाने की, गांधीवादी बनने की और गांधी की लाठी खींचकर दूसरे की कनपटी बजाने की, आंदोलन करने की और आंदोलन का तम्बू उखाड़ने की, पैर छुआने की और पैर छूने की, दूसरों की संभावनाओं पर गलत नजर रखने की, मुर्दा संभावनाओं को जिलाने और जिंदा संभावनाओं का गला दबाने की कब-कब। ऐसे संभावित नुस्खे जिसके पास हो, उसके पिताजी को भी पता होता है कि उसके सफल नेता बनने की पूरी संभावना है।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

प्रभात गोस्वामी

लेखक व्यंग्यकार हैं।

गुजरना दलबदल प्रकोष्ठ से !

एक पुराने और निष्ठावान नेताजी इनदिनों खासे परेशान हैं. पार्टी दफ्तर में एक आँख से टीवी देख रहे थे और दूसरी आँख अखबार में टिकाए हुए थे . इसबार जितनी बड़ी संख्या में दलबदल हुआ है ,ऐसा पहले कभी नहीं हुआ . चुनाव मैदान में भगदड़ मची है,भीड़ की भीड़ इधर-उधर हो रही है. नेताजी को दल-दल से कहीं अधिक चिंता दल बदल कर आने और जाने वालों की हो रही है . ऐसे हालात में आज नेताओं को जितना डर चुनाव से नहीं लग रहा ,उतना दलबदल की ब्रेकिंग न्यूज़ से लग रहा है.

कब,कौन कहाँ आ रहा या जा रहा है , किसके क्षेत्र में पैराशूट उम्मीदवार उतर रहे हैं ,किसका टिकट देकर भी छीना जा रहा है अथवा कहाँ पार्टियों के निष्ठावान नेताओं के हक़ कोई दूसरे हथियाने में लगे हैं , कहाँ नेता चुनाव क्षेत्र से भाग रहे हैं आदि. इस सब बातों का पता इन दिनों पार्टी दफ्तर से अधिक टीवी चैनलों की ब्रेकिंग न्यूज़ और अखबारों से लग रहा है !

आज पार्टी दफ्तर में किसी के पास बैठा नेता भी कमरे में लगे कैमरे से ज्यादा आलाकमान की शक की नज़रों में है. पता नहीं अगली ब्रेकिंग न्यूज़ में किसी दूसरे दल में चला जाए ! सब टोपियाँ और निष्ठाएं कपड़ों की मानिंद बदलने में ज़रा भी देर नहीं कर रहे !

बहरहाल, पार्टी के सबसे पुराने नेताजी ने बाढ़-सी गति से बहकर उनकी पार्टी के तालाब में गिरने वाले नेताओं के लिए कुछ मानदंड निर्धारित करने का सुझाव आलाकमान दिया. राजनीति का रंग भी पानी जैसा पारदर्शी होता है,जो उसमें घुल जाता है,वैसा ही दिखाई देने लगता है. उनके इस सुझाव पर पार्टी कार्यालय में उनकी अगुवाई में एक अलग दलबदल प्रकोष्ठ बनाने का निर्णय लिया गया. जिससे दलबदलुओं का सही आकलन करने में मदद भी मिल सकेगी.

दलबदल प्रकोष्ठ में आने वाले हर नए नेता को एक विशेष रूप से तैयार करवाए गए स्कैनर से गुजरना पड़ेगा. ताकि उसके शरीर के भीतर क्या-क्या है, कितना खाया-पीया है,किसके कितने राज़ हैं,पाचन तंत्र कितना मजबूत है; इसका पता चल सकेगा. उसके दिल का गहन परीक्षण किया जाएगा ताकि पुरानी पार्टी से प्रेम को जड़ सहित निकालकर; उसमें अपनी पार्टी का प्रेमरस भरा जा सके. दल बदलकर आने वाले नेताओं की ब्रेन मेपिंग भी की जाएगी. उनके दिमाग से पुरानी पार्टी की विचारधारा को पूरी तरह से निकालकर, ब्रेनवाश करते हुए नए विचार भरे जा सकें .

दलबदल प्रकोष्ठ में पार्टी विचारधारा के अनुसार वस्त्रों का एक काउंटर होगा. जिसमें निर्धारित वस्त्र,दुपट्टा, साड़ी, जैकेट, धोती, कुर्ता-पायजामा, शेरवानी,टोपी,जूते-चप्पल सब उपलब्ध होंगे. एक पुस्तकालय भी होगा जिससे पार्टी विचारधारा की पुस्तकें ली जा सकें. एक चश्माघर भी होगा ताकि दलबदलुओं को उसे पहनने के बाद नई पार्टी के आलाकमान के आलावा दूसरा कोई भी दिखाई न पड़े. एक बड़ी आलमारी भी होगी; जहाँ दलबदलू अपनी नैतिकता को रख सकेंगे. राजनीतिक निष्ठा की एक आलमारी भी तैयार की गई थी . पर उसकी प्रासंगिकता ख़त्म होने की वजह से उसे स्थायी रूप से बंद कर दिया गया है ! एक यूनिसेक्स सैलून भी होगा ताकि दल बदलकर आने वालों के चेहरों से पुरानी पार्टी के भाव का मेकअप उतारकर, नई पार्टी के श्रद्धा भाव पोते जा सकें. बॉडी लेंगुएज विशेषज्ञ की सेवाएं भी उपलब्ध होंगीं जो आपके चाल- चलन को बदलकर, पार्टी के अनुसार ढलवा सकेंगे .

दलबदल प्रकोष्ठ में आपके व्यक्तित्व में आमूलचूल परिवर्तन किया जाएगा ताकि जनता को आपकी छवि देखकर यह अंदाज़ा नहीं लगे कि आप इससे पहले फलां पार्टी में थे. दलबदलुओं से पार्टी में बीस साल तक बिना किसी लोभ लालच के बने रहने का बांड भी भरवाया जाएगा. बड़े जनाधार वाले नेताओं पर यह शर्त लागू नहीं होगी.

....अचानक तेज़ हवा के झोंके से नेताजी की नींद टूट गई . उन्होंने उठकर देखा कई नए चेहरों के तेज़ के बीच, पार्टी दफ्तर में उत्सव-सा माहौल है. नेताजी तुरंत दलबदलुओं के लिए नए मानदंड बनाने के विचार को किसी चुनावी वायदे की तरह से भूल गए. पार्टी की बात को ही मान,निष्कासन के दंड से बचने की जुगत में लग गए.

हनुमान जयंती पर विशेष

रमेश रंजन त्रिपाठी

बजरंगबली और सफलता के सूत्र

रामकथा में महत्ता, प्रतिष्ठा एवं श्रद्धा के दृष्टिकोण से भगवान राम के बाद उनके सेवक हनुमान जी का नाम आता है। इसका श्रेय पवनकुमार के सद्गुणों को जाता है जिन्हें अपनाकर हम भी जीवन में कठिनाइयों को मात दे सकते हैं। आजकल की भाषा में इन्हें सफलता के सूत्र कहा जा सकता है। बजरंगबली की ऐसी अनगिनत विशेषताओं में से कुछ को जानते हैं।

(एक) विद्याध्ययन में रुचि एवं उत्साह- माता अंजनी एवं पिता केसरी के अनुरोध पर हनुमान जी जैसे विलक्षण प्रतिभावान विद्यार्थी का गुरु बनने के लिए अलौकिक ज्ञान के भंडार सूर्यदेव सहमत हो गए परंतु उनकी एक दुविधा थी। वे बोले, हम बिना रुके तेज गति से निरंतर चलते रहते हैं। हनुमान पढ़ने के लिए मेरे पीठ पीछे, बगल में साथ-साथ अथवा मेरे सामने अपनी पीठ करके दौड़ेंगे। इन सभी अवस्थाओं में विद्या का दान उचित नहीं है। तब स्वयं पवनकुमार ने समाधान प्रस्तुत किया कि जिस गति से गुरुदेव चलेंगे, उसी गति से वे उनके सम्मुख हाथ जोड़कर उल्टे दौड़ते हुए शिक्षा ग्रहण करेंगे। बजरंगबली ने अपनी पढ़ाई पूरी करने के लिए अथक मेहनत की।

(दो) विद्यावान एवं वाकचातुर्य- सीता जी की खोज करते हुए श्रीराम जब ऋष्यमूक पर्वत के पास पहुँचे तो वहाँ अपने भाई किष्किन्धा के राजा बाली से प्राण बचाकर रह रहे सुग्रीव ने सहायक हनुमान को भेद लेने के लिए कहा कि कहीं बाली ने उसे मारने के लिए तो इन युवकों को नहीं भेजा है? श्रीमद् वाल्मीकीय रामायण के अनुसार हनुमान वेष बदलकर उनसे विद्वतापूर्ण वार्तालाप करते हैं जिससे श्रीराम अत्यंत प्रभावित होकर उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं। लंका में अशोक वाटिका उजाड़ने के कारण बजरंगबली को इंद्रजीत ब्रह्मपाश में बांधकर रावण की सभा में ले जाता है। वहाँ वे रावण को बेहद विवेकपूर्ण सलाह देते हैं।रावण वध की जानकारी सीता जी को देने का काम भी राघव द्वारा पवनपुत्र को सौंपा जाता है। उनकी वाकपटुता के कारण श्रीराम उन्हें चौदह वर्षों बाद अयोध्या लौटने से पहले भरत के पास अपने आगमन का समाचार सुनाने भेजते हैं।

(तीन) भरोसेमंद- अपनी अपार शक्ति, निश्छल सेवा, अटूट कर्मठता, सच्ची लगन और संपूर्ण समर्पण जैसी विशेषताओं के कारण हनुमान महाराज सुग्रीव के ही नहीं, साथियों और श्रीराम के सबसे प्रिय एवं विश्वसनीय थे। इसका प्रमाण तब मिलता है जब सुग्रीव असंख्य वानरों को जानकी जी की खोज में भेजते हैं, और राघव अनगिनत वानरों में से उन्हें अपनी अंगूठी देकर सीता जी के लिए संदेश देते हैं। श्रीराम को भरोसा था कि उनका कार्य हनुमान ही करेंगे।

(चार) विनम्रता- सीता जी की खोज में युवराज अंगद के नेतृत्व में दक्षिण दिशा में गए वानर दल को समुद्र किनारे गीधराज संपाति से पक्की सूचना मिलती है कि जानकी जी लंका की अशोक वाटिका में हैं। लंका पहुँचने में सबसे बड़ी चुनौती सागर को लांघना था। दल के सदस्य अपनी-अपनी सामर्थ्य का बखान करते हुए समुद्र पार कर लंका जाने और वहाँ से लौटने में शंका जाहिर करते हैं। तब बलवान और सक्षम होने के बावजूद विनम्र हनुमान जी शांत बने रहते हैं। जब ऋक्षराज जाम्बवान उन्हें अपनी शक्तियों की याद दिलाते हैं, तब वे लंका जाते हैं।

(पाँच) व्यर्थ समय न गँवाना- सीता जी की तलाश में लंका के लिए प्रस्थान करते समय हनुमान जी का रास्ता रोके सर्पों की माता सुरसा अपना मुँह फैलाकर उन्हें निगल जाने के लिए खड़ी मिलती है। बजरंगबली पहले उसके मुख से बड़ा आकार धारण कर लेते हैं परंतु सुरसा को और अधिक मुँह फैलाते देख वे समझ जाते हैं कि यहाँ शक्ति का प्रदर्शन समय की बर्बादी है। वे अति लघु रूप धारण कर सुरसा के मुख में प्रवेश कर तत्काल बाहर निकल आते हैं। उनकी सूझबूझ से सुरसा का उन्हें ग्रास बनाने का संकल्प पूरा हो जाता है। वे बुद्धि और बल की परीक्षा में पास होकर आगे बढ़ जाते हैं।

(छह) लक्ष्यपूर्ति तक चैन न लेना- लंका जाते हुए समुद्र पार करते समय पानी के भीतर रहनेवाला मैनाक पर्वत बाहर निकलकर हनुमान जी से विनती करता है कि वे उस पर थोड़ा रुककर विश्राम कर लें। तब बजरंगबली उसके अनुरोध को अस्वीकार करते हुए कहते हैं, 'रामकाज कीन्हें बिनु मोहि कहाँ विश्राम'।

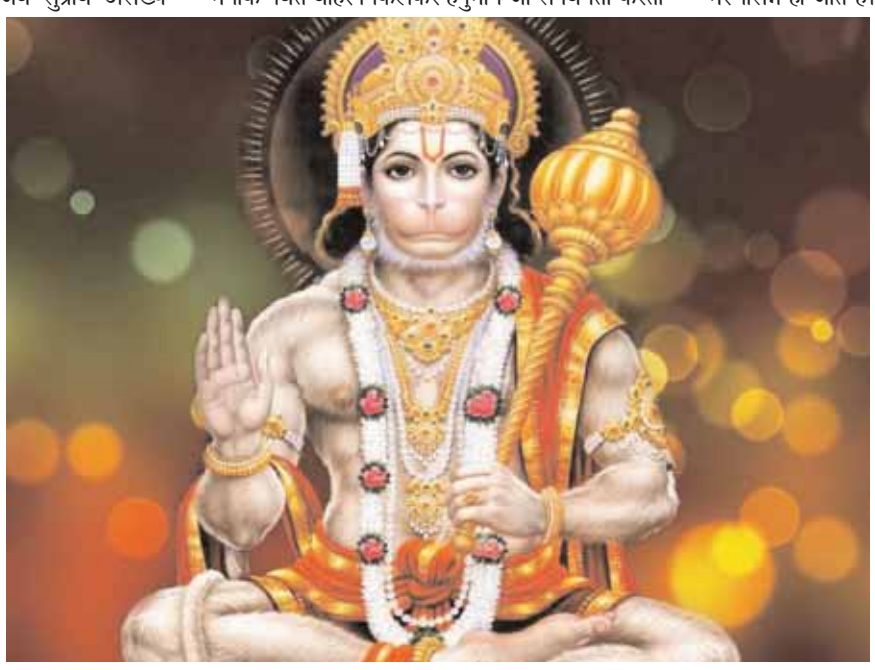

(सात) अवसर का सदुपयोग- हनुमान जी लंका में सीता जी का पता लगाने गए थे। जनकनंदिनी से मिलकर उन्हें श्रीराम का संदेश देने के पश्चात वे चुपचाप वापस लौट सकते थे। परंतु किष्किन्धा से लंबी दूरी और अतिविशाल समुद्र को पार करने जैसा दुर्गम काज कर लंका पहुँचे बजरंगबली अपनी यात्रा का भरपूर सदुपयोग कर बाग उजाड़ने के बहाने रावण के राजदरबार में पहुँच जाते हैं। वहाँ रावण को श्रीराम की महत्ता समझाने के बाद अपनी पूँछ में लगी आग की विपदा को अवसर में बदलकर पूरी लंका जला डालते हैं।

(आठ) टाइम मैनेजमेंट- राम-रावण युद्ध में इंद्रजीत द्वारा चलाई गई वीरघातनी शक्ति से लक्ष्मण मरणासन्न हो जाते हैं। विभीषण की सलाह पर हनुमान जी लंका के राजवैद्य सुषेण को घर सहित उठा लाते हैं। सुषेण बताते हैं कि सूर्योदय से पूर्व हिमालय के द्रोण पर्वत पर पाई जानेवाली संजीवनी बूटी से लक्ष्मण के प्राण बचाए जा सकते हैं। लंका से हिमालय पर्वत ढाई हजार किलोमीटर दूर है। रात ही रात में द्रोण पर्वत पर पहुँचकर समय पर औषधि को लेकर आना असंभव चुनौती थी। सभी की आशा बजरंगबली पर टिक जाती हैं। तब 'अतुलित बल के धाम' पवनपुत्र, पवन से भी तीव्र गति से चलकर पूरा द्रोण पर्वत ही उठा लाते हैं। समय पर चिकित्सा मिल जाने से लखनलाल के जीवन की रक्षा हो जाती है।

(नौ) प्रोटोकॉल का सम्मान- किष्किन्धा के राजा सुग्रीव अपने वादे के अनुसार सीता जी को वापस लाने में श्रीराम की सहायता करते हैं। हनुमान वानरराज सुग्रीव के सहायक हैं, इसलिए वे श्रीराम के महत्वपूर्ण कामों को पूरा करते हैं। लंका विजय के उपरांत श्रीराम पुष्पक विमान में अपने साथ विभीषण, सुग्रीव उनके खास सहायकों को लेकर अयोध्या लौटते हैं। राम राज्याभिषेक के उपरांत सभी अतिथि विदा लेते हैं तब हनुमान जी अपने लिए कुछ दिन और अयोध्या में रुककर भगवान की सेवा करने की अनुमति महाराज सुग्रीव से माँगते हैं। तब किष्किन्धा नरेश बजरंगबली को अपनी सहायता से मुक्त कर उन्हें श्रीराम की सेवा में रहने की स्वीकृति दे देते हैं। हनुमान जी यहाँ प्रोटोकॉल का पूरा सम्मान और पालन करते हैं।

(दस) तत्परता- गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'श्रीहनुमान चालीसा' में कहा है कि बजरंगबली विद्यावान, गुणी और अतिचतुर हैं, जो रामकाज अर्थात निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु सदैव आतुर यानी तत्पर रहते हैं। मुश्किल से मुश्किल कार्य सामने आ जाने पर भी महावीर के चेहरे पर थोड़ी सी भी शिकन या मन में नकारात्मक भाव उत्पन्न नहीं होता। वे दुर्गम काज भी आनंदपूर्वक पूरा करते हैं।

(ग्यारह) परिस्थिति अनुरूप ढल जाना- 'सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा, विकट रूप धरि लंक जरावा। भीम रूप धरि असुर संहारे, रामचंद्र जी के काज संवारे।' अपने स्वामी का कार्य भलीभाँति संपादित करने के लिए हनुमान जी आवश्यकतानुसार छोटे-बड़े बन जाते हैं। सीता जी के समक्ष छोटे रूप में और लंका दहन के लिए विकराल रूप धारण कर लेते हैं। राक्षसों का संहार करते समय वे विशाल स्वरूप में आ जाते हैं। हर काम में वे जरूरत के अनुसार पॉवर का उपयोग करते हैं।

(बारह) न कछू मोर प्रभुताई- हनुमान जी लंका में सीता जी से मिलकर आते हैं और उनका मार्मिक संदेश भगवान को सुनाते हैं। श्रीराम भावुक हो जाते हैं और उनकी प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि हे तात! रावण की अति दुर्गम एवं सुरक्षित लंका का दहन तुमने कैसे किया? मैं सदैव तुम्हारा ऋणी रहूँगा, तुम्हारे उपकार का बदला कभी नहीं चुका सकूँगा। यह सुनकर बजरंगबली अभिमान से भर उठने की बजाय विनम्र होकर अपने सभी महान कार्यों का श्रेय श्रीराम की कृपा को देते हुए उनके चरण पकड़ लेते हैं। हनुमान जी कभी किसी काम का श्रेय स्वयं नहीं लेते।

ऐसे ही अनेक सद्गुणों के कारण वे श्रीराम के सबसे प्रिय एवं जगतवंद्य हैं। इसीलिए, महर्षि वाल्मीकि के अनुसार भगवान राम अपने परमधाम को जाते हुए अयोध्यावासियों को साथ ले गए किंतु हनुमान जी को यहीं पृथ्वी पर चिरकाल तक भक्तों का कल्याण करने का आदेश दे गए।

शिक्षा व्यवस्था

प्रशांत विक्रम

लेखक एसजीटी विश्वविद्यालय गुरुग्राम के कृषि संकाय में निदेशक शोध हैं।

शिक्षित एवं प्रशिक्षित कृषि विशेषज्ञों की दुर्भाग्यपूर्ण दुर्दशा

उपरोक्त विषय पढ़ कर पाठकगण अवश्य चौंक जायेंगे क्योंकि अख़बारों में सदैव यही लिखा रहता है कि कृषि क्षेत्र में नौकरी ही नौकरी है। इसमें कतई संदेह नहीं है कि जितनी सम्भावना कृषि में है उतनी शायद ही किसी अन्य क्षेत्र में हो परन्तु थोक के भाव जो परास्नातक निकल रहे हैं वो खपेंगे कहां? यह सोचना किसका काम है? मैं आप सभी के सामने दो परिस्थिति रखता हूं- (1) ढेर सारे तथाकथित योग्य विशेषज्ञ तैयार कर लीजिये और फिर उनकी दौड़ आयोजित कराइये अथवा (2) अपनी समस्त ऊर्जा केवल उतने ही विशेषज्ञ तैयार करने में लगाएं जितने की आवश्यकता हो।

हालत यह हो गए हैं कि, निजी क्षेत्र के संस्थानों में अनुभवी और ज्ञानी विशेषज्ञों को पैसे वाले ढंग से तौल रहे हैं। बच्चे डिग्रियां लेकर मारे मारे फिर रहे हैं। कुकुरमुत्तों की भांति कालेज और विश्वविद्यालय खोले जा रहे, भेड़-बकरियों की तरह स्नातक-परास्नातक निकल रहे। वे सीख क्या रहे, भगवान जाने। मैंने तो उत्तर प्रदेश में कुछेक निजी कृषि महाविद्यालय ऐसे देखे हैं जहां छात्र केवल परीक्षा देने ही जाते हैं और मास्टर की क्या मजाल जो उन्हें फेल कर दे! पाठकों से अनुरोध है कि मेरी बात पर शक है तो तो ग्रामीण इलाकों में स्वयं जा कर अध्ययन कर लें।

कृषि कॉलेज का एक और लाभ है जिसे जानकर आपको हैरानी होगी। कृषि महाविद्यालय चलाने के लिए अच्छी खासी जमीन की आवश्यकता होती है जिसके कारन धनपशु लक्ष्मी-माता को धरती-माता में परिवर्तित करते रहते हैं। यदि वे गुणवत्तापरक शिक्षा दें और आवश्यकतानुसार डिग्रियां दें तो ये एक प्रकार से देश सेवा ही होगी। इन डिग्रियों की मान्यता लिए उत्तरदायी संस्थाएं मुख्यतः विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में विद्वानों और विशेषज्ञों की कमी नहीं है और यह परिषद अपना पूरा प्रयास करता भी है गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए जो कि एक सराहनीय प्रयास है। इस परिषद में खासियत यह है कि आपको कट्टर किसान-भक्त होना ही होगा क्यूंकि नीचे से ऊपर तक हर व्यक्ति एक दूसरे के लिए उत्तरदायी है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग में भी विद्वानों की कोई कमी नहीं है। फिर भी कहीं तो कुछ तो गड़बड़ है जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

इस विषय का दूसरा पहलु भी है। यदि आप अच्छे कृषि विशेषज्ञ खोजने लगें तो कभी कभी मिलते भी नहीं हैं लोग। हमें याद है हमारे सस्य विज्ञान के प्रोफेसर कक्षा में नहीं बल्कि खेतों की मेढ़ और सड़क कि पगडंडियों पर खरपतवारों की जानकारी देते थे। इसी तरह फूल वाले फुलवारी में नाना प्रकार के फूल दिखा दिखा कर पढ़ाते थे, उनकी एक आंख कुछ दबी हुई थी, तो हम सब उन्हें पीठ पीछे 'काना इंडिका' कहते थे। कहने का तातपर्य यह कि हंसी मजाक करते हुए हम बहुत कुछ सीख लेते थे। उद्यान की क्लास के लिए दो किलोमीटर चल कर बगीचे में जाना होता था और वानिकी के लिए तो चार से पांच किलोमीटर। उस पढाई में आनंद था, अनावश्यक बोझ नहीं था। आज भी कहीं कहीं लोग ऐसे ही पढ़ाते हैं लेकिन जिन कृषि कालेजों में विषयों से सम्बंधित आधारभूत संरचना नहीं हो, वहां गुणवत्तापरक कृषि शिक्षा असंभव है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने कुछ प्रयास अवश्य किये हैं इस दिशा में परन्तु ढील भी छोड़ राखी है। थोड़ी सी ढील बड़ा नुकसान कर रही है। इससे अधिक बोलना मेरे लिए अहितकर हो सकता है, सो समझने वाले कम में ज़्यादा समझ लें।

एक और महत्वपूर्ण आयाम है कृषि शिक्षा का और भारतीय कृषि व्यवस्था का जिसे जानना आमजन के लिए आवश्यक है। कृषि हो या कृषि शिक्षा इसमें किताबी ज्ञान से ज़्यादा जरुरी है सामान्य बुद्धि, जमीन पर काम करने का अनुभव और किसान-किसानी के प्रति लगाव। कृषि एक भावनात्मक विषय है- प्रयोगात्मक विषय है। इसमें आप एसी क्लासरूम में प्रोजेक्टर लगा कर अच्छी स्लाइड से पढ़ा कर गुणवत्ता सुनिश्चित नहीं कर सकते। कृषि शिक्षा देने से अधिक महत्वपूर्ण है भारतीय कृषि के चरित्र को समझना, बिना समझे इसे समझाएंगे कैसे? खेती किसानी में बड़े स्तर पर परिवर्तन हो रहा है जिसे बारीकी से समझने की आवश्यकता है। एक ओर जहाँ युवा किसानी छोड़ नौकरी के लिए भाग रहे हैं वहीं कुछ किसान नई फसलों को ऊगा कर अच्छा लाभ कमा रहे हैं। उदाहरण के तौर पर राजस्थान के मेवाड़ मारवाड़, मध्यप्रदेश के नीमच रतलाम मंदसौर आदि क्षेत्रों में किसान 'बोलीवियाई पौधे - किनवा' की खेती कर मोटा लाभ कमा रहे हैं। ऐसे ही देश के विभिन्न भागों में नाना प्रकार के प्रयोग खेती को लाभप्रद बनाने के लिए किये जा रहे हैं। कृषि की शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों के लिए यह अति आवश्यक है कि खेती में हो रहे बदलावों से भिज्ञ रहें। एक बार पुनः दोहराऊंगा कि कृषि ज्ञान किताबों से नहीं - केवल लैब में प्रयोगों से भी नहीं बल्कि किसानों के साथ काम करने से ही आता है। अंग्रेजी में एक कहावत है जो अत्यंत प्रासंगिक है- बुट्स ऑन ग्राउंड।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, विश्वविद्यालयों, कालेजों सहित नीति नियंताओं और शिक्षाविदों से करबद्ध निवेदन है कि कृषि शिक्षा के कुकुरमुत्तीकरण पर लगाम लगाने के लिए और कृषि शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए आगे आएं। कृषि शिक्षा का सीधा सम्बन्ध 'किसानों की आय' और 'भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था' से है। इसे अनदेखा करना और हलके में लेना कदापि उचित नहीं होगा। शिक्षित एवं प्रशिक्षित कृषि विशेषज्ञों की दुर्दशा दुर्भाग्य की द्योतक है। यदि कृषि क्षेत्र और कृषि शिक्षा की अनदेखी ऐसे ही होती रही तो विश्वास रखिये भविष्य में हमारे पास धन तो होगा परन्तु धान्य ना होगा। विकसित भारत के लिए धन - धान्य दोनों चाहिए इसके लिए गुणवत्तापरक कृषि शिक्षा का विशेष महत्व है।

चुनावी देश में प्रक्रिया सुधार की उम्मीद

राय

नेमीचंद पाटीदार

हमारा देश दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक और विकासशील देश है। हमारे देश की चुनावी प्रक्रिया व्यापक है। यहां चुनाव कई स्तर पर होते जैसे कि त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव, नगरीय निकाय चुनाव, कृषि मंडी, नहर, विधानसभा और लोकसभा के चुनाव।

यहां सभी चुनाव एक समय न होकर अलग-अलग समय पर करवाए जाते हैं। यही कारण है कि अमूमन पांच साल में चुनाव होने की व्यवस्था के बाद भी हर साल किसी न किसी राज्य, पंचायत या निगम के चुनाव होते रहते हैं। इन चुनावों में पर मोटी रकम खर्च होती है साथ ही मानव संसाधन भी व्यय होता है। आचार संहिता के कारण विकास के कार्य प्रभावित होते हैं।

कुछ मामले ऐसे भी होते हैं जब एक नेता दो सीट से चुनाव लड़ता है। विधायक महापौर या सांसद का चुनाव लड़ता है। हार या जीत के बाद वह एक सीट छोड़ देता है जिसके बाद फिर उपचुनाव होते हैं। ऐसे उपचुनाव में सरकार पर फिर खर्च का बोझ उठाना पड़ता है। विधानसभा या लोकसभा भंग होने पर भी देश को चुनावी प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है।

यही कारण है कि देश में चुनावी प्रक्रिया में

सुधार की आवश्यकता महसूस करते हुए एक देश एक चुनाव पर विमर्श हो रहा है। हम उम्मीद करते हैं कि चुनाव प्रक्रिया में कुछ ऐसा सुधार किया जाए जिससे यह प्रणाली सरल हो और देश पर पड़ने वाले बेवजह के खर्च से मुक्ति मिले।

मुद्दा

भारत डोगरा

पानी बचाने की प्रेरणा

देश के अनेक क्षेत्रों में जल-संरक्षण के अनेक उपाय स्थानीय स्थिति के अनुकूल वहां के समुदायों ने विकसित किए हैं। राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्रों में वर्षा के पानी को संग्रहण करने के अनेक तौर-तरीके अपनाए जा रहे हैं। वहां से थोड़ा आगे जाएं तो गुजरात के कच्छ क्षेत्र में भी ऐसे परंपरागत सूझ-बूझ के अनेक तरीकों को देखा जा सकता है। व्यक्तिगत या गांव-समुदाय की भूमि में विशेष रूप से जलग्रहण क्षेत्र को तैयार कर उसके पानी को एक 'कुण्डी' नामक कुएं में एकत्र करने के कार्य को राजस्थान के अनेक क्षेत्रों में देखा जा सकता है।

केवल गांव के अपने उपयोग के लिए ही नहीं, कहीं-कहीं तो यात्रियों के लिए ऐसे विशेष संग्रहण की व्यवस्था है। ध्यान इस बात पर दिया जाता है कि अधिकतम पानी कुएं में पहुंच सके। जलग्रहण क्षेत्र की लिपाई-पुताई व उसका ढ़लान बनाने में इसका विशेष ध्यान रखा जाता है। तालाब के सीपेज का पानी बेकार न जाए अतः इस पानी को एकत्र करने के लिए 'कुंई' नामक विधि का प्रचलन है।

राजस्थान के किले तो वैसे भी विख्यात हैं, पर इनका जल-प्रबंध विशेष रूप से देखने योग्य है। चितौड़ के किले में हाथीकुंड के सीपेज से गोमुख का झरना बनता है और इस झरने से फिर चितौड़ के किले का मुख्य जलाशय बनता है। किलों के अलावा सामान्य आवासों, आंगन या बरामदों में कुंड बनाकर, छतों पर उचित व्यवस्था कर वर्षा के जलसंग्रहण को कई स्थानों पर देखा जा सकता है। तरह-तरह के छोटे-बड़े तालाबों व बावड़ियों की दृष्टि से यह राज्य समृद्ध है। राजस्थान के कुछ भागों में बहुत कम वर्षा होती है, पर वहां भी परंपरागत उपायों से पर्याप्त पेयजल की व्यवस्था कर लोग काफी हद तक आत्मनिर्भर बने हुए थे।

उत्तर-पूर्व के राज्यों में परंपरागत सिंचाई के अनेक श्रेष्ठ उदाहरण मिल सकते हैं। बांसों की पाईप लाईन के माध्यम से काफी दूर के पौधों तक ठीक उतना पानी पंहुचाना जितना पौधों के लिए जरूरी है, मेघालय की विशेष उपलब्धि है। वर्ष 1956 में आन्ध्रप्रदेश में सिंचाई के लिए उपयोगी 5,8518 तालाब थे जिनसे लगभग दस लाख हैक्टेयर की सिंचाई हो रही थी, यानि कुल सिंचित क्षेत्र के 40 प्रतिशत की सिंचाई तालाबों से हो रही थी। इसमें कुछ कमी अवश्य आई है, पर इसका महत्व बना हुआ है। इनमें से अनेक तालाब एक-दूसरे से जुड़े हैं व उनमें पानी का पूरा-पूरा उपयोग होता है, वह व्यर्थ नहीं बहता। तमिलनाडु के कुल सिंचित क्षेत्र में से लगभग एक तिहाई की सिंचाई आज भी 'एरी' नामक प्राचीन तालाबों से हो रही है।

बाढ़ व सूखे का दोहरा संकट देश की बहुत बड़ी

समस्या है। परंपरागत जल- संग्रहण से सूखे के संकट से तो राहत मिलेगी ही, साथ ही बाढ़ की समस्या को भी कम करने में सहायता मिलेगी। जब बहुत से जल को नदी की ओर वेगपूर्वक बढ़ने देने के स्थान पर खेती व अन्य उपयोगों के लिए तरह-तरह से मोड़ा व संजोया जाता है, तो इससे बाढ़ की संभावना कम होती है।

बिहार के गया जिले में जब तक 'आहार' व 'पाईन' व्यवस्था सशक्त रहीं, इसने बाढ़ व सूखे दोनों को रोकने में सहायता दी। राजस्थान में भयानक सूखे के दिनों में देखा गया कि जहां आधुनिक पेयजल स्त्रोतों के आने के बाद भी परंपरागत संग्रहण की उपेक्षा नहीं की गई, वहां लोगों की पेयजल के मामले में आत्मनिर्भरता बनी हुई थी। जहां लोगों ने परंपरागत संग्रहण की उपेक्षा की, वहां के लोग पानी को तरस रहे थे।

परंपरागत तकनीक सस्ते हैं, स्थानीय लोगों के हाथ में हैं तथा आधुनिक तरीकों के दुष्परिणामों से बचे हुए हैं। ऐसा नहीं है कि उनमें कोई समस्यायें नहीं हैं, लेकिन उन्हें कम या दूर करने के प्रयास होने चाहिए। स्थानीय परिस्थितियों के आधार पर पानी के संबंध में लोगों की जो सोच है वह कई पीढ़ियों के ज्ञान और सोच का निचोड़ है। उससे हमें लाभ जरूर उठाना चाहिए व उनकी उपेक्षा कभी नहीं करनी चाहिए।

परंपरागत जल-संग्रहण की प्रणालियां एक सामूहिक प्रयास हैं। बुंदेलखंड व नर्मदा क्षेत्र की 'हवेली पद्धति' को लें या बिहार की 'आहार,' 'पाईन' पद्धति को, यह किसानों के सामूहिक प्रयास या तालमेल के बिना संभव नहीं है। तालाब बनाने में, उसके रख-रखाव में, उसकी सफाई में पूरे गांव का योगदान होता है। यहां तक कि घुमंतू लोगों ने भी अपने सामूहिक प्रयासों से जल-संरक्षण व संग्रहण में उल्लेखनीय योगदान दिया है। कच्छ की 'वीरदी पद्धति' 'मालधारी समुदाय' की देन है, जबकि उदयपुर में आज तक जल का सबसे महत्वपूर्ण स्त्रोत बनी हुई 'पिचौला झील' बंजारों ने बनाई थी। बहुत से तालाब जो राजाओं ने बनवाए थे वे उनके अपने या अपने घराने के उपयोग के लिए थे। जनसाधारण के उपयोग के अधिकांश जलस्त्रोत समुदाय ने स्वयं बनाए।

परंपरागत स्त्रोत व तकनीक को महत्व देने का यह अर्थ नहीं है कि विज्ञान की नई उपलब्धियों के आधार पर उसमें बदलाव या सुधार नहीं होने चाहिए, लेकिन ध्यान देने योग्य बात है कि परंपरागत तकनीक और स्थानीय स्थिति की मूल समझ के विरूद्ध कोई बदलाव नहीं करना चाहिए। आधुनिक और अधिक सुविधापूर्ण तकनीक आने से प्रायः परंपरागत तकनीक की उपेक्षा होती है। अब नए साधन भी उपलब्ध हो रहे हैं तो गांव समुदाय को विशेष ध्यान रखना होगा कि परंपरागत स्त्रोतों की उपेक्षा न हो। भूजल स्तर नीचे न गिरे, इसका निरंतर ध्यान रखना होगा। इस बारे में साझी समझ बनानी होगी कि जल के अत्यधिक दोहन से पूरे गांव के लिए जल-संकट उत्पन्न न हो।

जल वितरण और उपलब्धि में जाति के आधार पर किसी तरह का भेदभाव न हो, इसका विशेष ध्यान रखना ही होगा। जलस्त्रोतों को और उनके जलग्रहण क्षेत्र को साफ रखने की पहले बहुत अच्छी परंपरा थी। इस अनुशासन का प्रसार गांव के परिवारों में और स्कूल की शिक्षा के माध्यम से भी होना चाहिए। इस तरह के सांस्कृतिक पर्व आयोजित हो सकते हैं जिनसे तालाबों आदि को साफ करने के श्रमदान को जोड़ा जाए। अनेक शहरों में भी परंपरागत जल व्यवस्था को नया जीवन देकर जलसंकट का समाधान काफी हद तक किया जा सकता है। (सप्रेस)

बाल कलाकारों ने नाटक और ढोलक वादन के माध्यम से मतदाताओं को किया जागरूक

मतदाताओं को वोट की अहमियत बताते हुए मतदान की अपील की

बैतूल। माझी नगर, पीपल चौक एवं हमलापुर चौक में बाल कलाकारों ने नाटक और ढोलक वादन के माध्यम से मतदाताओं को जागरूक करने का अद्भुत प्रयास किया। उन्होंने एक नाटक का मंचन किया, जिसमें सामाजिक संदेश और निर्वाचकों की जिम्मेदारियों पर ध्यान दिया गया। नाटक में ढोलक वादन के माध्यम से रोचक कहानी को प्रस्तुत किया गया, जिससे मतदाताओं को समाज के मुद्दों पर गहरा विचार करने का अवसर मिला। बाल कलाकारों ने अपने प्रयासों से लोगों को नेतृत्व की महत्वता और मतदान करने का महत्व समझाया। इस नाटक के माध्यम से, बाल कलाकारों ने लोगों को मतदान की ओर प्रेरित किया। उल्लेखनीय है कि जिला निर्वाचन अधिकारी कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी, स्वीप जिला नोडल अधिकारी अक्षत जैन के मार्गदर्शन में वेद विज्ञान महाविद्यापीठ श्री श्री रवि शंकर द्वारा संचालित श्री श्री ज्ञान मंदिर विद्यालय हमलापुर की संस्था प्रमुख जयश्री शाह के नेतृत्व में स्वीप जिला यूथ आइकॉन अभिलाषा बाथरी की प्रेरणा से बाल कलाकार मनीष धुर्वे, हनुमंत कुमरे, दिशा उइके, वंदना, वैष्णवी, संजना सारिका हरने, सारिका लालदेव, करीना, पायल, शेख आकिब, श्वेता, तेहरीन आदि बाल कलाकारों ने ढोलक वादन अभिदीप द्वारा मतदाता जागरूकता नाटक का मंचन किया। 7 मई 2024 को होने वाले लोकसभा चुनाव में मतदाताओं को वोट की अहमियत बताते हुए मतदान करने की अपील की गई।

महिलाओं, दिव्यांगों के लिए रहेगी सुविधा-बाल कलाकारों ने बताया कि गर्भवती महिला, दिव्यांग नागरिकों को मतदान देने के लिए लंबी लाइन में खड़े नहीं होना पड़ेगा। मतदान केंद्र पर मतदाता किसी भी प्रकार की असुविधा महसूस नही करेंगे। राष्ट्र हित में सभी वोट देने अवश्य जाएं। माझी नगर के निवासी नरेश मेहरा ने कहा कि बच्चों ने नाटक बहुत मनोरंजन तरीके से प्रस्तुत कर संदेश दिया है कि सारे काम छोड़ के 7 मई को मतदान करने अवश्य जाए।

उंगली पर लगी स्याही सिर्फ निशान नहीं हमारी शान-संस्था प्रमुख ने कहा कि उंगली पर लगी स्याही सिर्फ निशान नहीं हमारी शान है, देश की पहचान है। लोकतंत्र की जान है हमारे विद्यालय के नन्हे, मुन्ने कलाकार सबसे मतदान करने की अपील कर रहे हैं। जिससे मतदान प्रतिशत अवश्य बढ़ेगा। बच्चे लोकतंत्र की गरिमा और वोट की प्रतिष्ठा इस उम्र से समझ रहे हैं। स्वीप यूथ आइकॉन ने कहा कि बाल कलाकारों द्वारा किया गया यह अनूठा स्वीप नाटक मतदाता जागरूकता के लिए एक प्रभावी और सराहनीय प्रयास है। यह लोगों को मतदान के महत्व के बारे में जागरूक करने में मदद करेगा और पूर्ण मतदान को बढ़ावा देगा। बाल कलाकारों के इस साहसिक कदम की सराहना की जानी चाहिए।

ऑब्जर्वर ने मतदान कर्मियों के रेण्डमाईजेशन की समीक्षा की

बैतूल। लोक सभा निर्वाचन कार्य से संबद्ध बैतूल संसदीय क्षेत्र की 8 विधानसभा क्षेत्र के 1581 मतदान केन्द्रों के लिए मतदान कर्मियों का रेण्डमाईजेशन किया गया। रेण्डमाईजेशन के बाद मतदान दलों का गठन कर उन्हें विधानसभा आवंटित की गई। निर्वाचन कार्य के लिए बैतूल संसदीय क्षेत्र के सामान्य ऑब्जर्वर प्रदीप ठाकुर ने कलेक्टोरेट के एनआईसी सेंटर में सोमवार को आयोजित रेण्डमाईजेशन की विधानसभा वार ऑनलाइन प्रक्रिया की समीक्षा की। एनआईसी हेड रचना श्रीवास्तव ने रेण्डमाईजेशन प्रक्रिया पर बिंदुवार अनुमोदन मिलने पर लॉक किया गया। इस अवसर पर सामान्य ऑब्जर्वर प्रदीप कुमार ठाकुर, कलेक्टर

एवं जिला निर्वाचन अधिकारी नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी, नोडल अधिकारी एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी अक्षत जैन, सहायक कलेक्टर ऐश्वर्य वर्मा, हरदा, हरसूद एवं टिमरनी के एसडीएम भी उपस्थित थे।

उल्लेखनीय है कि संसदीय क्षेत्र बैतूल के अंतर्गत विधानसभा क्षेत्र मुलताई, आमला, बैतूल, घोड़ाडोंगरी, हरदा और हरसूद सहित 8 विधानसभा क्षेत्र में 18 लाख 86 हजार 155 मतदाताओं के लिए 7 मई को मतदान किया जाना है।इनमें बैतूल जिले में 33309 युवा मतदाता, 85+ के 6340 और 12 हजार 829 दिव्यांग या पीडब्ल्यूडी मतदाता शामिल होंगे। इसी प्रकार टिमरनी, हरदा और हरसूद की 51 हजार 816 युवा मतदाता, 85+ के 9 हजार 729 मतदाता एवं दिव्यांग श्रेणी के 19 हजार 41 मतदाता शामिल होंगे।

चोर मस्त और बैतूल बाजार थाना प्रभारी व्यस्त

बैतूल। बैतूलबाजार थाना प्रभारी मेडम इतनी व्यस्त रहती है कि ऐसा लगता है कि सारे जिलों के थानों का काम बैतूलबाजार थाना में ही हो रहा होगा। जब भी थाना प्रभारी को किसी अपराधिक घटनाओं के संबंध में जानकारी के लिए फोन लगाओ तो मेडम हमेशा व्यस्त होने का हवाला देकर जानकारी देने से परहेज करती है। बैतूलबाजार क्षेत्र में इन दिनों

चोर मस्त और थाना प्रभारी व्यस्त है। थाना क्षेत्र में कई अपराधिक घटनाएं हो चुकी है, लेकिन कोई सुराग नहीं लग पाया है। इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि पुलिस अपराधों को लेकर कितनी गंभीर है। शनिवार की रात को बैतूलबाजार क्षेत्र की एक दुकान में चोरी हो जाने की जानकारी सामने आई। जब बैतूलबाजार थाना प्रभारी बबिता धुर्वे को चोरी की घटना के संबंध में पूछताछ के लिए कॉल किया तो उन्होंने जानकारी देने से साफ इंकार कर दिया और कहा है कि अभी मैं जानकारी नहीं दे सकती हूं। थाना प्रभारी ने कहा कि मैंने फोन इसलिए उठाया कि कोई ब?ी घटना या दुर्घटना हुई होगी। चोरी के संबंध में मैं अभी कुछ भी नहीं बता पाउंगी। थाना प्रभारी के इसी रवैये से पता चलता है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही अपराधिक घटनाओं में पर्दा डालने की कोशिश कर रही है। इस संबंध में कई बार पुलिस अधीक्षक निश्चल झारिया को भी जानकारी दी गई, लेकिन एसपी ने भी अभी बैतूलबाजार थाना प्रभारी के खिलाफ कोई एक्शन नहीं लिया है। बैतूलबाजार थाना प्रभारी की ढुलमुल कार्यप्रणाली से क्षेत्र के लोग भी परेशान है।

इनका कहना-

मैं चोरी की जानकारी नहीं दे पाउंगी। यह कहना थाना प्रभारी के लिए उचित नहीं है। जब कोई घटना हुई तो पुलिस की जवाबदारी है कि उसकी जानकारी मीडिया को उपलब्ध कराए। मैं इस संबंध में थाना प्रभारी से चर्चा करूंगा।

निश्चल झारिया, एसपी, बैतूल

स्वर्ण रथ पर आज नगर भ्रमण पर निकलेंगे श्री मेहंदीपुर बालाजी

अयोध्या के रामलला, बाहुबली हनुमान जी यात्रा में रहेंगे आकर्षण का केंद्र

बैतूल के भारत बैंड, विजय धमाल बैंड, बालाजी डीजे मचायेंगे धमाल

बैतूल। श्री मेहंदीपुर बालाजी भक्त मंडल समिति बैतूल द्वारा श्री हनुमान जन्मोत्सव के पावन पर्व पर आज 23 अप्रैल को सायं 5 बजे कोठी बाजार स्थित श्री हनुमान मंदिर न्यू बैतूल स्कूल ग्राउंड के सामने से मेहंदीपुर बालाजी महाराज नगर भ्रमण पर निकलेंगे। श्री घाटा मेहंदीपुर बालाजी महाराज का स्वर्ण आभा वाला महाभारत कालीन रथ बन चुका है, जिसे मुम्बई और बैतूल के कलाकारों द्वारा तैयार किया गया है। रथ में विशेष नक्काशी तथा रंग रोगन का कार्य किया गया है। समिति द्वारा शोभायात्रा की सभी तैयारियां पूर्ण कर ली गई है। वहीं भक्तों की सुविधा को देखते हुए श्री मेहंदीपुर बालाजी के रथ के रस्सों की लंबाई दो सौ फिट की गई है। बालाजी के रथ को महिला एवं पुरूष अलग-अलग रस्सों से खीचेंगे। यात्रा प्रतिवर्षानुसार श्री हनुमान मंदिर न्यू बैतूल स्कूल ग्राउंड स्कूल से निकलकर गंज के बड़ी माता मंदिर पर समाप्त होगी।

अयोध्या के रामलला, बाहुबली हनुमानजी बढ़ाएंगे रथयात्रा की शोभा-समिति के निहार दीक्षित ने बताया कि इस बार रथयात्रा में अयोध्या के नवनिर्मित श्री राम मंदिर में विराजित रामलला की रामनवमीं में श्रृंगार वाली मूर्ति की प्रतिकृति रथयात्रा की शोभा बढ़ायेगी, वहीं एक बड़े वाहन पर बाहुबली हनुमान जी अपनी वानर सेना के साथ रहेंगे। समिति के हरीश गावंड़े ने बताया कि श्री घाटा मेहंदीपुर बालाजी की रथ यात्रा में समिति द्वारा रथ यात्रा में बालाजी के भजनों की विशेष प्रस्तुती देने के लिए बैतूल के प्रसिद्ध न्यू विजय बैंड तथा न्यू भारत बैंड को लगवाया गया है। जिसमें बैतूल तथा नागपुर के कलाकार अपनी प्रस्तुती देंगे, वहीं विशेष लाइटिंग की व्यवस्था की गई हैं और बालाजी डीजे भी अपनी विशेष प्रस्तुती देंगे।

2 क्विंटल बूंदी के प्रसाद का लगेगा भोग, बंटेगी महाप्रसादी-श्री मेंहदीपुर बालाजी हनुमान जी के बाल रूप में विराजित है जिस कारण हनुमान जी महाराज को लड्डू का भोग अतिप्रिय हैं, जिस कारण श्री मेंहदीपुर बालाजी दौसा राजस्थान के मंदिर में बूंदी का प्रसाद चढ़ाया जाता है। इस वर्ष समिति द्वारा 2 क्विंटल बूंदी का प्रसाद, 11 प्रकार के मीठे लड्डू, हलवा का महा भोग चढ़ाया जायेगा तथा 101 कचौड़ी का भोग भी बालाजी महाराज को अर्पित किया जाएगा जो यात्रा मार्ग पर भक्तों को वितरित किया जाएगा।

चांदी के छत्र, हनुमान जी के चरण रहेंगे आकर्षण का केंद्र -श्री मेहंदीपुर बालाजी भक्त मंडल समिति के सदस्य ईश्वराज बारस्कर ने बताया कि समिति द्वारा श्री बालाजी महाराज के श्री चरणों में चांदी के चरण समर्पित किये जाएंगे। समिति द्वारा कलकत्ता पश्चिम बंगाल के कारीगरों से करीब 1 किलो वजनी चांदी के चरणों का निर्माण करवाया गया हैं। स्वर्णिम आभा वाले रथ में चांदी के छत्र तथा चरण समर्पित किए जाएंगे।

पांच जगह होगी महाआरती, मिलेंगे पवित्र जल के छींटे-श्री घाटा मेंहदीपुर बालाजी की महाआरती का आयोजन पांच स्थानों पर किया जा रहा है।

पहली महाआरती श्री हनुमान मंदिर न्यू बैतूल स्कूल ग्राउंड के सामने, दूसरी महाआरती दीक्षित निवास थाना रोड पर, तीसरी महाआरती लक्ष्मी चौक, चौथी महाआरती बिजासनी माता मंदिर पर तथा पांचवी महाआरती यात्रा समाप्त होने पर माता मंदिर गंज पेट्रोल पंप पर की जाएगी। आरती के बाद बालाजी महाराज के पवित्र छीटें दिये जाएंगे।

बालाजी को श्रद्धालु लगायेंगे अर्जियां-श्री मेंहदीपुर बालाजी के मंदिर में भक्त अपनी अर्जी एक छोटे से कोरे लाल कपड़े में दस रूपये के सिक्के 11 चावल के दाने के साथ एक कागज पर अपनी मनोकामना लिखकर चढ़ाते है वहीं बैतूल में निकल रही बालाजी के रथ में भक्त अपनी अर्जी लगा सकते है। प्रतिवर्षानुसार समिति द्वारा श्रद्धालुगण द्वारा लगाई गई अर्जियां श्री घाटा मेंहदीपुर बालाजी राजस्थान के दरबार में पहुंचाई जाती है जो भक्त स्वयं भगवान बालाजी महाराज राजस्थान के मंदिर में नहीं जा पाते है वह रथयात्रा में अपनी मनोकामना की अर्जी लगाकार भेंट करते है।

हनुमान जयंती पर बाल हनुमान मंदिर हमलापुर में होगा भव्य आयोजन

बैतूल। प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी आज बुधवार 23 अप्रैल को महावीर हनुमान जी के अवतरण के उपलक्ष्य में बाल हनुमान मंदिर हमलापुर बैतूल में हनुमान जन्मोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया जावेगा।

इस संबंध में समिति की अध्यक्ष श्रीमती शकुन्तला पचौरी ने बताया कि आज बुधवार सुबह 11 बजे मानव धर्म समाज की अध्यक्ष शकुन्तला पचौरी, लालमन बिसारे, नरेन्द्र पाटनकर, सुरेश गनेशे, महेश पचौरी जी द्वारा झंडा फ हराया जाएगा। इसके बाद दो बजे से संगीतमय सुंदरकांड का पाठ डॉ. गोविन्दा देशमुख एवं सागर के समूह द्वारा किया जाएगा। तत्पश्चात् शाम पांच बजे से भंडारा प्रसादी का कार्यक्रम नरेंद्र पाटनकर की ओर से आयोजित किया जाएगा। इसके बाद हनुमान जी की महाआरती एवं हवन-पूजन का कार्यक्रम कर पूर्णाहुति की जावेगी। बाल हनुमान मंदिर समिति हमलापुर बैतूल के सभी सदस्यों ने समस्त हनुमान भक्तों एवं धर्मप्रेमी श्रद्धालुओं से आज आयोजित जन्मोत्सव कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम को सफ ल बनाने में सहयोग करने की अपील की है।

दिव्यांग एवं 85+ मतदाताओं की वोटिंग 29 अप्रैल व 1 मई को

स्टेंडिंग कमेटी के सदस्यों के साथ जिला निर्वाचन अधिकारी ने गतिविधियों को किया साझा

बैतूल। लोकसभा निर्वाचन 2024 के अंतर्गत दिव्यांग एवं 85+वर्ग के मतदाताओं को घर बैठकर मतदान की सुविधा प्रदान की गई है। इसके अंतर्गत 29 अप्रैल एवं 01 मई को 2 चरणों में दिव्यांग एवं 85+ वर्ग के मतदाताओं को बीएलओ डोर टू डोर मतदान कराने पहुंचेगे। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी स्टेंडिंग कमेटी के सदस्यों के साथ नॉमिनेशन समाप्ति के पश्चात निर्वाचन कार्यों की रूप रेखा की समीक्षा कर रहे थे। उन्होंने सदस्यों के रूप में उपस्थित मान्यता प्राप्त दलों के प्रतिनिधियों को अवगत कराया कि निर्वाचन पारदर्शिता के दृष्टिगत अधिकृत प्रत्याशी होम वोटिंग के समय उपस्थित रह सकते है।उप जिला निर्वाचन अधिकारी मकसूद अहमद ने आगामी रेण्डमाईजेशन के समय सदस्यों से उपस्थिति का अनुरोध किया। साथ ही मतदान के दूसरे दिन प्रेक्षक द्वारा मतदान प्रपत्रों की समीक्षा के समय भी उपस्थित रहने के लिए आमंत्रित किया। 27 अप्रैल से 2 मई तक बीएलओ के माध्यम से मतदाता पर्चियों का वितरण कराया जाएगा। बैठक में कांग्रेस के हेमंत पगारिया, देवेन्द्र वाद्य, भाजपा से बाबा माकोड़े, निर्दलीय प्रतिनिधि रूपेश जावलकर, भारत आदिवासी पार्टी के अनिल उईके, गोंडवाना गणतंत्र पार्टी के सुनेर उईके, बसपा के जीआर पटेल, इंद्र कुमार शेषकर उपस्थित थे।

निर्वाचन नामांकन प्रक्रिया का प्रथम चरण हुआ पूर्ण

कुल 8 प्रत्याशी बैतूल संसदीय क्षेत्र में

बैतूल। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने बताया कि सोमवार नाम वापसी की अंतिम तिथि के पश्चात बैतूल संसदीय क्षेत्र में कुल 8 प्रत्याशी अंतिम रूप से चुनावी मैदान में शेष है। नाम वापसी के अंतिम दिन 3 बजे के बाद जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा पंजीकृत दल बसपा के प्रत्याशी को प्रतीक चिन्ह आवंटित किया गया।

अंतिम सूची के अनुसार बहुजन समाज पार्टी के प्रत्याशी अर्जुन अशोक भलावी निवासी गोंडी मोहल्ला सोहागपुर, भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी दुर्गादास उईके मकान नंबर 324/1 अर्जुन नगर क्रमांक-2 बैतूल, इंडियन नेशनल कांग्रेस के प्रत्याशी रामू टेकाम निवासी मु.पो.सावलमेंढा तहसील भैंसदेही है।भारत आदिवासी पार्टी के प्रत्याशी अनिल उईके निवासी ग्राम मुवारिया पोस्ट बारंगवाड़ी तहसील आमला, स्वतंत्र किसान पार्टी के सुभाष बारस्कर निवासी नीमढाना रानीपुर तहसील घोड़ाडोंगरी संसदीय क्षेत्र के प्रत्याशी है।इसी प्रकार गोंडवाना गणतंत्र पार्टी के प्रत्याशी सुनेर उईके निवासी ग्राम गजाढाना पोस्ट बारंगवाड़ी तहसील आमला, निर्दलीय प्रत्याशी भागचरण वरकड़े निवासी ग्राम चिखलार जिला बैतूल तथा निर्दलीय भुरेलाल छोटेलाल बेठेकर निवासी 5वी विद्यापीठ से डेंटल कॉलेज रोड अमरावती (महाराष्ट्र) प्रत्याशी के रूप में शामिल है।

बैतूल विवाह समारोह में डांस करने को लेकर हुआ विवाद जमकर चले चाकू, तलवार पांच लोग गंभीर घायल

बैतूल। मामला बैतूल जिले के सारणी थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले पाथाखेड़ा बस स्टैंड के पास की है जहां बारात में नाचने को लेकर कुछ युवकों में विवाद हो गया विवाद इतना बढ़ गया कि 10 से 15 युवकों द्वारा दो युवकों को तलवार और चाकू से बहरहमी से मारा गया जिसकी रिपोर्ट पाथाखेड़ा चौकी में लिखाई गई और घोड़ाडोंगरी में एफआईआर कराकर वापस चौकी लौटे थे चौकी से वापस जा रहे थे कि अचानक फिर 10 12 लोगों ने रोककर इन पर हमला कर दिया ।

यह घटना पाथाखेड़ा चौकी के कुछ ही दूरी पर हो गई पुलिस ने विवाद होता देख वहां पर आई इतने युवक वहां से भाग खड़े हुए बताया जा रहा है कि युवकों के पास कट्टा भी था दोनों बार हुए विवाद में पांच लोग घायल हो गए पांच लोगों को चाकू तलवार से गंभीर चोटें आ गई घटना में राहुल पिता जागो ठाकुर 24 निवासी सुभाष नगर पाथाखेड़ा को सर में चोट ब्रह्म देव पिता रामधनी ठाकुर 40 निवासी सर नाक ओर पीठ में चोट विष्णु पिता रामधनी ठाकुर 43 हाथ में गंभीर चोट गौरव ठाकुर पिता विष्णु ठाकुर 18 सर पर चोट अभय घुरमाड़े 19 सर पर चोट आ गई सभी को लहूलुहान हालत में घोड़ाडोंगरी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया जहां से 3 गंभीर घायलों को बैतूल रेफर किया गया देर रात बैतूल जिला चिकित्सालय लाया गया जहां उनका उपचार चल रहा है सभी को गंभीर चोटें आई है।

जनता ने बनाया नमो हेट्रिक का मन : बबला शुक्ला

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आगमन को लेकर बैठक संपन्न

बैतूल। देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व मे देश विकास के पथ पर तेजी से आगे बढ़ रहा है यह लोकसभा चुनाव विकसित भारत बनाने का चुनाव है। देश की आने वाली पीढ़ी और भविष्य का चुनाव है। जनता नमो हेट्रिक बनाने का मन बना चुकी है। आवशयकता एक एक बहुमूल्य वोट को गम्भीरता के साथ पार्टी के पक्ष मे कराने के लिए अब अतिरिक्त मेहनत की है, यह बात भाजपा के जिला अध्यक्ष आदित्य बबला शुक्ला ने जिला भाजपा कार्यालय विजय भवन मे आयोजित महत्वपूर्ण बैठक में कही। श्री शुक्ला ने कहा की देश की रक्षा और मान-सम्मान के लिए गरीबो के उत्थान के लिए और महिलाओ के आत्मसम्मान के लिए मोदी जी दिन-रात कार्य कर रहे है। नव मतदाता भी मोदी जी की रीति-नीति से प्रभावित होकर भारत के नव निर्माण के लिए भाजपा से जुडना ना चाहते है। बैठक को सम्बोधित करते हुए जनसभा संयोजक व बैतूल विधायक हेमन्त खण्डेलवाल ने कहा की यह चुनाव आने वाले वर्षो मे भारत को विश्वगुरु और विकसित बनाने का चुनाव है। 24 तारीख को देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी हमारी लोकसभा में हरदा आयेगे इसको लेकर कार्यकर्ताओं में उत्साह दिखाई देता है। जनसभा को लेकर जहां तैयारिया अंतिम दौर मे है वहीं जिले से 25 हजार कार्यकर्ता जनसभा मे पहुंचे इसकी तैयारी करनी है जनता के बीच मे भाजपा सरकारो की कल्याणकारी योजनाओ की सकारात्मक चर्चा है, सभी पदाधिकारी और कार्यकर्ता हरदा मे हो रही जनसभा को ऐतिहासिक रूप से सफल बनाने की तैयारियों मे जुट जाए। बैठक को सम्बोधित करते हुए आमला विधायक डॉ योगेष पंडाग्रे ने कहा की 2014 से पहले हर तरफ आतंक की घटनाए, लूट, भ्रष्टाचार और भय का माहौल था, आए दिन आतंकी घटनाए होती थी लेकिन मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने के बाद अब कोई हमारे देश की तरफ आंख उठाकर नही देखता। शक्तिशाली और समृद्ध भारत के लिए जनता बैतूल, हरदा, हरसूद से भी ऐतिहासिक विजय दिलाएगी बैठक का संचालन भाजपा जिला महामंत्री कमलेश सिंह ने किया एवं आभार भाजपा जिला महामंत्री सुधाकर पवार ने किया। बैठक के दौरान मंच पर भाजपा जिला अध्यक्ष आदित्य बबला शुक्ला, बैतूल विधायक हेमन्त खण्डेलवाल, आमला विधायक डॉ योगेश पंडाग्रे, जिला पंचायत अध्यक्ष राजा पवांर एवं जिला महामंत्री द्वय कमलेश सिंह एवं सुधाकर पवांर मौजूद रहे।

विचार

श्रीकृष्ण जुगनू

लेखक संस्कृति विशेषज्ञ हैं।

पृथ्वी के लिए हमारे संकल्प

हमने 22 अप्रैल को पृथ्वी दिवस मनाया। वास्तव में हर साल यह दिन हमें यह याद दिलाने के लिए मनाया जाता है कि हम इस पृथ्वी के प्रति अपना पुत्रभाव पूरी तरह दिखाएं और इसकी धारण शक्ति, सौन्दर्य की गंभीरता को बनाए रखें। पृथ्वी को हमारी माता कहा गया है। शतपथ ब्राह्मण के बाद, पौराणिक मिथक रूप में वराहावतार का आख्यान जाहिर करता है कि जलमग्न पृथ्वी का ब्रह्मा ने अवतार लेकर उद्धार, उत्थान किया और मनुष्यों को सौंपा कि वे इसकी गरिमा, स्थिति, पवित्रता को बनाए रखे। सभी दोहन मित् मित् हो अर्थात् संयम को समझा जाए और पृथ्वी के सौंदर्य को बनाए रखा जाए।

वेद में पृथ्वीसूक्त में जो अवधारणा आई है, वह बड़ी ही प्रासंगिक हैं, उसमें पृथ्वी के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्धारण हुआ है। यह भी कहा गया है कि यह भूमि सर्वेश्वर द्वारा हमें श्रेष्ठ, आर्योचित उद्देश्यों के लिए दी गई है- अहं भूमिमददामार्यायाहं। (ऋग्वेद 4, 26, 2)

इस पर रहने वालों के लिए सर्वेश्वर ने सूर्य, चंद्रमा, गगन, जलादि सब समान बनाए हैं, इन संसाधनों का संतुलित उपयोग, उपभोग ही करना चाहिए अन्यथा यह रत्नगर्भा अपना स्वरूप खो बैठेगी और वह घातक होता है। पृथ्वी से बडी कोई हितकारी नहीं। महाभारत, विष्णुपुराण, वायुपुराण, समरांगण सूत्रधार आदि में महाराजा पृथु के द्वारा पृथ्वी के दोहन का जो आख्यान आया है, वह जाहिर करता है कि धरती ने बहुत दयालु होकर मानव को अपने संतान के रूप में सब कुछ देने का निश्चय किया मगर मानव की लालसाएं धरती के लिए हमेशा घातक सिद्ध हुई, वह लालची ही होता गया।

ब्रह्मवैवर्त के प्रकृतिखंड में भी ऐसी धारणा आई है। सुबह उठते ही पृवी को प्रणाम करने की परंपरा हमारी संस्कृति में शामिल रही है। मनुस्मृति, देवीभागवत, पद्मपुराण, याज्ञवल्क्य स्मृति, नारद स्मृति, बृहस्पति स्मृति आदि में ऐसे कई विचार हैं

जो पृथ्वी के प्रति हमारे व्यवहार को निर्धारित करते हैं। पृथ्वी के प्रति नमस्कार का मंत्र भी हमसे कुछ कर्तव्य मांगता है।

विष्णुपुराण में पृथ्वी गीता आई है जिसमें पृथ्वी ने स्वयं अपने विचार रखें हैं कि हर कोई ये समझता है कि ये भूमि मेरी है और मेरे बाद मेरी औलाद की रहेगी। न जाने कितने राजा आए, चले गए, न राम रहे न रावण... सब समझते हैं कि वे ही राजा हैं, मगर अपने पास खड़ी मौत को नहीं देखते... मनोजय के मुकाबले मुक्ति है ही क्या। (विष्णुपुराण 4, 24)

शिल्पग्रंथों में वराह मूर्तियों के साथ पृथ्वी को भी बनाने का निर्देश मिलता है जिसमें उसका रत्नगर्भा रूप प्रमुख है। पृथक से भूदेवी की मूर्ति के लक्षण भी मयमतम् आदि में मिलते हैं, उनके मूल में भाव ये है कि हम पृथ्वी को देवी की तरह स्वीकारें और उसके सौंदर्यमय स्वरूप को ऐसा बनाए रखें कि आने वाली पीढ़ियां भी ये कहे कि हमारे बुजुर्गों ने हमें बेहतरीन धरती सौंपी हैं...।

यही पृथ्वी दिवस का संकल्प होना चाहिए।

छात्राओं ने बड़ी उत्सुकता से सुना कनाडा सफर नामा

देवास। नियाग्रा जल प्रपात, हवाई यात्रा, कनाडा में बाग रसोई, मैराथन में जीतना, कनाडा की स्वच्छता, अनुशासन व पहले आप की संस्कृति के साथ वहां की विशालता को पर्यटन पर केंद्रित कार्यक्रम में पर्यटनप्रेमी लेखक मोहन वर्मा ने इस तरह व्यक्त किया कि जैसे हॉल में बैठी सभी छात्राएं भी ऐसा महसूस कर रही थी कि वे खुद कनाडा की यात्रा कर रही हो । अवसर था महारानी चिमनाबाई हायर सेकंडरी स्कूल में आयोजित समर केम्प का आज के दिन का, विषय था पर्यटन।

मुख्य अतिथि के रूप में लेखक, पत्रकार, समाजसेवी और पर्यटन के शौकीन मोहन वर्मा तथा पूर्व प्राचार्य विजय श्रीवास्तव कार्यक्रम में उपस्थित थे।

वर्मा ने छात्राओं को बताया कि एक विकासशील देश और विकसित देश में क्या और कैसा अंतर होता है। प्रधानमंत्री मोदी जी द्वारा 2047 तक देश को विकसित देश बनाने के संकल्प में सरकार और व्यवस्था के साथ नागरिकों की सहभागिता कितनी जरूरी हैं ।

विजय श्रीवास्तव ने भी अपनी देश व ऑस्ट्रेलिया विदेश यात्रा के साथ-साथ अपने जिले के विभिन्न पर्यटन स्थलों की समग्र जानकारी भी बालिकाओं को दी और बालिकाओं से कहा कि वे जब भी समय मिले अपने शहर, जिले औरअन्य जगहों को देखें और सीखें।

इस अवसर पर लेखक मोहन वर्मा ने अपनी प्रकाशित छह पुस्तकों का सेट विद्यालय प्राचार्य रुचि व्यास व पुस्तकालय प्रभारी एकता श्रीवास्तव को छात्राओं के लिए भेंट की।

अतिथियों का स्वागत सीमा कानूनगो तथा रामकली मेहरा ने किया । कार्यक्रम का सफल संचालन अर्चना डोडवे ने किया व आभार भावना उपाध्याय ने माना। इस अवसर पर आदिल पठान, संजय जोशी, वेदना चौधरी, स्नेहलता वर्मा, श्रमिता नामदेव, वंदना जोशी व अनेक छात्राएं उपस्थित थे ।

नर्मदापुरम की हलचल

संजीव डे राय

भाजपा शून्य कार्यकर्ता पार्टी..!

भाजपा में कार्यकर्ता कम हो गए..? क्योंकि वो नेता हो गए.. वो धूप से डर गए..! पहले दौर के हो चुके चुनाव को लेकर जो खबरें आ रही कि उसमें सुनाई दिया इस बार कार्यकर्ता वोटरों को नहीं निकाल पाए इसे लेकर पार्टी निष्ठावान पशोपेश में है। कहा जा रहा है कि 26 को तो बहुत सारी शादियां हैं। ऐसे में फिर पार्टी क्या करेगी यह चिंता भाजपाईयों को सताने लगी क्योंकि, पार्टी कार्यकर्ता तो सारे नेता हो गए हैं। एक समय था जब भाजपा अपने निष्ठावान कार्यकर्ताओं के दम पर पर गर्व करती थी. पार्टी को केडर आधारित पार्टी कहा जाता था अब तो निष्ठावान कार्यकर्ता खुद कहने लगे भाजपा कार्यकर्ता शून्य हो गई जिससे न पार्टी बची ना ही केडर....

केडर आधारित भाजपा पूछ रहे अब सिद्धांत कहां गए भाई....

सच ही कहा जाता है नींव के पत्थर ही महत्वपूर्ण होते हैं और भाजपा की नींव यहां दरक चुकी, ठाकुर प्रेमसिंह, दादा मधुकर राव हर्णे, डॉ. राधा मोहन सेठा, गिरजा शंकर शर्मा, सीरुमल नवलानी, शंभू सोनकिया, नीरज बरगले, विपिन गुप्ता, महेश लोहिया, मनोहर सराठे, प्रकाश अग्रवाल, मदनलाल डोंगरे, रमेश वैध उस समय भाजपा के सहयोगी हुआ करते थे जब पार्टी का झंडा, डंडा उठाने वाले मिला नहीं करते थे। नींव के इन पत्थरों में कुछ तो यादगार हो गए, जो हैं उनकी पूछ परख नहीं अब भाजपा में कांग्रेसियों का बोलबाला है। कांग्रेस से भाजपा में आए कांग्रेसियों को अब कांग्रेस और भाजपा के बीच एक शब्द वरिष्ठ जोड़ना बाकी है। क्योंकि जितने भी भाजपा में कांग्रेसी नेता शामिल हो रहे/ हुए हैं उनसे भाजपा का मूल केडर निरुत्साहित हो गया। गाडरवारा विधायक की होशंगाबाद जिले में दख़लंदाज़ी केडर आधारित पार्टी को न केवल नसीहत देकर अपने निजी या फिर व्यवसायिक मित्र या फिर उनके साथ भाजपा में आए को अग्रणी भूमिका में रख रहे है। इसे लेकर भाजपा का मूल केडर हतोत्साहित हो रहा और खुद को ठगा हुआ महसूस कर रहा है। वो सोच नही पा रहा है कि भाजपा व्यक्तिवादी ढर्रे पर चल पड़ी है प्रोफेशनिक हो चली.. भाजपाई नाव कांग्रेसियों से ओवरलोड हो चुकी डूबने की चिंता में निष्ठावान भाजपाई अब एक दूसरे से पूछ रहे अब सिद्धांत कहां गए भाई...

संगठन मंत्री वाकिफ फिर भी मौन क्यों..?

पिपरिया में हुई प्रधानमंत्री की सभा मे केडर आधारित पार्टी के जबरदस्त नजारे देखने मिले, जिसमें पार्टी का मूल केडर हतोत्साहित हुआ प्रधानमंत्री सभा का सारा जिम्मा परिवहन और शिक्षा मंत्री जी के हाथों था, पर पार्टी में एकजुटता होने के बजाय प्रधानमंत्री के साथ मंच पर, हेलीपेड या स्वागत द्वार किसी भी जगह किसी भी केडर आधारित की फ़ोटो खिंच नहीं जाए की चिंता तो थी साथ ही निजी कोई फोटो से वंचित न रह जाए इसकी फ़िक्र रखी गई.. केडर इसे लेकर ज्यादा व्यथित हुआ अंदरूनी बिखराव तक हो गया अब बस इंतजार इस बात को लेकर है कि यह चिंगारी कब भड़क जाए.? सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि संगठन प्रभारी सारी स्थिति से वाकिफ थे और है.. लेकिन मंत्री जी टोंक पाने का उनमें भी साहस नहीं..! यह बाखूबी समझा जा सकता है।

बातें हैं कि रुकती ही नहीं..

दस दिन हो चले लेकिन प्रधानमंत्री मंत्री के पिपरिया कार्यक्रम की चर्चाएं आज भी नहीं थम रही, कहा जा रहा कि गाडरवारा विधायक के हस्तक्षेप में होशंगाबाद और पिपरिया दोनों नपा अध्यक्ष और उनके पतियों को वहां वीवीआईपी ट्रीटमेंट दिया गया, फिर जो पार्टी में बिना किसी पद वाले से प्रधानमन्त्री की सभा का मंच संचालन करवाया गया, किसी मंडल अध्यक्ष को छोड़िए पिपरिया मंडल अध्यक्ष तक को कोई तबज्जों नहीं मिल पाई लेकिन होशंगाबाद ग्रामीण मंडल अध्यक्ष को इतनी वजनदारी मिली कि उसके आगे विधायक तो विधायक पार्टी पदाधिकारी सहित खुद जिलाध्यक्ष सभी बौने साबित हुए ..

और अब अंत में चलते-चलते..

ऐसा तो नही कहीं छोटे गांव से जमीनी संघर्ष करते हुए सामान्य कार्यकर्ता दर्शन सिंह चौधरी का लोकसभा प्रत्याशी होना पार्टी के वरिष्ठ नेता राजनीति की एक और बड़ी नई दुकान नहीं खुल जाए हजम नहीं कर पा रहे।

विश्व में राम और कृष्ण की धरती से जाना जाता है भारत : मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव

देवास /मोहन वर्मा। स्वतंत्र वीर सावरकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं श्री खेड़ापति मंदिर में दर्शन कर भाजपा के लोकप्रिय प्रत्याशी महेंद्र सिंह सोलंकी वहां से नामांकन दाखिल करने के लिए शाजापुर को रवाना हुए। उनके पीछे-पीछे सैकड़ों वाहनों के लम्बे काफिले के साथ देवास से उनके समर्थक और भाजपा के कार्यकर्ता जुड़ते चले गए। श्री सोलंकी के काफिले में मार्ग के टोंककला, चिड़ावद, मक्सी, कनासिया से भी वाहनों में सवार भाजपा कार्यकर्ता शामिल होते गए। शाजापुर में सर्वप्रथम मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव, शुजालपुर विधायक उच्च शिक्षा मंत्री इन्दर सिंह जी परमार, लोकसभा प्रभारी बहादुर मुकाती, शाजापुर विधायक

अरुण भीमावद की उपस्थिति में श्री सोलंकी ने शाजापुर जिलाधीश कार्यालय मे जिला निर्वाचन अधिकारी सुश्री ऋचू बाफना को नामांकन जमा किया। नामांकन पत्र दाखिल करने के पश्चात शाजापुर के प्राइवेट बस स्टैंड पर आयोजित सभा को प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने संबोधित करते हुए कहा कि दुनिया में कहीं भी चले जाओ और कहो कि मैं राम और कृष्ण की धरती से आया हूं तो लोग समझ जाते हैं कि यह भारत से आऐ है और कांग्रेसियों को अपने ही देश में राम के जन्म के स्थान के बारे में सबूत चाहिए थे।

भगवान श्री राम के अस्तित्व को नकारने वाले कांग्रेसी आज तक भी प्रभु श्री राम के मंदिर में दर्शन करने अयोध्या नहीं गए है। हमने सदैव कानून का सम्मान किया लेकिन श्रीमती इंदिरा गांधी ने अपना चुनाव शून्य घोषित होने पर देश में आपातकाल लगाया।

लोकसभा चुनाव को लेकर प्रेक्षकों ने किया स्ट्रांग रूम का निरीक्षण

हीरालाल गोलानी सोहागपुर। आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर प्रेक्षकों ने सोहागपुर विधानसभा चुनाव क्षेत्र में के स्ट्रांग रूम का निरीक्षण किया।

इस अवसर पर सामान्य प्रेक्षक एआईएस डॉ. प्रीतम बी. यशवंत एवं पुलिस प्रेक्षक सी. संतोष कुमार तुकाराम ने स्ट्रांग रूम एवं चुनाव सामग्री वितरण स्थल का अवलोकन करके सोहागपुर विधानसभा में चल रहे प्रशिक्षण का अवलोकन किया ।

आपने चुनावी दलों को निष्पक्ष,शांतिपूर्ण चुनाव कराने के निर्देश दिए। इस अवसर पर निर्वाचन अधिकारी बृजेंद्र रावत, तहसीलदार अलका एक्का आदि उपस्थित थे।

विश्व पुस्तक दिवस पर विशेष

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

मनुष्य का सबसे अच्छा दोस्त है पुस्तक

हमारे जीवन में सभ्यता के साथ सबसे प्राचीन बहुमूल्य वस्तु जो अस्तित्व में आई थी वह किताबें थीं। किताबों की अपनी दुनिया होती हैं। किताबों में बंद राज़ों के साथ कभी - कभी पढ़ने वालों के राज़ भी शामिल हो जाते हैं। अतीत की यादों को समेटने का बेहतरीन जरिया पुस्तक ही है। जोसेफ एडिसन ने कहा है -'पुस्तकें वह विरासत हैं जो मानव जाति के लिए एक महान प्रतिभा छोड़ती हैं, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक, उन लोगों तक पहुंचाई जाती हैं, जो अभी तक जन्में नहीं हैं।'

पुस्तकें हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण रोल अदा करती हैं क्योंकि पुस्तकों से हमें ज्ञान की प्राप्ति होती हैं। पुस्तकें हमारी अच्छी मित्र होती हैं। पुस्तक जितना वफ़ादार और कोई मित्र नहीं हो सकता है। चार्ल्स विलियम एलियट ने कहा है- 'किताबें सबसे शांत और सबसे सदाबहार दोस्त हैं। ये सबसे सुलभ और बुद्धिमान काउंसलर हैं, और सबसे धैर्यवान शिक्षक हैं।' किताबें हमें ज्ञान देती हैं और उस ज्ञान को जीवन की परिस्थितियों में सही तरह से लागू करने की तरक़ीब भी सिखाती है।

किताबें पढ़कर हम प्राचीन संस्कृति से अवगत भी होते हैं और भविष्य की रुपरेखा को भी समझ पाते हैं। बारबरा डब्ल्यू तुचमन ने कहा है- 'किताबें सभ्यता की वाहक हैं। किताबों के बिना इतिहास मौन है, साहित्य गूंगा है, विज्ञान अपंग है, विचार और अटकलें स्थिर है। ये परिवर्तन का इंजन हैं, विश्व की खिड़कियां हैं, समय के समुद्र में खड़ा प्रकाशस्तंभ हैं।'

वर्तमान समय में खुद को हर हाल में आगे बढ़ाने का हुनर भी किताबें हमें सिखाती हैं। खुशी और ग़म में सदैव साथ निभाने वाली ये किताबें हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं। किताबों में कही गयी बातें, किस्से और कहानियां हमें प्रेरित करते हैं और हम कुछ नया और बेहतर करने के लिए प्रेरित महसूस करते हैं। महापुरुषों की जीवनियां, सफल लोगों के संघर्ष की कहानियां पढ़कर हम प्रयास करते रहने के लिए उत्साहित होते हैं और बेहतर परिणाम प्राप्त करना पहले से कहीं ज्यादा आसान हो जाता है। डेसकार्टेस ने कहा है -'अच्छी किताबों को पढ़ना, पिछली सदियों के बेहतरीन व्यक्तियों के साथ बातचीत करने के समान है।'

पुस्तक केवल हमें ज्ञान ही नहीं प्रदान करती बल्कि वे कई बार हमारे खाली समय को रोचक बना सकती हैं क्योंकि ऐसी कई सारी पुस्तकें हैं जो हमें कई जगह की जानकारियां देती है, जिन्हें पढ़ कर ऐसा लगता है जैसे हम हमारा समय वही पर बीता रहे है। ऐसी किताबों से हमें नई जगह की तो जानकारी होती ही है और खाली समय भी मजे से कट जाता है। पुस्तकें अमर हैं, उनका कभी निधन नहीं होता है। मार्कस

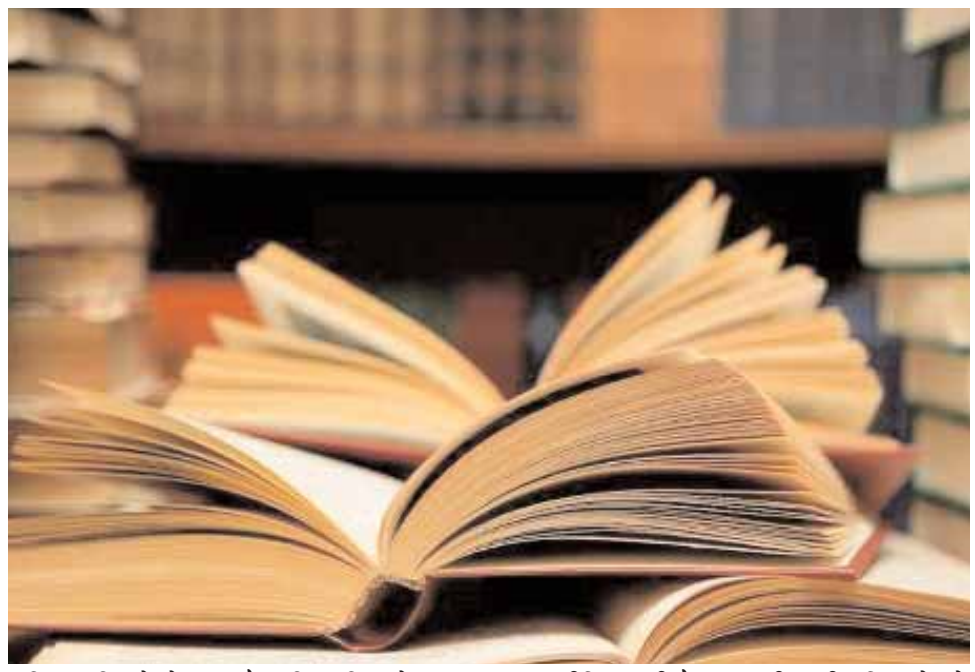

टुलियस सिसरो ने कहा है -'बिना किताबों वाला कमरा बिना आत्मा के शरीर के समान है।'

पुस्तकों के लिए कहा जाता है कि लेखक मर जाता हैं , लेकिन उसकी पुस्तकें जन्म- जन्मांतर तक जीवित रहती हैं। बहुत सी प्राचीन किताबों को लिखने वालों का निधन हो गया लेकिन उनके द्वारा लिखी गई पुस्तकें आज भी जीवित है और हमारा मार्गदर्शन करती है। पुस्तक हर व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारती है और उसके दृष्टिकोण में भी बदलाव लाती है। पुस्तक पढ़ने वाले व्यक्ति को हर मुसीबत का हल अक्सर मिल ही जाता है, क्योंकि उसकी स्थिति से मिलती जुलती स्थिति के विषय में उन्होंने कहीं न कहीं पढ़ा होता है। यह हमारी सहयोगी होती है। विलियम स्टायरन ने कहा है- 'एक बेहतरीन किताब आपको कई प्रकार के अनुभव देती है और अंत में थोड़ा उदास भी कर देती है। उसे पढ़ते हुए आप अनेक जीवन की यात्रा कर लेते हैं।'

पुस्तकें पढ़ने से हमें काफ़ी फायदा होता है। यह तनाव से मुक्ति देने में भी सहायक होता है। रोज़मर्रा की ज़िन्दगी इतनी तेजी से बदल रही है कि लोगों के पास वक्त नहीं रहता है कि पुस्तकों का अध्ययन कर सकें, लेकिन इसके बावजूद हमें पुस्तकों के लिए समय निकालना चाहिए। किताबें वो क़ीमती पल देने में सहायक होती हैं, जिनमें आदमी पूरी तरह से अपने पास रह सके। अपनी रूचि की किताब पढ़ते हुए बहुत आसानी से कुछ पल के लिए ज़िन्दगी के अनसुलझे मसलों से छुटकारा पाया जा सकता है। तनाव मुक्त हो जाने से दिमाग़ में एक नयी ऊर्जा महसूस होती है, जो नए सिरे से किसी काम को शुरू करने के लिए बहुत ज़रूरी होता है। वेरा नज़ैरियन ने कहा है-'जब कभी आप कोई अच्छी पुस्तक पढ़ते हैं, तो दुनिया में कहीं एक नया दरवाजा खुलता है और कुछ अधिक रोशनी अंदर आती है।'

राइट क्लिक

पहले चरण के मतदान से अंतिम नतीजों के आकलन का ये सियासी उतावलापन

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के वरिष्ठ संपादक हैं।
संपर्क- 9893699939
ajaybokil@gmail.com

आजकल चुनाव में मतदान के आरंभिक चरण के आधार पर ही संभावित अंतिम नतीजों की अटकलें लगाने का गोरखधंधा जोरों पर है। इस बार भी लोकसभा चुनाव के पहले चरण में घटे मतदान की बिना पर दो प्रमुख राजनीतिक गठबंधनों ने अपनी- अपनी जीत के दावे ठोक दिए हैं। गोया मतदाता उनकी हार जीत पहले ही चरण में सुनिश्चित कर दी हो। जब चुनाव के 6 चरण बाकी हों, तब ऐसे दावों का क्या मतलब है? क्या चुनाव में केवल अपनी मनोवैज्ञानिक बढ़त दिखाने का दुस्साहस है अथवा मतदाता के राजनीतिक रूझान और मनोविज्ञान को पहले ही भांप लेने की जादूगरी है? या फिर चुनाव के बाजार में अपने ब्रांड का भाव ऊंचा कायम रखने का टोटका है? इन सवालों को बल हाल में सोशल मीडिया पर आई दो पोस्ट से मिला। जिनमें से पहले में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने चुनाव के पहले चरण में पिछले लोकसभा चुनाव के प्रथम चरण की तुलना में कम मतदान के आंकड़े सामने आने के बावजूद कहा कि 'पहले चरण में एनडीए के पक्ष में रिकॉर्ड मतदान के लिए मतदाताओं का धन्यवाद' तो दूसरी तरफ समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने एक्स पर पोस्ट डाली कि (चुनाव में) भाजपा का पहले दिन का शो फ्लॉप। मतदाताओं की नई राजनीतिक चेतना को नमन। पहली पोस्ट का आशय साफ था कि देश में मोदी लहर पहले की तरह उद्दाम गति से बह रही है, कोई इसे न समझना चाहे तो न समझे। दूसरी पोस्ट का मंतव्य था कि जो वोटिंग हुआ है, वह मुख्यतः उन वोटरों द्वारा किया गया है, जो भाजपा और एनडीए के विरोधी हैं यानी कि इंडिया गठबंधन को सत्ता में आते देखना चाहते हैं। यानी कि अखिलेश ने मान लिया है कि चुनाव के बाकी चरणों में भी मतदान का वही ट्रेंड रहने वाला है, जो पहले चरण में दिखा। दूसरे शब्दों में कहें तो मोदी राज जा रहा है, नेताविहीन इंडिया गठबंधन सामूहिक राज आ रहा है। दूसरी तरफ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पहले ही से मान बैठे हैं कि तीसरी बार पीएम पद की शपथ तो महज संवैधानिक औपचारिकता है, जनता उनके स्वस्तिवाचन के लिए उधार बैठी है।

चुनाव का लोकतांत्रिक सच इन दोनों के भीतर कहीं है। यह सही है कि 2019 के मुकाबले इस बार पहले चरण का मतदान तुलनात्मक रूप से कम दर्ज किया गया है। पिछले लोस चुनाव भी सात चरणों में हुए थे। तब पहले चरण में 20 राज्यों की 91 सीटों पर वोट डाले गए थे, जिसका प्रतिशत 66 था। इस बार 21 राज्यों व केन्द्र शासित प्रदेशों की 102 सीटों पर वोट पड़े, जिसका प्रतिशत 65.5 फीसदी था। यानी 0.5 फीसदी का फर्क। हालांकि जिन सीटों पर वोट पड़े, वो वही नहीं थीं, जो 2019 में थीं। इसलिए मतदान के प्रतिशत की सीटवार तुलना उचित नहीं होगी।

बहरहाल मतदान प्रतिशत में मामूली कमी से अंतिम नतीजों पर बहुत फर्क पड़ेगा, ऐसा नहीं लगता। यही ट्रेंड आगे भी दिखे, यह जरूरी नहीं है। फिर भी पहले चरण को मंगलाचरण मानकर अर्चना का फलित तलाशने वाले नतीजों की एडवांस घोषणा क्यों कर रहे हैं ? सत्ता के घोड़े की सवारी को लेकर इतनी उतावली क्यों है? क्या यह महज राजनीतिक सनसनी फैलाने का शिगूफा है अथवा मतदाता के मानस को प्रभावित करने का सियासी टोटका है? इसे हमे समझना पड़ेगा। दरअसल मतदान के पहले चरण के झटके से दोनों प्रमुख राजनीतिक खेमे हिले हुए क्यों हैं, इसे बारीकी से समझने की जरूरत है। मतदान खास तौर पर उन राज्यों में घटा है, जहां भाजपा और एनडीए ज्यादा से ज्यादा और बड़ी संख्या में सीटें जीतने का ख्वाब पाले हुए हैं। जहां एनडीए और इंडिया गठबंधन की सेनाएं सीधे आमने सामने हैं, उस बिहार में महज 47.49 फीसदी वोट पड़े हैं। मतदान का यह आंकड़ा 2019 की तुलना में 10 फीसदी कम है। पिछले चुनाव में जदयू-भाजपा व अन्य कुछ छोटी पार्टियों के गठबंधन ने बिहार में स्वीप करते हुए 40 में से 39 सीटें जीत ली थीं, केवल 1 सीट कांग्रेस के खाते में गई थी। अब मतदान में भारी कमी का नुकसान किसे होगा, इसको लेकर राजनीतिक अटकलबाजी जारी है। कुछ जानकारों का मानना है कि जदयू का एनडीए में लौटना खास मुफीद साबित नहीं हो रहा है, क्योंकि नीतीश की राजनीतिक साख पर लगा बट्टे की वाशिंग उस तरह से नहीं हो पाई, जो अपेक्षित थी। मोदी करंट है पर 440 वोल्ट की विद्युत धारा में नहीं बदल पा रहा है। तो क्या राजद और इंडिया गठबंधन का जाति दांव बिहार में ज्यादा कारगर हो रहा है? संभावनाएं दोनों हैं। अभी दावे से यह कहना कठिन है कि किस खेमे का समर्थक मतदाता वोट डालने नहीं निकला या उसे लगा ही नहीं कि उसे वोट देने से कहीं कुछ बदलने वाला है। हालांकि बिहारियों का मतदान के प्रति उत्साह यूं ही फीका रहा तो एनडीए के चार सौ पार के नारे को पहला झटका बिहार से लगेगा। अब मोदीजी ने पहले चरण में एनडीए के पक्ष में बंपर वोटिंग का जो दावा सोशल मीडिया पर किया था, उसका जमीनी आधार कितना है, यह चुनाव नतीजों से ही पता चलेगा।

दूसरे प्रमुख भाजपा शासित राज्य हैं, मध्यप्रदेश, राजस्थान और यूपी। मध्यप्रदेश में 2019 के लोकसभा चुनाव में कुल 71.20 फीसदी वोट पड़े थे, जबकि इसी राज्य में पहले चरण के मतदान का प्रतिशत 67.75 रहा है। ऐसे में सवाल उठ रहा है कि कहीं भाजपा का मिशन 29 फेल तो नहीं हो रहा? या फिर राज्य में बची खुची कांग्रेस का भी भट्टा बैठने वाला है? पिछले लोस चुनाव में भाजपा ने मप्र की 29 में से 28 सीटें जीत ली थीं। राजस्थान में तो पिछले चुनाव में मोदी लहर एकतरफा चली थी और भाजपा सभी 25 सीटों पर काबिज हो गई थी। तब वोटिंग 66.34 फीसदी हुआ था, जबकि इस बार पहले चरण में मात्र 50.95 वोट ही पड़े हैं। इसी तरह यूपी में पिछले लोस चुनाव में 58.61 फीसदी मतदान हुआ था, जबकि इस बार पहले चरण में कुछ कम 57.61 यानी एक फीसदी कम था।

असल सवाल यह है कि लोग इस बार ज्यादा वोट करने क्यों नहीं आ रहे हैं? इस सवाल एक जवाब मौसम है। भयावह गर्मी के चलते लोग मतदान केन्द्रों तक जाना टाल रहे हैं। लेकिन इस देश में अप्रैल-मई की चिलचिलाती गर्मी में चुनाव तो 2004 से हो रहे हैं और पिछले दो लोकसभा चुनाव में मतदान का कुल प्रतिशत और भाजपा का शेयर लगातार बढ़ ही रहा है। लेकिन क्या इस बार वो उत्साह उतार पर है अथवा जो वोटर भाजपा के खिलाफ वोट देना चाहता है, वो सही विकल्प के अभाव में घर से नहीं निकलना ही बेहतर समझ रहा है? वैसे भी लोकतांत्रिक पर्व का बदलती ऋतुओं से खास लेना- देना नहीं होता। मतदाता की पहली चिंता यह होती है कि उसकी निजी जिंदगी में बहार लाने और देश में तरक्की और सौहार्द का गुलशन कौन खिला रख सकता है।

तो क्या इस चुनाव में कहीं कोई अंडर करंट नहीं है, जो मतदाता को वोट डालने पर विवश करे या फिर कोई अंतर्धारा बह रही है, जो हमे ऊपर से नजर नहीं आ रही? जो मतदाता वोट डालने जा रहे हैं, वो कर्तव्य भाव से मजबूर हैं, यथा स्थिति के वाहक हैं या फिर वर्तमान में ही आश्वस्ति के स्वर्णिम भाव से गदगद हैं?

बेशक पहले चरण में मतदात प्रतिशत के उतार चढ़ाव से पूरे चुनाव नतीजों से जोड़कर देखना जल्दबाजी होगी। लगातार तीन चार चरणों में भी मतदान का यही पैटर्न रहता है तो किसी निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है। कुछ राज्यों में तो यह चुनाव नीरसता के साए में लड़ा जा रहा है, केवल गैर भाजपा शासित राज्यों में लड़ाई कांटे की दिखती है, जहां भाजपा अपना अश्वमेध दौड़ाना चाहती है तो बाकी विपक्षी दल अपने आखिरी किलों को बचाने की जी जान से कोशिश करते दिखते हैं। जहां तक भाजपा और प्रकारांतर से एनडीए की बात है तो लगातार तीसरी बार एंटी इनकम्बेंसी को मात देकर सत्ता में आना कोई सामान्य बात नहीं है। यह असंतोषों के पहाड़ लांघ कर एवरेस्ट पर विजय पताका लहराने जैसा है। पहले चरण के बाद संभावित नतीजों के आकलन की जल्दबाजी में सकारात्मक पक्ष यही है कि दोनों खेमों में उम्मीदों के अलाव जल रहे हैं, अंतिम चरण तक इनमे से कितने राख में और कितने हवन में बदलेंगे, यह देखने की बात है।

हरदा एसपी का लेटर-पीएम का दौरा है, मंडियां बंद रखें

कलेक्टर से कहा- ट्रैक्टर-ट्रॉलियों से हादसे की आशंका; कांग्रेस ने पूछा-हमें ऐसी परमिशन मिलेगी क्या

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 24 अप्रैल के मध्यप्रदेश दौरे से पहले राजनीति शुरू हो गई है। हरदा एसपी ने जिले की मंडियां बंद रखने को लेकर कलेक्टर को लेटर लिखा है। कांग्रेस के राज्यसभा सांसद विवेक तन्खा ने इस पर सवाल खड़े किए हैं।

हरदा एसपी अभिनव चौकसे ने कलेक्टर आदित्य राज सिंह को लेटर में लिखा- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यक्रम के दौरान शहर में लोगों का अधिक संख्या में आवागमन रहेगा। इस दौरान हरदा में अत्यधिक संख्या में (लगभग 50,000) आम जनता के आने की संभावना है। जिले की कृषि उपज मंडियों में आने-जाने वाले ट्रैक्टर-ट्रॉलियां शहर के मुख्य मार्गों से गुजरती हैं, जिससे अप्रिय घटना होने की आशंका बनी रहेगी। अतः 24 अप्रैल को जिले की कृषि उपज मंडियों को बंद रखने के लिए निर्देशित करें।

हरदा एसपी के लेटर को सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर शेयर कर विवेक तन्खा ने पूछा- क्या हरदा या अन्य शहर में इस तरह कृषि उपज मंडी इंडी अलायन्स के वरिष्ठ नेताओं की मीटिंग के लिए प्रशासन बंद करेगा? या मीटिंग ही सीमित करने का आदेश देगा। जैसे रामलीला ग्राउंड दिल्ली में कंडीशंस लगाई थी। क्या मप्र में प्रशासन चुनाव लड़ा रहा है?

मामले के तूल पकड़ने के बाद कलेक्टर आदित्य सिंह सामने आए। उन्होंने कहा- यह शासकीय पत्र व्यवहार की सामान्य प्रक्रिया है। जिला प्रशासन ने 24 अप्रैल को मंडी बंद रखने के संबंध में कोई निर्देश या आदेश जारी नहीं किया है।

भोपाल में स्टूडेंट्स को रैली में शामिल होने का प्रेशर

कांग्रेस के राज्यसभा सांसद विवेक तन्खा ने 24 अप्रैल की शाम को भोपाल में होने वाले प्रधानमंत्री के रोड शो को लेकर भी ट्वीट कर प्रशासनिक अफसरों पर निशाना साधा। तन्खा ने लिखा- प्रधानमंत्री जी का रोड शो 24 अप्रैल को प्रस्तावित है। स्वाभाविक है कि बीजेपी चाहेगी रोड शो अच्छा हो।

इंदौर से भोपाल जा रही महिला पुलिस अधिकारी की कार्डियक अरेस्ट से मौत

भोपाल में एएसपी पद पर पदस्थ थीं प्रतिभा त्रिपाठी

देवास/ सोनकच्छ (नप्र)। कार से परिवार के साथ इंदौर से भोपाल जा रहीं महिला सुरक्षा एएसपी (एआईजी) भोपाल प्रतिभा त्रिपाठी की तबीयत सोमवार दोपहर इंदौर भोपाल रोड पर सोनकच्छ क्षेत्र में अचानक बिगड़ गई। साथ में मौजूद परिवार के सदस्य उनको लेकर सोनकच्छ के निजी अस्पताल पहुंचे, हालांकि उनको बचाया नहीं जा सका।

पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार त्रिपाठी भोपाल में पदस्थ हैं और इंदौर में उनका मकान है वहीं से अपने पति, बच्चों एवं कुछ अन्य सदस्यों के साथ कार से भोपाल जा रही थीं तभी रास्ते में उनकी तबीयत बिगड़ी, उन्हें वरदान अस्पताल ले जाया गया लेकिन उनकी जान नहीं बचाई जा सकी। सोनकच्छ एसडीओपी दीपा मांडवे ने बताया परिवार के अन्य सदस्य व रिश्तेदार सोनकच्छ आ रहे हैं। डाक्टरों ने मृत्यु का कारण कार्डियक अरेस्ट बताया है।

म.प्र.के कई जिलों में बारिश-ओले

बिजली गिरने से बच्चे की मौत, 17 जिलों में अलर्ट, 25 से भीषण गर्मी पड़ने का अनुमान

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) के एक्टिव होने से आंधी और बारिश का दौर चल रहा है। सोमवार को भोपाल, रायसेन समेत कई जिलों में गरज-चमक के साथ बारिश हुई। धार में दोपहर 12.54 बजे 10 मिनट तक बारिश के साथ ओले गिरे।

इंदौर में घने बादल छाए हैं। कहीं-कहीं बूंदाबांदी भी हुई। बड़वानी जिले के सेंधवा में कड़वा झिरा गांव में आकाशीय बिजली गिरने से बच्चे (5) की मौत हो गई। घायल महिला का इलाज सेंधवा सिविल अस्पताल में चल रहा है। मौसम विभाग ने अगले 24 घंटे,जबलपुर, छिंदवाड़ा समेत 17 जिलों में बारिश होने का अनुमान जताया है।

भोपाल के सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. वेदप्रकाश सिंह ने बताया कि प्रदेश में अगले 2 दिन गरज-चमक के साथ हल्की बारिश होगी। इसके बाद मौसम साफ हो जाएगा। 25 अप्रैल से तेज गर्मी पड़ेगी। जिन शहरों में अभी 40-42 डिग्री टेम्प्रेचर है, वहां 42 से 44 डिग्री तक पहुंच जाएगा। रातें भी गर्म रहेंगी। वहीं, उमस का असर भी दिखाई देगा। पिछले 3 दिन से कई जिलों में हल्की बारिश हो रही है।

बारिश से सड़कें तरबतर हो गईं- भोपाल में सोमवार सुबह बारिश हुई। चार इमली, न्यू मार्केट, एमपी नगर इलाके में बारिश से सड़कें तरबतर हो गई। सुबह से शहर में बादल छाए रहे। मौसम विभाग ने आज मौसम का मिजाज ऐसा ही रहने का अनुमान जताया है। अगले 3 दिन तक बादल भी रहेंगे।

21 जिलों के 51 शहर-कस्बों में बारिश- पिछले 24 घंटे के दौरान प्रदेश के 21 जिलों के 51 शहर-कस्बों में कहीं तेज तो कहीं हल्की बारिश हुई। इनमें भोपाल, छिंदवाड़ा, बालाघाट, नरसिंहपुर, मंडला, जबलपुर, सिवनी, बैतूल, रायसेन, कटनी, डिंडोरी, विदिशा, नर्मदापुरम, गुना, बड़वानी, खरगोन, खंडवा, बुरहानपुर, देवास, सागर, दमोह और अनूपपुर जिले शामिल हैं। सबसे ज्यादा बारिश छिंदवाड़ा के तामिया और नर्मदापुरम के पचमढ़ी में आधा इंच से अधिक हुई। खरगोन के बड़वाह में भी पानी गिरा। मौसम बदलने से यहां बिजली सप्लाई भी प्रभावित हुई।

जबलपुर में हवा की रफ्तार सबसे ज्यादा- मौसम विभाग के अनुसार, जबलपुर में हवा की रफ्तार सबसे ज्यादा रही। यहां 52 किमी प्रतिघंटे की रफ्तार से हवा चली। छिंदवाड़ा में 43 किमी, सीहोर में 41 किमी, बड़वानी में 38 किमी, सागर में 37 किमी, गुना में 36 किमी, खंडवा, कटनी-मंडला में 34 किमी, सिवनी में 32 किमी और बालाघाट में 30 किमी प्रतिघंटे की रफ्तार से हवा चली।

इसलिए बदला मौसम- मौसम विभाग के अनुसार, वर्तमान में एक वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) एक्टिव है। इस वजह से बूंदाबांदी और आंधी का दौर है। ऐसा ही मौसम अगले 2 दिन और बना रहेगा।

अनिल शास्त्री बोले-सरकारी एजेंसियों से डरा रही भाजपा

पूर्व पीएम के बेटे ने कहा-कांग्रेस कैंडिडेट को भाजपा के अलावा ईडी,आईटी,सीबीआई से लड़ना पड़ता है चुनाव

भोपाल (नप्र)। पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के बेटे और पूर्व केंद्रीय मंत्री अनिल शास्त्री ने भोपाल में प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में प्रेस कॉन्फ्रेंस की। उन्होंने कहा, सीबीआई, ईडी, इनकम टैक्स डिपार्टमेंट का दुरुपयोग होता रहा है। पिछले कई वर्षों से यह हो रहा है। लेकिन, मोदी सरकार के दौरान चुनाव आते-आते इनका दुरुपयोग ज्यादा तेजी से बढ़ा है। चारों तरफ ऐसा लगने लगा है कि जो भाजपा के साथ हैं वह स्वच्छ है। जो विरोध में है वो भ्रष्ट है।

उन्होंने कहा, कांग्रेस कैंडिडेट को एक कैंडिडेट के खिलाफ नहीं लड़ना पड़ता। हमारे कैंडिडेट को चार-चार कैंडिडेट से लड़ना होता है। एक बीजेपी का कैंडिडेट, दूसरा ईडी, सीबीआई और चौथा इनकम टैक्स डिपार्टमेंट। इस तरह की लड़ाई बराबर की लड़ाई नहीं है। लोकतंत्र की परिभाषा यह है कि जब चुनाव होता है तो बिल्कुल फ्री और फेयर होना चाहिए। चुनाव आयोग को हमने देखा किस तरह से कमिश्नर्स का अपॉइंटमेंट हुआ। एक इलेक्शन कमिश्नर जिनको इस्तीफा देने को कहा गया। उसके बाद उनके चहेते को कमिश्नर नियुक्त किया गया।

अनिल शास्त्री ने कहा- हिमाचल प्रदेश में हमने देखा किस तरह से कांग्रेस के कैंडिडेट को हराया गया। महाराष्ट्र में सरकार गिराकर भाजपा ने अपनी सरकार बनाई। अजीत पवार, छगन भुजबल, जिनके खिलाफ केसेस चल रहे थे। भाजपा में शामिल होते ही सारे मामले वापस ले लिए गए।

बीते 14 फरवरी को लाल बहादुर शास्त्री के पोते विभाकर शास्त्री ने लखनऊ में बीजेपी जॉइन की थी। विभाकर अनिल शास्त्री के भतीजे हैं।

भतीजे के बीजेपी में शामिल होने पर कहा-उन पर नहीं था एजेंसियों का प्रेशर

अनिल शास्त्री ने अपने भतीजे और पूर्व सांसद विभाकर शास्त्री के बीजेपी में शामिल होने के सवाल पर कहा- विभाकर को ईडी का कोई फोन नहीं आया, न ही सीबीआई और इनकम टैक्स का फोन आया। शायद उनको ऐसा लगा कि कांग्रेस में उनका भविष्य नहीं है। काफी दिनों से उत्तर प्रदेश में लगे हुए हैं। जो उन्होंने किया वह गलत किया मैं उनका समर्थन नहीं करता।

अनिल शास्त्री ने कहीं ये खास बातें

कांग्रेस की गारंटी सबके सामने हैं। हम यह आश्वस्त करते हैं कि यह गारंटी जो राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी की गारंटी है। इन गारंटीयों को पूरा किया जाएगा। बीजेपी ने 2014 के चुनाव में 15 लाख रुपए बैंक खाते में डालने की बात कही थी। यह नहीं हुआ। जब पूछा गया तो वर्तमान के केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने यह कहा कि यह तो चुनावी जुमला है।

समाज सेवा प्रकोष्ठ द्वारा प्रेस कॉम्पेक्स स्थित सभागार में 121 वां चार दिवसीय नि:शुल्क बाल व्यक्तित्व विकास शिविर संपन्न

व्यक्तित्व विकास के लिए शिविर में सीखे हुए ज्ञान को आत्मसात करें : अमित रंजन

- क्राफ्ट,योग,सामान्य ज्ञान और चित्रकला के विजेताओं को मिले पुरस्कार और शिविरार्थियों को प्रमाणपत्र

इंदौर। समाज सेवा प्रकोष्ठ द्वारा प्रेस कॉम्पेक्स स्थित सभागार में चार दिवसीय 121 वे निःशुल्क बाल व्यक्तित्व विकास शिविर का समापन भारतीय स्टेट बैंक की वाणिज्यिक शाखा के उपमहाप्रबंधक श्री अमित रंजन के मुख्य आतिथ्य तथा बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय भोपाल की पूर्व कुलपति सुश्री डॉ. निशा दुबे की विशेष उपस्थिति में पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरण के साथ संपन्न हुआ. शिविर में योग, चित्रकला, क्राफ्ट तथा सामान्य ज्ञान में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले बच्चों को पुरस्कृत किया गया.

श्री अमित रंजन ने समाज सेवा प्रकोष्ठ की गतिविधियों की प्रशंसा करते हुए बच्चों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि सहभागियों को शिविर में दी गई जानकारी, ज्ञान और कलाओं को आत्मसात कर व्यक्तित्व का समग्र विकास करना चाहिए.

डॉ. निशा दुबे ने अपने उद्बोधन में सद्गुणों और जीवन मूल्यों को रोजमर्रा का हिस्सा बनाने और एक-दूसरे को सम्मान देने के लिए शिविरार्थियों को प्रेरित किया.

इससे पूर्व श्री सिद्धार्थ जैन ने ग्लोबल वार्मिंक, वायु तथा जल प्रदूषण से बचाव के साथ पर्यावरण संरक्षण हेतु बच्चों को जागरूक किया. कुछ प्रतिभावान बच्चों को उन्होंने प्रोत्साहन स्वरूप उपहार भी प्रदान किए.

प्रातः सुश्री स्मिता बिरारी में सुर, सरगम, तीन ताल की जानकारी देते हुए गायन का अभ्यास कराया. योगाचार्य श्री बाला चैतन्य तथा सुश्री आरती द्विवेदी ने योगासन और कुछ हास्यासन कराए.

अतिथियों का स्वागत सर्वश्री आलोक खरे, संस्था सचिव श्री सुबोध भोरासकर, विजय रांगनेकर, श्याम पांडेय, सुरेश रायकवार,अशोक कापडनिस, अशोक खाड़े, के के पांडेय,जगदीश जोशी आदि ने किया. सत्र संचालन श्री ब्रजेश कानूनगो ने तथा आभार प्रदर्शन श्री श्याम पांडेय ने किया.